भूमिका

'आज़ाद-कथा' के प्रणेता, उर्दू साहित्य के अमर रत्न रतननाथ 'सरशार' से हमारे पाठक अपरिचित नहीं हैं। 'आज़ाद-कथा' उनकी हास्य-कृति थी; 'पी कहाँ ?' उनकी गम्भीर रचना है। एक सामाजिक उपन्यास की हैसियत से हम समझते हैं कि आज भी उसका स्थान बहुत ऊँचा है। आज भी इतना सजीव, इतना यथार्थ चित्रण दुर्लभ है। यह निर्विवाद है कि नवाबी ज़माने के लखनऊ का जितना सजीव चित्र 'सरशार' उपस्थित करते हैं वैसा और किसी लेखक ने नहीं किया है। 'पी कहाँ ?' की रोचकता और उसमें अंकित चित्रों की मोहकता उसकी अपनी निधि है। उसकी करुणा में एक दर्द है जो आसानी से नहीं भूला जा सकेगा। और उस निधि को आपके हाथों में समर्पित करते हुए हमें न केवल संतोष है, वरन हर्ष भी हो रहा है।

'पी कहाँ ?' एक लंबी कहानी है और आज के पाठक के लिए, संभवतः, वह पुराना विस्तार और शब्द-बाहुल्य बहुत प्रीतिकर न हो। लंबी कहानी की हमारी धारणा में भी बहुत अंतर हो गया है। इस दृष्टि से अनुवाद के समय उस विस्तार का कुछ अनावश्यक अंश हमने निकाल दिया है। ऐसा करने में, परंतु, कहानी की शैली अथवा गठन को कोई क्षति नहीं पहुँची है। वैसा करना हमें कदापि प्रिय न होता। अब 'पी कहाँ ?' का रूप और निखर आया है। उसकी भाषा के साथ, आप देखेंगे, हमने अधिक स्वतंत्रता नहीं ली है। 'सरशार' महोदय की शैली इतनी सुंदर है कि उसे और अधिक सँवारने का मतलब सूरज को दीपक दिखाना होगा—जो कभी हमारा दंभ नहीं है।

—प्रकाशक

पी कहाँ ?

पहली हूक

'पी कहाँ! पी कहाँ! पी कहाँ! पी कहाँ!' मंगल का दिन और अँधेरी रात; वरसात की रात। दो वज के सत्ताइस मिनट आये थे। तीन का अमल। सब आराम में। सोता संसार, जागता पाक परवरदिगार। सन्नाटा पड़ा हुआ। अँधेरा घुप्प छाया हुआ। हाथ को हाथ नहीं सूझता था। दो चीज़ों से अलवत्ता अँधेरा ज़रा यों ही-सा कम हो जाता था, और वह भी पलक मारने तक को :— एक तो कौंदे के लौंकने से विजली चमकी और ग़ायव; दूसरे जुगनू की रोशनी। नाख़ून के वरावर कीड़ा, मगर दामिनी की दमक से मुक़ावला करनेवाला। आसमान पर वह और ज़मीन पर यह। कोई मिनकता भी न था। अगर कोई आवाज़ आती थी तो पत्तों के खड़खड़ाने की। हवा के ज़न्नाटे के साथ चलने से दरख़्तों के पत्ते गोया तालियाँ वजाते थे। तारे सव ग़ायव। ज़मीन से आसमान तक एक ही तरह का अँधेरा छाया हुआ—घटाटोप अँधेरा। अगर हवा तेज़ी के साथ न चलती तो मूसलाधार मेंह वरसता और ख़ूव दूर-दूर तक वारिश होती।

इसी मंगल के दिन एक जंगल में एक वड़े लक़्क़दक़्क़ महल की छत पर एक आलीशान कमरे में एक नाज़ुक-सा लड़का पड़ा हुआ मीठी नींद ले रहा था। वहुत ही ख़ूवसूरत लड़का। सिन कोई सोलह वरस का; अभी मसें भी नहीं भीगी थीं। सर के वाल कमर तक लाँवे; सियाह जैसे भँवरा। लखनऊ के छोटे गंधी की दूकान का सोलह रुपयेवाला हिना का तेल पड़ा हुआ। पट्टियाँ जमी हुईं; चोटी गुँधी हुई। प्यारे-प्यारे हाथों में मेंहदी रची हुई। गोरे-गोरे पाँव, रंगीन होंट: मिस्सी के ऊपर पान का रंग चढ़ा हुआ। रसीली आँखों में सुर्मे की तहरीर।

—मीठी नींद सो रहा था; विलकुल ग़ाफ़िल। तीन कमसिन, कम-उम्र औरतें पलँग के इधर-उधर तकल्लुफ़ से विछे हुए फ़र्श पर सो रही थीं। और एक नई नवेली एक चारपाई पर उस लड़के के पलँग के पास आराम करती थी। एकाएक ही वादल वहुत ज़ोर से गरजा, और इस ख़ूवसूरत गवरू की आँख खुल गई। देखा, तो अँधेरा घुप् छाया हुआ। आराम करने के पहले ही से तवीअत परेशान थी, वहुत ही वेचैन। वड़ी दिक़्क़तों से आँख लगी थी। अव इस अँधेरे को देखकर और भी परेशान हुआ, और पलँग से उठकर टहलने लगा। क़ायदा है कि जव इंसान अँधेरे का ज़रा देर तक आदी हो जाता है तो फिर अँधेरा कम मालूम होता है।—देखा, कि फ़ैज़न, उनके कोका की लड़की,

चारपाई पर सो रही है। उसको इस लड़के ने जगा दिया। वह फ़ौरन उठ बैठी और काफ़ूरी शमा जलाई; और कहा—ओफ़्फोह, बड़ा अँधेरा है!

इतने में यह हसीन लड़का फिर टहलने लगा। थोड़ी देर में आवाज़ आई—'पी कहाँ! पी कहाँ!'

जंगल के जिस बाग़ में यह इमलाक थी, उसमें एक सतखंडा बना था। इन सतखंडे के पास शीशम का एक बहुत बड़ा दरख़्त था। उसकी एक शाख़ पर, जो सतखंडे की पाँचवीं मंज़िल के पास थी, पपीहे ने झोंझ लगाया था; और इसी की 'पी कहाँ! पी कहाँ!' की आवाज़ सुनकर यह लड़का भी कहने लगा—"पी कहाँ! पी कहाँ!" लड़कों का क़ायदा होता है कि कोयल को चिढ़ाने में उसके साथ-साथ उसकी बोली बोलते हैं या चिल्ला-चिल्लाकर कहते हैं: "काले कौवे की जोरू!"

मगर इस लड़के की "पी कहाँ!" की आवाज़ इतनी दर्द से भरी हुई थी कि सुनकर कोई यह न समझता कि चिढ़ाता है।

इतने में फिर बादल ज़ोर से गरजा, और अबकी पहले से आवाज़ कहीं तेज़ थी। जो तीन कमसिन औरतें फ़र्श पर सो रही थीं वह भी चौंक पड़ीं। देखा, तो काफ़ूरी शमा जल रही है, 'पी कहाँ! पी कहाँ!' की आवाज़ बाग़ से आ रही है, और लड़का इधर से उसी की बोली "पी कहाँ! पी कहाँ!" कह रहा है, और फैजन गायब है। ये तीनों भी उठ खड़ी हुईं:

प्यारी—महरी—सिन सत्रह बरस का, नमकीन, बड़ी नेक; बहू-बेटियों में रहने के क़ाबिल। इसकी माँ जहेज़ में आई थी।

सितारन—नौकरानी की लड़की—अट्ठारह बरस की उम्र; बड़ी शोख़ और तेज़।

सितारन और दुलारी पावँ दवाने लगीं। प्यारी सिरहाने वैठकर पंखा झलने लगी। फ़ैज़न ने उस लड़के के गले में हाथ डालकर चूमके कहा, अव सो रहो। रात वहुत भीगी है। पपीहा वोल रहा है। हलकान हो जाओगे।

सितारन—(दाँतों-तले उँगली दवाकर) क्या वकती हो!

प्यारी—उफ़! कित्ती अँधेरी रात है!

इतने में विजली चमकी और उसके साथ ही वादल गरजा। और वादल गरजने के वाद ही आवाज़ आई—पी कहाँ! पी कहाँ! और इधर इस परी-से सुन्दर लड़के ने पलंग से उठकर कहा—'पी कहाँ! पी कहाँ!" और फ़ैज़न ने फिर चूमकर कहा—'ले आराम करो!

प्यारी—तुम तो, वी फ़ैज़न, अंधेर कर रही हो। हम सवके सामने ऐसे ख़ूवसूरत, कमसिन कुँअर को गले लगा के चूमती हो; भला यह भी कोई वात है। आख़िर हम भी तो नौजवान हैं। जो तुम्हारा सिन, वह हमारा सिन। हमसे यह क्योंकर देखा जायगा, और फिर हम शक्ल-सूरत में तुमसे कम नहीं।

फ़ैज़न—अच्छा, इन्हीं से पूछो। जो यह कहें वही ठीक है।

दुलारी—और क्या। 'जिसे पिया चाहे वही सुहागन; क्या सँवरा क्या गोरा रे!'

ये सव वातें उस लड़के के दिल वहलाने के मज़ाक़ की होती थीं। मगर दिल में सव को रंज था कि यह साहवज़ादा वेचैन है। उसकी वेचैनी दूर करने के लिये इन्होंने ये दिल्लगी की वातें शुरू कर दीं।

फ़ैज़न—हमारे अच्छे गोरे-चिट्टे होने का सवसे वढ़के सवूत यह है कि हम इनको प्यार करते हैं;—यह है, कि तुम इत्ती हो, मगर किसी को यह जुर्रत नहीं कि इनको चूम ले।

यह लड़का इस वक़्त दुखी था। मगर ये वातें सुनकर जरा योंही-सा मुस्करा दिया; और फ़ैज़न ने तालियाँ वजाकर कहा—ए लो, अव कहो! कौन जीत गया—हम या तुम? हमने जो वात कही, वह सुनते ही हँस दीं!

प्यारी—'हँस दीं' क्या मानी, फ़ैज़न! वह —तोवा!— 'हँस दिये' —'हँस दीं' नहीं।

इतने में इस लड़के को नींद आ गई। और जो पावँ दवाती थी, वह आहिस्ता-आहिस्ता पावँ दवाने लगी, और जो पंखा झल रही थी, वह भी आहिस्ता-आहिस्ता झलने लगी। थोड़ी देर के वाद, ये चारों अपनी-अपनी जगह पर जा कर सो रहीं। कोई आध घंटे तक इस कमरे में सन्नाटा पड़ा रहा, और उसके वाद फिर यह लड़का जागा; और जागते ही सुना—'पी कहाँ! पी कहाँ!' यह सुनते ही चुपके से उठा और नीचे उतरा, और सीधा उस सतखंडे की तरफ चला और पाँचवीं मंज़िल पर जा कर पपीहे की झोंझ की तरफ हाथ वढ़ाया।

दरख्त की शाख उसके पास तक आती थी। पहले हाथ वहाँ तक नहीं पहुँचा, फिर कोशिश की, और झोंज से एक जानवर निकाल लिया, और फिर नीचे उतरा। दूसरा जो उस दरख्त से भाग गया था, उसको खबर भी नहीं कि झोंज में क्या हो रहा है। जब यह लड़का उस जानवर को लेकर उतरा, उसी दम जानवर के चिल्लाने की आवाज़ सुनी और उसने उसके जवाब में आवाज़ दी —"पी कहाँ! पी कहाँ!"

अब सुनिये कि पिछले पहर के बाद फ़ैज़न की आँख खुल गई। गो इस वक्त सुबह का धोखा-सा होने लगता था मगर आज बदली के सबब से अब तक अँधेरा छाया हुआ था। फ़ैज़न के उठते ही प्यारी की भी आँख खुल गई। उठके बैठी तो अन्दाज से ही समझी कि फ़ैज़न है। पूछा—फ़ैज़न, सरकार आराम में हैं? उसने आहिस्ता से कहा, हाँ। अँधेरा होने से दोनों को नहीं मालूम हुआ कि सरकार का पलँग सूना पड़ा है। इतने में फ़ैज़न प्यारी के पास चली आई।

फ़ैज़न—अरी बहन, रात तो 'पी कहाँ! पी कहाँ!' कहते-कहते उन्होंने नाक में दम कर दिया।

प्यारी—एक बात मैं कहूँ! गोरा-गोरा मुखड़ा, लम्बे-लम्बे बाल; सत्रह-अट्ठारह या सोलह-सत्रह बरस का सिन्; और इतना खूबसूरत—जब तुमने लिपटा के गले में हाथ डाले सुना तो, बस, मेरे कलेजे पर जैसे साँप लोटने लगा।

फ़ैज़न—चल सखी! साँप लोटने की कौन बात है?

प्यारी—हाँ-हाँ, यह तो ठीक है; मगर उसी साइत तो एक अजीब समाँ बँध गया।

सितारन—कहाँ, है कहाँ ?

दुलारी—(घबराकर) फ़ैज़न, ये कहाँ हैं ?

फ़ैज़न—(इधर-उधर देखकर) मेरे तो जैसे हाथों के तोते उड़ गये। मैं वल्लों-जली सो क्यों रही ?

चारों परेशान और हैरान होकर इधर-उधर ढूंढ़ने लगीं। मगर कहीं पता न मिला।

अब बेंच पर साहबज़ादे आराम में हैं, और हाथ में कोई जानवर है। और एक जानवर जोर-जोर से ऊपर-ऊपर चिल्ला रहा है। ये चारों दौड़ीं और सब की सब हद से ज़्यादा परेशान। फ़ैज़न ने कहा—अरे, यह क्या हो रहा है? प्यारी बोली कि बहन, यह तो ग़ज़ब का सामना है! सितारन ने कहा, लोग हमको क्या कहेंगे कि इत्ती बड़ी वारदात हो गई और इन चारों के कान पर जूं तक न रेंगी। बड़ा ग़ज़ब है!

दुलारी—अरे ये यहाँ आये कब?

फ़ैज़न—यह हाथ में क्या है!

दुलारी—(बड़े अचम्भे के साथ) अल्लाह करे नींद में हूँ!

—:oo:—

दूसरी हूक

क़सबे से डेढ़ कोस के फासले पर एक बड़ा लम्बा-चौड़ा अहाता है; दीवारें चौतरफ़ा बहुत ऊँची-ऊँची। अहाते के बड़े फाटक के अन्दर पहुँचते ही, दूर तक हरी-हरी दूब का, हीरे-सा दमकता हुआ फ़र्श नज़र आता था; और सबके पहले इसी पर नज़र पड़ती थी। और इसके चार कोनों पर चार फ़व्वारे छूटते थे, जिनके पानी से दूब सींची जाती और आँखों को तरावट होती थी। इस दूब के बहुत बड़े तख्ते से होकर एक और फाटक था। मशहूर था कि सोमनाथ के मन्दिर के फाटक के बाद हिन्दुस्तान में यह दूसरे नम्बर का फाटक है। इस फाटक से दूर तक खुशबूदार फूलों की क्यारियाँ थीं। लाल-लाल फूलों की क्यारियों में गुले-लाला खिला था। मालूम होता था कि फूलों की लाल कुर्तेवाली पलटन किसी पर धावा करने को लैस है। पीले रंग के ताज़े-ताज़े फूलों को देखकर वसन्त की रुत याद आती थी। सफेद फूलों के तख्ते बड़ी बहार दिखाते थे। क्यारियों के इर्द-गिर्द कुछ कुछ फ़ासलेदार सरो के दरख्त बहार के लुत्फ़ को दोवाला करते थे। इसके बाद एक छोटा-सा फाटक था, जिसके दाहने-बायें संग-

और उस पर गुलावी फूलदान, मोम का वना हुआ, और वह भी गुलावी। दीवारें भी गुलावी रँगी हुई। छतगीरी गुलावी।

मसनद विछी हुई थी, तकिया भी था; मगर मसनद, तकिया खाली। मसनद के पास एक बूढ़े दीवानजी वैठे थे। कोई सत्तर वरस का सिन। दुवले-पतले आदमी। ऐनक लगाए हुए। कान पर क़लम रखी हुई—'रखी हुई' हमने इस वजह से कहा कि दीवानजी साहव क़लम को मोअन्नस (स्त्री लिंग) ही वोलते थे; और गोश्त चाहे जिस क़िस्म का पका हो, ये 'कलिया' ही कहते थे; और वात में 'इल्म क़सम' ज़रूर खाते थे। काग़ज़ चाहे कैसा ही वारीक हो, ये वग़ैर किताव या दफ़्ती रखे लिखते थे।

इनके इर्द-गिर्द वहुत से आदमी। एक ज़िलेदार, एक वासिल वाक़ीनवीस, एक खजानची, एक सियाहानवीस, एक मुख़्तार, दो मोहर्रिर और दस असामी लोग, चार चोवदार। दरवाज़े के पास एक मशालची खड़ा था; छै सिपाही, दो खवास, एक फ़ीलवान। ये तो अमले के लोग थे। वाहरवालों में, एक पेंशनयाफ़्ता वूढ़े डिप्टी कलक्टर सव से इज्ज़त की जगह पर वैठे थे। और इन्हींके पास, एक वकील, दो नवाव, दो शरीफज़ादे।

इस दीवानखाने के वाद ज़नानखाना था; और जिस कमरे का हमने अभी ज़िक्र किया, उसके और दीवानखाने के दरमियान में कई दरवाज़े थे। किसी में दोहरी-दोहरी चिकें पड़ी थीं और किसी में पर्दे, और कोई वन्द। इन पर्दों में औरतें थीं; वेगमें। एक वेगम साहव जो इस इमलाक की मालिक थीं, सर से पावँ तक गुलावी कपड़े पहने थीं। गुलावी अतलस का दोपट्टा, गुलावी अतलस का पायजामा, गुलावी ही अँगिया। हाथों-पाँवों में मेंहदी। ज़ुल्फ के वाल तो अलवत्ता सियाह थे, वाक़ी और कुछ चीज़ें गुलावी। रंगत भी सुर्ख़, होंठ भी लाल। एक छोटा-सा हुक्का, नाज़ुक, खुशनुमा, चाँदी का वना हुआ। कालीन से लेकर रूमाल तक सव गुलावी।

दीवान—इस अंधेर को तो मुलाहज़ा फ़र्माइए! मैं कहता हूँ, यह ज़मीन-आसमान क़ायम क्योंकर रहेगा ?

क्यों न वरसें फलक से अंगारे,
वेटी दे औ' दामाद को मारे!

शरीफ़ज़ादा—वाह, दीवानजी साहव, ख़ूव शेर पढ़ा। 'दामाद' का लफ़्ज़ कितना ख़ूव आया है; वाह, वा, वाह!

दीवान—मैं तो वन्दानेवाज़-मन कुछ जानता-वानता नहीं, मगर हाँ वुज़ुर्गों के तुफ़ैल कुछ गाँठ लेता हूँ। लाला माधोराम इस नाचीज़ के दादों में होते थे। वड़े लाला ने उनको देखा था। धनन्ता और सन्ता के नौकर थे।

वासिल वाक़ीनवीस—वड़े पहुँचे हुए आदमी हैं! लाला कांजीमल साहव, कोई ऐसे-वैसे आदमी थोड़ा ही हैं।

दीवानजी ने फिर बात शुरू की और कहा, हम लोगों को, बन्दानेवाज़-मन, हर तरह से मजबूर होकर, गुलामी करनी पड़ी। रोज़गार कोई है नहीं। नौकरी कहीं दस-पाँच की भी नहीं मिलती। करें तो क्या करें? लाचार, सर झुकाकर गुलामी करनी पड़ी। अपने भाई के कुल मुलाज़मीनों को क़हर की निगाह से देखता था, और कितनों को तो अलग ही कर दिया। बेक़सूर। भाई के कुल दोस्तों के दुश्मन।

"लड़के की जुदाई से बेगम साहब बहुत कुढ़ती थीं, मगर क्या करें! सरकार का बस ही क्या था! माँ की मामता मशहूर है। कभी-कभी किसी औरत की ज़बानी हम भी सुनते थे कि रोया करती हैं। बड़ा रंज होता था—कि अपने पावँ पर खुद कुल्हाड़ी मारी। फिर, बन्दानेवाज़-मन, खुद किये का क्या इलाज! हाँ, राजा साहब के मरने से बेगम साहब जी उठीं, और हमने साहबज़ादे साहब को भी खोज लगा के बुलाया। यह राज, यह इलाक़ा, यह ताल्लुक़ा, यह कुल जायदात इन्हीं की है, और हम इनके नौकर और मुलाज़िम हैं।"

डिप्टी साहब—खुदा इनको मुबारक करे!

सिपाही और मशालची और मोहर्रिरों वग़ैरह ने 'आमीन!' की आवाज़ बुलन्द की।

डिप्टी साहब—ऐसे ज़ालिम का मरना ही बेहतर!

ये बातें हो ही रही थीं, कि डिप्टी साहब ने, जो बेगम साहब के पहले शौहर के दोस्त और गहरे यार थे, कहा—मुन्नी महरी, ज़री अपनी बेगम साहब से पूछो कि कुनबे में अब तो कोई भाई हमारे दोस्त का नहीं बचा है? एक नम्बर और सही!

यह फ़िक़रा सुनना था कि ज़नानखाने से बड़े क़हक़हे की आवाज़ आई। और गुलाबी लिबासवाली बेगम साहब ने औरतों से कहा कि—इनसे-उनसे बड़ी गहरी छनती थी। यह बुड्ढा उनके वक्त में मुझे बहुत छेड़ता था। बड़ा हँसोड़ है! और उसके जवाब में यों बोलीं—

"डिप्टी साहब, अब तुम बुड्ढे हुए; ये बूढ़े ग़मज़े छोड़ दो। समझे?"

डिप्टी साहब—बुड्ढे हुए? यह कैसे? अभी दो कम चालीस ही बरस का तो सिन है। बुड्ढे कहाँ से हो गये?

बेगम—ए, है! बड़े नन्हे!! अभी दो कम चालीस ही बरस का सिन है। और ये बाल कहाँ से सफेद किये? धूप में?

डिप्टी—बाल! इत्र बहुत लगाया था, सफ़ेद हो गये!

बेगम—इत्र भी लगाते हैं आप। घर की टपकी और बासी साग! कभी मोई तिल्ली का तेल भी सर में डाला था?

डिप्टी—वजा! कन्टर के कन्टर लुंढा डाले!

बेगम—काला पानी पिया होगा ! ए डिप्टी साहब, भला यह तो बताओ कि छोटे नवाब के गद्दी पर बैठने में झगड़ा तो न होगा ?

डिप्टी—जी नहीं, झगड़ा काहे का ? दो गांव मेरे नाम पर लिख दो। मैं अपने समझ लूंगा। आप इसी वक़्त गद्दी पर बिठाइये। सायत नेक है, दिन भी अच्छा है।—ये आये कब ? मैंने पहले नहीं पहचाना था। जब ग़ौर से देखा तो समझ गया। बचपन में देखा था। अब, माशेअल्ला, सयाने हुए !

बेगम—परसों आये थे। कोई पहचाने कहाँ से ! न वह रूप, न वह रंगत। न वह आब-ताब। और हो कहाँ से ? यह आराम यहाँ का-सा कहाँ मिलता।

डिप्टी—इनका हाल और इनकी आप-बीती हम इनकी ज़बानी ही सुन लेंगे। तुम भैया, इधर मसनद पर आके बैठो।

बेगम—हाँ, हाँ, भैया, मसनद पर बैठो। डिप्टी साहब और मिर्ज़ा साहब को भी बिठाओ। ज़रा हम तुमको बाप की गद्दी पर बैठे तो देखें।

यह कहते-कहते बेगम की आँखें आप ही आप डबडबा आईं।

तीसरी हूक

मियाँ जोश की मशहूर चढ़ाई पर एक बहुत ऊँचा टीला था। उस पर एक ख़स से छाया हुआ ख़ुशनुमा बँगला बना हुआ था, और उसी से लगी हुई एक पक्की महलसरा थी, जिसका पत्थर का हम्माम दूर तक अपना जोड़ नहीं रखता था। बँगले से महलसरा को मज़बूत-मज़बूत तख़्तों की छत से मिला दिया था। जब चाहा बँगले को मर्दाना मकान कर दिया, जब चाहा ज़नाना मकान बन गया। इस बँगले की छत के एक कमरे में एक बूढ़ा रईस अपनी बूढ़ी बीवी के पास बैठा हुआ अकेले में बातें कर रहा था। सिर्फ़ एक महरी चँवरी लिये हुए पीछे खड़ी थी।

रईस—बेगम, हमने दारोग़ा को मय उस नालायक़ लौंडे के निकाल बाहर किया, और क़ुरान की क़सम खाके कह दिया कि अगर इस मकान में क्या मानी —इस शहर में क़दम रखा, जो जान ले लूंगा, जीता न छोड़ूंगा। मैं तो मार डालने की फिक्र में था, और तुम जानती ही हो, और एक तुम ही क्या, इस शहर में कौन नहीं जानता, कि मैंने जब जिसको ताका, उसको मारा । बच ही नहीं सकता। और इस लौंडे सूअर के तो ख़ून का प्यासा हूँ। दोनों को निकालकर बाहर किया।

बेगम—अजी, यह सारा तुम्हारा ही क़सूर है। चले थे मौलवी साहब से लड़की को पढ़वाने। मैं कहती ही थी। न माना, न माना। वह बूढ़ा, अस्सी बरस का सही: यह मौलवी के मकतब में लड़की का जाना क्या! चाहे छै बरस की हो, चाहे सात बरस की। पंच भैया वालों की लड़कियाँ भी पढ़ती हैं, मगर साथ क़रीने के। एक दिन बीच में दे के मेम आती है, पढ़ा जाती है।

रईस—अब इसके निकाह की फ़िक्र ज़रूर करो।

बेगम—तुम तो नवाब हारी-जीती एक नहीं मानते।

नवाब—क्यों मैंने क्या किया? तुम कोई अच्छे घर का लड़का बताओ। खूबसूरत हो, खान्दानी हो, पढ़ा लिखा हो, कोई बीमारी न हो।

बेगम—खूबसूरत हो या न हो। हमको इसका खयाल नहीं है। इन्दर-सभा खड़ी करनी है? कथक या भाँड का लौंडा नहीं! हाँ, कोई ऐब न हो, काना न हो, लँगड़ा न हो, बस।

नवाब—तो फिर तजवीज़ो।

बेगम—ए वह घर क्या बुरा है. . . .कश्मीरी दरवाज़े के पास जो वसीक़ेदार रहते हैं। मैं एक दफ़ा खाकान मंज़िल दावत में गई थी, वहाँ उन वसीक़ेदार की घरवाली के साथ उनका लड़का आया था। हमारी नूरजहाँ के बराबर ही बराबर उम्र में होगा। लड़की की बाढ ज़रा ज़्यादा होती है। यह तेज़, वह भुग्गा। बस, खेलते-खेलते नूरजहाँ ने उसके बाल पकड़ लिये तो रोने लगा, और माँ से लिपट कर कहा, अम्मीजान, देखो, यह लड़की हमें मारती है। सारे बाल पकड़ के नोच डाले। उसने कहा—अच्छा लड़ो नहीं। दूसरी दफ़ा फिर खेलते-खेलते उसने ज़ोर से एक चटाखा दिया तड़ से। बहुत रोया। फिर माँ से शिकायत की। उसने अबकी झल्ला के कहा—अरे, तो तू भी क्यों मार नहीं बैठता।

नवाब—उनके यहाँ से तो पहले एक दफ़ा बात उठ चुकी है।

बेगम—हाँ, हाँ, जी। उनके-हाँ चकलेदारियाँ, रिसालदारियाँ, होती आई हैं। वसीक़ा भी, सुनती हूँ, भारी है।

नवाब—उस लड़के के बाप का वसीक़ा दो सौ तीस है, माँ का दो सौ ग्यरह, और किसी क़रीबी भाई-बन्द के मरने से अब सत्तावन और मिलने लगे हैं। पाँच, साड़े पाँच सौ की आमदनी है। दो मकान हैं; अपने खुश हैं।

बेगम—फिर क्या बुरा घर है!

नवाब—कुछ नहीं। हमसे उस लड़के के बाप ने साल भर हुआ खुद कहा था; यह हो जाय तो अच्छा।

बेगम—तुमने लड़की से फ़ौरन नाहक़ कह दिया। अब तो मुद्दत से बाहर जाती नहीं। बरसें हो गईं। छै-सात बरस की उमर से नहीं जाती। और जब जाती थी, तो जनाने ही मकान के दरवाज़े से। हमारे सामने ही तो पढ़ती थी।

नवाव—ए तोवा तो है—कि अभी तक वातों-वातों में वन्नन का ज़िक्र करती है। भला ऐसे टकलचे को हम अपनी साहवज़ादी वेटी दे सकते हैं। ठौर न ठिकाना, उठाऊ चूल्हा।

वेगम—और नौकर लड़का। वह लाख शरीफ़ सही।

नवाव—विरादरी में वदनामी, तमाम ज़माने में वदनामी। ख़ुद अपना दिल इस वात की कव गवाही देता! . . . महरी, चँवरी रख दो, और नीचे से केवड़े का शर्वत, वर्फ़ डालके, और थोड़ा पानी मिलाकर, लाओ। दो गिलास लाना, एक हमारे और एक वेगम के लिये।

महरी चली गई, तो नवाव ने कहा, तुम्हारे गाल हमको इस वक़्त वहुत प्यारे मालूम होते हैं। एक. . . .दो! वह मुस्कराकर वोलीं—ए हटो, ये ठंडी गर्मियाँ रहने दो! वड़े. . . .लेनेवाले! अरे, वाह रे वुढ़ऊ!

नवाव ने उठके वोसा लिया तो वेगम वोली—अरे वाह वुढ़ौना! यह दम-दाइया! दूसरी दफ़ा फिर जोर से वोसा लेकर गोद में वैठा लिया। और महरी आन पहुँची, और उन्होंने जल्दी से गोद से उतार दिया। ये दोनों शर्माए, और वह जवान औरत मुँह फेर के हँसने लगी। शरवत पिलाकर गिलास रखने नीचे गई तो वहुत हँसती हुई। जव और औरतों ने ज़िद करके पूछा, तो कहा—ये वूढ़े मियाँ तो छुपे रुस्तम निकले। ए, मैं जो शरवत लेके कोठे पर गई तो देखती क्या हूँ कि वेगम को गोदी में लिये. . . . .! यह वुड्ढा तो जवानों के भी कान काटता है। पहले तो किसी को यक़ीन न आया; कहा—'चल, झूठी! दिन को ऊँट तो सूझता नहीं! उसने लाखों क़समें खाईं, तो मुग़लानी ने कहा—जो यही हाल है, तो आज के नवें-दसवें महीने वड़ी वेगम की गोद में चाँद-सा वेटा खेलता होगा। वूढ़े मुँह मुहासे, लोग देखें तमाशे!

—————

चौथी हूक

पीतल के एक ख़ूवसूरत पिंजड़े में एक काला कोयला-सा जानवर भुजंगे की औलाद, जंगली कौवे का नामलेवा, कोयल का पानीदेवा, वन्द है। और यह पिंजड़ा एक कमरे में खूँटी पर टँगा हुआ है और थोड़ी-थोड़ी देर के वाद ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ लगा रहा है—'पी कहाँ!' फिर दम लेकर—'पी कहाँ!' फिर ज़रा देर में—'पी कहाँ!' इसके जवाव में एक जानवर, उसी रंग, उसी के वरावर वही आवाज़ लगा रहा है: 'पी कहाँ! पी कहाँ!' आवाज़ की गूँज इन दोनों की पुकारों की आवाज़ को दुहराती है। चार आवाज़ें तो 'पी

कहाँ!' की ये आ रही हैं—तीन ज़मीन पर से और एक आसमान पर से; और इन आवाज़ों के साथ एक आवाज़ और शामिल हो गई थी:—यह उसी पाकदिल, पाक-तबीअत, उदास-उदास से रहनेवाले नौजवान मर्द की थी जो रात को सतखंडे पर से जानवर को ले आया था: ज़ुल्फ कमर तक बिखरी हुई; दीवानों की तरह इधर से उधर गश्त करने के वक़्त पतली कमर हज़ारों ही बल खाती थी। इतने में फ़ैज़न ने भी दिल्लगी में आवाज़ लगानी शुरू की—'पी कहाँ! पी कहाँ!'

इस पर इस सुन्दर सजीले लड़के ने एक ठंडी साँस भरी और फ़ैज़न की तरफ देखकर कहा—क्यों बहन, तुम अब हमको चिढ़ाने लगीं, खुल्लम-खुल्ला बनाने लगीं! इस वक़्त तुम्हारे अब्बा यहाँ होते तो हमारा हाल देखकर कितना रोते, और तुम हमारे रोने पर हँसती हो। कोई तापे, किसी का घर जले! फ़ैज़न ने हाथ जोड़ कर गले से लगाया। चारों लड़कियों में फ़ैज़न सबसे ज़्यादा गुस्ताख थी और मुंह-चढ़ी;—मगर तमीज़ के साथ। इसके बाप को इस लड़के से दिली मोहब्बत थी और बिलकुल वैसी ही मोहब्बत करता था जैसे कोई अपने लड़कों और बच्चों से मोहब्बत करता है। यह इसका कोका था।

फ़ैज़न—अरी, अलग आइये! (अलग ले जाकर) मैं हाथ जोड़के अर्ज़ करती हूँ कि खुदा के लिये मुझे सब बता दो—जो-जो मैं पूछूँ। मुझसे कुछ छिपा हुआ तो है नहीं। मगर यह बताओ कि तुम्हारे दुश्मनों को....यह दीवाना-पन कैसा!

उस लड़के ने अपनी बाँहें फ़ैज़न के गले में डाल दीं। अगर कोई ग़ैर मर्द देख लेता तो समझता कि इन दोनों में आश्नाई ज़रूर है। वर्ना इस सिन की लड़की और उसके गले में इस बेतकल्लुफ़ी से हाथ डाल कर लिपटे तो इसमें कुछ दाल में काला ज़रूर है। हालांकि इस क़िस्म की कोई बात न थी। दोनों में एक को भी बदी का खयाल न था। खैर!—फ़ैज़न के गले में हाथ डालकर उस लड़के ने रोना शुरू किया। फ़ैज़न ने प्यारी को इशारा किया कि पानी लाओ। वह फ़ौरन् पानी लेकर गई। रूमाल तर करके फ़ैज़न ने आँसू पोंछे।

लड़का—बहन, लो, अब पूछती हो तो सुनो और कान धर के सुनो। मेरी हालत बिलकुल ऐसी है, जैसे (पिंजरे की तरफ इशारा करके)—उसकी। यह भी बदसूरत, भोंडा और हम भी अब इस ग़म और रंज के मारे बद-सूरत हो गये हैं। हाय, यह भी सियाह है, और यहाँ भी अब तमतमाहट है। यह भी 'पी कहाँ! पी कहाँ!' की आवाज़ लगाता है, और मैं भी। यह भी किसी की तलाश में पागल है, और मैं भी हूँ। यह भी पिंजड़े की क़ैद में है, और मुझे भी ग़म ने जकड़ रखा है। इसमें और मुझमें बस इतना फ़र्क़ है कि यह वस्ल के लुत्फ़ उठाए हुए है, और यहाँ उसके भी भूखे हैं।

फ़ैज़न—मैं समझ गई। अच्छा, फिर अब इसका इलाज क्या ? यह तो ख़ैर जो कुछ हुआ वह हुआ ! अब एक बात जो बहुत ही जरूरी है, वह बताओ। यह पपीहा कहाँ से आया ? हम सबको हैरत है कि यह क्या बात है। किसी की कुछ समझ ही में नहीं आता। हमारी जान तक हाज़िर है—तुम्हारे लिये जान तक हाज़िर है। मगर ख़ुदा के लिये बता दो कि यह बात क्या है।

लड़का—अरी बहन, मुझे ख़ुद नहीं मालूम ! तुम लोगों ने मुझे किस हालत में देखा। ढूंढ़ती हुई आई थीं ना, और यह जानवर मेरे हाथ में पाया—उस वक़्त यह बोलता था या नहीं ?

फ़ैज़न—क्या आप सब भूल गईं ! अरे ! (अपने गालों पर थप्पड़ लगा कर) क्या आप सब भूल गये ?

लड़का—(मुस्कराकर) वाह, फ़ैज़न, वाह !

फ़ैज़न—सरकार माफ़ करें ! मगर अब....ख़ुदा के वास्ते, सोच करके, ग़ौर करके, इत्ता बता दीजिए कि यह पपीहा कहाँ से आया !

लड़का—अम्मीजान की क़सम, मुझे नहीं मालूम।

फ़ैज़न—प्यारी ! ओ प्यारी ! ज़री दुलारी और सितारन को बुला लो। और तुम भी आओ।

प्यारी ने सितारन और दुलारी को बुलाया और उनके पास गई। फ़ैज़न ने कहा—तुम सबको बड़ी से बड़ी क़सम, सच-सच बताओ, यह पपीहा कहाँ से आया। पिंजड़ा तो हमने मँगवाया, यह तो ख़ूब याद है। मगर रात को यह जानवर कहाँ से आया। या मेरे अल्लाह, यह क्या बात है।....सरकार, कुछ तो बताइये।

लड़का—हाय, मैं किससे अपने दिल का हाल कहूँ। मुझे जो सबसे ज़्यादा प्यारा है, उसी के मरने की क़सम खा लूँ कि मुझे कुछ भी याद नहीं है। अम्मीजान और अब्बा से बढ़के तो कोई नहीं। उनकी क़सम खा लूँ। और अगर अब भी यक़ीन न आये तो कहो—उसकी क़सम खा लूँ !

फ़ैज़न—(मुस्कराकर) ख़ूब समझी। कोई गँवारन मुक़र्रर किया है ! मुझे इस वक़्त ज़रा हँसी आ गई। मगर डर लगा, कि कहीं आप ख़फ़ा न हो जायें। एक आँख से रोते हैं, एक आँख से कभी-कभी हँसते भी हैं।

लड़का—इसमें हम क्योंकर बुरा मान सकते हैं। हँसते भी हैं, रोते भी हैं। सभी कुछ करते हैं। अरी बहन, मर-मिटने की बात है !

इतने में इत्तफ़ाक़ से एक सिक्ख आया। मालियों और मालिनों की ग़फ़लत से दर्राता हुआ चला आया। उसने जो इस लड़के और फ़ैज़न को देखा तो अश्-अश् करने लगा। ये सब तो उस अजनबी आदमी को देखकर नज़र से ओझल हो गये, और वह दिल को मसोस-मसोसके रह गया, और वहीं खोया-खोया-सा खड़ा रह गया। इतने में एक आदमी ने आके कहा—सिंहजी, बाहर जाइये !

बस, एकदम से बाहर जाइये। पराये मकान में, और ज़नाने मकान में घुस आना कोई दिल्लगी नहीं है।

सिक्ख ने कहा—हम बाग़ जान के आये। यह क्या मालूम था कि ज़नानखाना है। तुम्हारे देस की रसम यही है, जो अनजान आये उसको मार के हाँक दो।

उस सिपाही ने कहा—अच्छा, अब जो कुछ हुआ, वह हुआ। अब तो जाइये। आप तो डटे खड़े हैं।

सिक्ख चला गया। फ़ैज़न और प्यारी ने पहरे के सिपाही को बुलाके डाँटा कि हमारा मकान और हमारा बाग़ तमाशे की जगह नहीं है कि जिस ऐरे-ग़ैरे पचकल्यान का जी चाहे धँस आये। वाह, यह भी कोई बात है! तुम क्या ऊँघते थे? सिपाही वाक़ई ऊँघता ही था। जब फ़ैज़न और प्यारी से यह बात सुनी तो फ़ौरन उठके आया।

जब सिक्ख चला गया तो एकाएक ही फिर 'पी-कहाँ!' की आवाज़ आई और वह लड़का फिर बदस्तूर 'पी कहाँ! पी कहाँ!' पुकारने लगा। दिल में तरह-तरह के खयालात। हर दस-पन्द्रह मिनट में 'पी कहाँ! पी कहाँ!' की आवाज़ दिल से निकलती थी। थोड़ी-थोड़ी देर के बाद फ़ैजन ने क़समें दे-देकर खाना खिलवाया। दो-चार नेवाले नूरमहली पुलाव के खाये, दो शामी कबाब, आधा पराठा मुर्ग़ के कोरमे के साथ खाया और दस्तरखान से उठा। फ़ैज़न जिसको दस्तरखान पर साथ खाने का शरफ़ हासिल था, वह भी उठ खड़ी हुई।

लड़का—वाह-वा, ए तुम क्यों उठ खडी हुई? हमको रोए जो न खाए!

फ़ैज़न—(एक तली अरबी खाकर) ले, क़सम हमने उतार दी: अब न ज़िद कीजिएगा। भला मैं क्योंकर खाऊँ! यह कहीं हो सकता है! सरकार तो दो नेवाले खाकर दस्तरखान से उठ जाएँ और मैं जबरदस्ती खाना जारी रक्खूँ।

प्यारी—तुम साथ खाती हो, ना; इसी से भूखी रहती हो। तुमसे तो हम लोग अच्छे कि अलग खाते हैं। बावर्चीख़ाने में बैठ गये, मनमाना खाना पेट भरके खाया: तुमसे तो, बी फ़ैज़न, हम लोग अच्छे!

फ़ैज़न—हाँ फिर यह तो है ही है—

हमसे अच्छे रहे सदक़े में उतरनेवाले!

लड़का—(दस्तरख़ान पर बैठकर) अच्छा हम भी खाते हैं।

एक कबाब ले लिया, मगर बेदिली से खाया, जैसे कोई ज़बरदस्ती मार-मार के खिलाता है! फ़ैज़न ने अदब का लिहाज़ करके खाना खाया; और भूखी तो थी। खाना खाने के बाद नितारन बेसनदानी और पानी लेकर आई। मुँह-हाथ धुलाकर पानदान से गिलौरियाँ दीं। लड़के ने मसहरी पर आराम लिया। दुलारी पाँव दबाने लगी। अगर कोई अजनबी नावाक़िफ़ आदमी देखता तो ज़रूर दिल में कहता कि कितना खुशनसीब लड़का है कि चार-चार परीछम

जवान-जवान लड़कियाँ खिदमत को हाज़िर हैं। और किस तरह पर खिदमत करती हैं! बेधड़क, बेझिझक। यह कि—कोई तो चप्पी कर रही है, कोई गले में हाथ डाल देती है: मगर इन पाँचों में किसी को किसी तरह का ऐसा-वैसा ख़याल दिल में था ही नहीं। सब पाकबाज़, पाकनज़र।

प्यारी—(लड़के से) आप तो एक ज़री सो जायँ तो अच्छा होता। ज़रा आराम कर लीजिए।

लड़का—अरी मुई नींद ही आती तो रोना काहे का था। हाय, नींद ही तो नहीं आती! और आये क्योंकर! यह कहकर एक ठंडी साँस भरी और उसी ग़म और रंज की हालत में आहिस्ता-आहिस्ता यों गाने लगे—

जाय कहो कोउ श्यामसुन्दर से!
तुमरे मिलन का जिया मोरा तरसे! जाय कहो कोउ श्यामसुन्दर से!
निसि-दिन, बालम, तुम्हरे देखन को
नैनन से मोरे निरहन बरसे। जाय कहो कोउ......
कौन देस उन्हें ढूंढ़न जाऊँ
लाऊँ उनहें कौन नगर से। जाय कहो कोउ.......

उसके बाद फूट-फूटके रोना आया, और इस तरह रोया कि दुलारी और प्यारी और सितारन और फ़ैज़न सब मिलके ढाड़ें मार-मार के रोने लगीं।

प्यारी—हाय, किसी तरह आप ज़री सो जातीं।

फ़ैज़न—(प्यारी के कान में आहिस्ता से) अरे, तुम क्या बक रही हो! पहले भी तुमने कहा था!

प्यारी—(चुपके से फ़ैज़न के कान में) ज़बान से निकल जाता है। सरकार ने भी तो कहा था 'मुई नींद ही नहीं आती!' अच्छा अब इस बात ही को जाने दो: जो हुआ. सो हुआ। अब ख़याल रक्खूंगी। कोई कहाँ तक ख़याल रखे।

इतने में फ़ैज़न को इस साहबज़ादे ने बुलाया और कहा—ज़रा हमारे पास इस मस-हरी पर बैठ जाओ। जब वह बैठी तो कहा—लेट जाओ! जब वह हुक्म के मुताबिक लेटी, तो कान में कहा—फ़ैज़न, अब उम्र भर हम इसी लिबास में, इसी ढंग से रहेंगे। बस, यह धज हमें बहुत पसन्द है। वह बोली—यह तो सब सच है। मगर सितारन और दुलारी और प्यारी तक तो ख़ैरियत है; वह जानती है: और जो कोई नई औरत आएगी, तो वह क्या समझेगी? आपके बराबर जवान आदमी के बच्चा पैदा हो सकता है या नहीं? उसका अगर निकाह हो जाय और बीवी आये, तो बच्चा पैदा हो सकता है या नहीं। मैं मियाँवाली हूँ कि नहीं, मेरी बराबरवालियों की गोद में दो-दो खेलते हैं कि नहीं। अच्छा फिर नई अजनबी औरत जो इस तरह से हमको तुमको एक पलंग पर सोते देखेगी, तो मियाँ-बीवी समझेगी कि नहीं। मैं तो कहीं की भी न रहूँगी। मगर फिर यह भी सोचती हूँ, कि क्या किया जाय!

हाय, हर तरह मजबूरी है। मैं हजूर के हुक्म से बाहर नहीं हूँ। लेकिन बदनामी को डरती हूँ। आप खुद ग़ौर कर लें।

लड़का—अरी इन झूठी तोहमतों का न खयाल कर ! दिल साफ़ रखना चाहिए।

फ़ैजन—मेरे पाकदिल होने का हाल आप पर और सारे शहर पर खुला हुआ है। सूबेदार के लड़के ने कितने पापड़ बेले। एक गाँव लिखे देता था। नोट देता था, मकान देता था, गहना बनाए देता था। पटरियाँ और कंगन की जोड़ी भेज ही दी थी। जान देता था। हर तरह से मदद को तैयार था। घंटों हाथ जोड़ता था। बीस दफ़े से कम न टोपी सर से उतारके क़दमों पर रखी होगी। मगर मैंने एक न मानी। हमेशा जूती की नोक पर मारा की। पटरियाँ और कंगन की जोड़ी, सोने की, फेर दीं। बहुत मुश्किल है। कहता था, तेरे मियाँ को हज़ार रुपया देके राज़ी कर लूँगा। मैंने कहा—जो हमको अमीर होके रहना क़िस्मत में है, तो अल्लाह बहुत कुछ दे निकलेगा ! क्या सत्तर की बनके रही तो क्या ! न आबरू, न इज़्ज़त ! जब तुम बिगड़ोगे तो यही ताने दोगे कि जब तूने एक कंगन की जोड़ी के पीछे एक मियाँ को छोड़ दिया तो मुझे छोड़ते क्या देर लगेगी। कोई दो जोड़ियाँ कंगन की दे देगा, उसके पलंग पर चली जाओगी,। और जब बिगड़ते तो यही कहते कि—हमने आदमी बना दिया; वही टके की औरत हो ! जब हम खाने की कोई अपने शौक से ऐसी-वैसी फ़रमाइश करते, तो कहते—वही दो कौड़ी की औक़ात है ना ! एक दफ़ा एक औरत को सिखा-पढ़ा के भेजा कि सूबेदार के लड़के ने बुलाया है और यह पैग़ाम भेजा है कि वह यहाँ तक आ जायें, या मुझे कहीं बुलायें : सौ रुपये फ़क़त इस बात के देता है कि.....; बस, और कुछ नहीं। सुनते ही मैं जल उठी। मैंने कहा—उससे मिलके झुलस दूँगी, और कहो : जाके अपनी अम्मा-बैना को देखें; और आज से जो हमसे कभी ऐसी बात की तो जहाँ की हो, वहाँ पहुँचा दूँगी—कुटनी मुर्दार ! बहू-बेटियों को खराब करनेवाली ! बस कान दबाए चली ही तो गई। काटो तो बदन में लहू ही नहीं।

लड़का—हाँ, हम सब सुन चुके हैं।

फ़ैजन—एक दिन मलाई में जहर मिलाके खाने जाता था; आदमियों ने रोक लिया, नहीं तो जान ही जाती।

लड़का—हाय, लगी भी क्या बुरी होती है। तुमको मान लेना था। (मुस्करा कर) क्यों बेचारे को तरसाया !

फ़ैजन—बहुत ठीक ! जो ऐसा करती तो आज को तुम अपने पास खड़ा होने न देते, और अब बगल में लिये एक पलंग पर सो रहे हो !

लड़का—उसको तुम्हारे साथ दिली मोहब्बत थी। सारा शहर जानता है।

फ़ैजन—और एक बात तो सुनिये। हाय, सर पीटने को जी चाहता है।

क्या कहूँ! जिस कम्बख्त के मैं पाले पड़ी हूँ—जिस मूजी के घर बसी हूँ, वह मेरे हाथ जोड़े कि अल्लाह के वास्ते तू उसका कहना मान ले, मजे से चैन कर, गाँव की रानी बन कर रह, और मुझे भी अपने गाँव का सिपाही मुक़र्रर कर ले। मैं नौकर-सिपाही—गुलाम का गुलाम बनके रहूँगा। सच कहती हूँ, जी चाहता था, मुँह पकड़के झुलस दूँ, बस, और कुछ न करूँ!

लड़का—तुमने हमसे अब तक न कहा।

फ़ैज़न—अपनी लाज थी।

इतने में प्यारी ने कहा—फ़ैज़न बहन, तुम्हारी फूफी-अम्मा आती हैं। फ़ैज़न ने कहा—वहीं बिठाओ, मैं आती हूँ। यह कहके फूफी के पास गई। इधर-उधर की बातें करके कहा—हम आज मियाँ जोश की चढ़ाई गए थे। वहाँ पूछा, हमारी लड़की कहाँ है! वह मुटल्लो महरी बोली: फ़ैज़न तो उस दारोग़ा वाले लौंडे के साथ निकल गई है। उसने चुपके से यहाँ का पता दिया। डोली करके आई। काले कोसों है! लड़की की शादी ठहर गई और जल्द निकाह होनेवाला है।

फ़ैज़न धक से रह गई। पूछा, निकाह किसके साथ होगा? कौन लड़का है? उसने कहा—कश्मीरी दरवाज़े के पास जो वसीक़ेदार रहते हैं, उनके लड़के के साथ। शक्ल-सूरत कुछ बुरी नहीं है; मगर लुर है, लुर। पढ़ने-लिखने से जी चुराता है। अब दिन-रात सुबह-शाम या जुआ खेलता है, या कनकौवा उड़ाता है, या कबूतरबाजी। मैं तो नौकर रह चुकी हूँ। नूरजहाँ के क़ाबिल नहीं है।

उसने अपनी फूफी से ज़रूरी बातें करके उसको विदा किया और वापिस आई तो इस साहबजादे ने उसको उदास पाया।

लड़का—तुम्हारी फूफी क्या कहती थीं? उनको मेरा हाल मालूम है कि मैं यहाँ हूँ।

फ़ैज़न—(आहिस्ता से) क्या जाने।

लड़का—क्या करने आई थी।

फ़ैज़न—क्या बताऊँ क्या करने आई थी। सोचती हूँ, कि बताऊँ या न बताऊँ। न बताऊँ तो भी दिल नहीं मानता, और बताऊँ तो क्योंकर कहा जाय!

लड़का—(रंग फ़क़ हो गया) अरे, वह तो ज़िन्दा है!

फ़ैज़न—जी हाँ। उसकी कोई खबर नहीं है। एक और बात है।

लड़का—तो बताती क्यों नहीं हो? (आँखों में आँसू लाकर)।

फ़ैज़न—अच्छा, सब से सलाह कर लूँ। अभी हाज़िर हुई।

फ़ैज़न ने जाके इन तीनों से छिपे तौर से कह दिया।

प्यारी—अरे! इनके दुश्मन ज़हर खा लेंगे।

दुलारी—कहना नहीं!

सितारन—अरे, वो चाहे कहो या न कहो!

चारों मिलके उस साहबज़ादे के पास गईं तो देखा कि बुरी तरह रो रहा है, और रोते-रोते हिचकी बँध गई है। यह मालूम होता है जैसे कोई अपने किसी सगे की लाश पर रोता है—किसी अपने बहुत ही प्यारे सगे की लाश पर।

सितारन—ए सरकार, यह क्यों?

प्यारी—मुँह धो डालिए।

फ़ैज़न—कोई ऐसी बात नहीं है कि आप इतना रंज मनाएँ।

प्यारी—चलिए, ज़री चमन की हवा खाइये।

लड़का—अरी प्यारी, किसकी हवा और कहाँ का चमन! हाय, हमारा बचना अब मुहाल है। हम आड़ में खड़े सब सुन रहे थे। हाय, यह क्या हुआ! यह कहकर ग़श आ गया। ग़श आते ही पिंजरे में से आवाज़ आई—'पी कहाँ!' यह आवाज़ और सब तो सुनते ही थे; मगर बेहोशी में उस जवान के कानों तक उसकी भनक नहीं पहुँची। वर्ना वह भी जवाब देता, और दो आवाज़ें जंगल में गूँजती होतीं: 'पी कहाँ!'

———

पाँचवीं हूक

'गोरी खोल दे पट घूँघट का!
　　मोरा मन तोरे लटकन में अटका। गोरी०
अरी एरी गुजरिया छम-बिछवा बाज रहे
　　बोलत पोर-पोर तोरे अनवट का। गोरी०
अरी एरी गुजरिया, टोना भरा तोरे नैनन में
　　नैना जादू भरा मैनन भटका। गोरी०
अरी एरी गुजरिया लटक-लटक झूम रही
　　तोरे पिया का दिल में मन अटका। गोरी०

एक बढ़िया और नफ़ीस और खूबसूरत बजरे पर एक बहुत खूबसूरत लड़का एक बड़े लम्बे चौड़े तालाब में अपने आप खेता चला जाता था। साफ़ लहराता हुआ पानी, मोती को शरमाता था, और सफ़ाई इतनी थी कि पानी की तह में सरसों बराबर चीज़ भी साफ़ नज़र आती थी।—और बड़ी दर्दभरी, लचकभरी आवाज़ में, तीन सुरों में, काफ़ी की धुन में, यह ठुमरी जो हमने ऊपर लिखी है, गाता था। आवाज़ और रंग-रूप और बुशरे और चेहरे से उदासी बरसती थी। ठुमरी बहुत अच्छी तरह अदा करता था। सुर का पक्का था। यों

तो सब ठुमरी की ठुमरी सुनने से इंसान कह देता कि यह चीज़ उसी का हिस्सा है; मगर अन्तरे के शुरू में जो बोल था—अरी एरी गुजरिया—यह तो जो सुनता 'अश्-अश्' करने लगता। इस खूबसूरती से उसको अदा करता था, कि वाह-वा! बस यही जी चाहता था कि गले को हज़ारों बार चूमे, और उसको अपने पास बिठाकर बस सुना ही करे। बड़ा रस आवाज़ में था। पहले तो आहिस्ता-आहिस्ता गाता था; मगर एक दफ़ा तो इतना जोश में आया कि ज़ोर-ज़ोर से गाने लगा। ज़रा खयाल न रहा, कि कोई सुनता तो नहीं है।

धीरे-धीरे यह आवाज़ महलसरा तक पहुँची, और छत पर से महरी दौड़ कर नीचे आई, और बेगम से कहा—सरकार भैया आज तालाब में बड़े ज़ोर-ज़ोर से गा रहे हैं। बेगम कुछ खटकीं। छत पर गईं, तो लड़के की आवाज़—बोलत पोर-पोर तोरे अनवट का; अरी एरी गुजरिया. . .अरी एरी गुजरिया—ये खुद गलेबाज़ थीं—सुना कीं। कहा—महरी, इसमें कोई भेद ज़रूर है। यह दर्द की आवाज़ बेवजह नहीं। कुछ दाल में काला ज़रूर है। जाके बुला तो लाओ। कहना, बड़ी रानी बुलाती हैं–फिर चले आना। ज़री खड़े-खड़े हो जाओ। बड़ा ज़रूरी काम है।

महरी ड्योढ़ी पर गई। महलदार ने कहा—कहाँ! कहाँ! कहाँ चलीं बी चमक्को, बल खाती कूल्हा फड़काती हुई? उसने कहा, जाते हैं, भैया को बुलाने। महलदार बोला—वह तो जमीजम अभी तलाब की तरफ सिधारे हैं। वह तालाब के पास गई।

अब इन नौजवान ने दादरा और पीलू छेड़ दिया था:

दिल दे दे सँवलिया, यार, दरसन तो दिखा जा, प्यारे—दरसन तो दिखा जा!
झलक-झलक तो दिखा जा, प्यारे!
साँवली सूरत हिया माँ समा जा रे, दरस तो दिखा जा प्यारे!

जब ज़रा खामोश हुआ तो महरी ने कहा—सरकार, बेगम साहब बड़ी रानी बुलाती हैं।. . . .

सुनते ही धक से रह गया। बड़े जोश में गा रहा था। जाने किसके विरह में दीवाना हो रहा था—या यों ही दिल बहलाने के लिये। महरी ने टोका, तो हक्का-बक्का हो गया, और अब गोया होश में आया, कि मैं ज़ोर-ज़ोर से गा रहा था। माँ के पास से जो तलबी आई तो फौरन् गया। ड्योढ़ी पर पहुँचने के पहले ही महरी ने कहा—होशियार! और जितने मुलाज़िम वहाँ बैठे थे, सब उठ खड़े हुए; और साहबज़ादे अन्दर गये।

बेगम—बेटा तुम कहाँ थे?

साहबजादा—कहीं नहीं, अम्मी जान।

बेगम—रस्ते में गये थे?

साहबजादा—जी हां, तालाब में सैर कर रहा था।

बेगम—क्या तुम्हारी—जान से दूर!—तबीअत कुछ बेचैन है? जी कैसा है?

साहबजादा—अच्छा हूँ सरकार!

महरी—देखिये पिंडा तो पीका नहीं है! अल्लाह न करे!

बेगम—(माथे पर हाथ रखकर) नहीं; अल्लाह न करे!—जाओ, सैर करो।

साहबजादा—आपने यह कैसे खयाल कर लिया कि मैं बेचैन हूँ! कोई बात नहीं है।

बेगम—देर से तुमको देखा नहीं था। जाओ, सैर करो।

साहबजादे साहब अबकी सैर को नहीं गये। पहले शेर के कटघरे के पास गये। दो सिपाही और एक आदमी जो जानवरों को खिलाता था, और जिससे जानवर हिले हुए थे, सलाम करके हाज़िर हुए।

साहबजादा—यह शेर कितने रोज़ से है यहाँ?

आदमी—सरकार, बच्चेपन से हैं। राजासाहब ने एक शेरनी खेरीगढ़ के जंगल में मारी थी; उसी का बच्चा है।

साहबजादा—तुमसे बहुत हिला हुआ है।

आदमी ने कटघरे में हाथ डालके पुकारा—बच्चे! और शेर खुश होके उठा और हाथ को चाटने लगा। जब उसने हाथ निकाल लिया और छिप रहा, तो शेर कटघरे के उधर-उधर ढूंढने लगा। और आदमी फिर उभरा तो शेर ने दौड़कर उसकी जानिब कटघरे पर सर रख दिया। उसके बाद अपना भैंसे को जाके देखा। इतने में एक मुलाजिम ने किसी का कार्ड लाके दिया। हुक्म हुआ—बुलाओ! एक नौजवान हिन्दू (स), उम्र में तीन-चार साल बड़ा, सफेद कपड़े पहने हुए आया। दूर ही से दोनों हँसे, और बड़े तपाक से मिले।

स—कहो दोस्त, चैन-चान!

साहबजादा—जिन्दा हूँ, मगर क्या जिन्दा हूँ। (एक सर्द आह भरकर) यह हमारा हाल है।

स—और तो? मैं समझा नहीं।

साहबजादा—कहिए तो मुश्किल, न कहिए तो मुश्किल।

स—कुछ तो कहो, यार!

साहबजादा—भाई अब तो जिन्दगी तल्ख है।

स—कुछ पागल हुए हो क्या? अरे ज़ालिम, अब काहे का रोना है? अब तो खुदा का दिया सब कुछ है।

साहबजादा—कुछ भी हमारा नहीं है।

ख—कुछ भी हमारा नहीं है ! इसके क्या मानी ? जो होना चाहिए, उससे बढ़कर है। धन, दौलत, रुपया, अशरफ़ी, नोट, जवाहरात, इलाक़ा, गाँव-गिराँव, राज, आदमी, नौकर-चाकर, मुग़लानियाँ, महरियाँ, खवासें, हवशिनें, महलदार; हाथी, घोड़े, फ़ीलखाना, अस्तवल, रमना, शेर, रीछ, अरना भसा; इमलाक-कोठियाँ। अब और क्या होना चाहिए ?

साहवज़ादा—(ठंडी साँस भरकर) हाँ !

ख—वल्लाह, मैं जानता तो न आता। दो घड़ी दिल वहलाने आये थे।

साहवज़ादा—हमारे दिल का हाल तो तुम जानते ही हो।

ख—अरे तो हम तो पता लगा लेंगे।

साहवज़ादा—अरे यार पता क्या खाक लगाओगे ! हमारी, वालिदा ने दूसरी जगह शादी ठहराई है।

ख—अरे ! अब तो मामला मुश्किल हो गया।

साहवज़ादा—(एकाएक वहुत उदास होकर) फिर अब ?

ख—जी छोटा मत करो !

साहवज़ादा—अब कौन सूरत निकल सकती है सिवाय चुपचाप कुढ़ने और रोने के।—या कहो, भाग जाऊँ.....कुछ ले-दे के भाग जाऊँ ?

ख—अपनी माँ तक किसी तरह यह बात पहुँचाओ। किसी को अपना राज़दान कर लो। अब समय खोना ठीक नहीं है। तड़-तड़ जो कुछ हो, वह , बस। भई हम तो खुश-खुश आए थे कि आज फ़र्माइश करके उम्दा-उम्दा खाने पकवाएँगे। हमारे दोस्त ताल्लुक़ेदार निकले; हम राजा के हाँ जाते हैं। यह क्या मालूम था, कि यह विजोग पड़ जायगा !

साहवज़ादा—अरे यार खाना और तमाम दुनिया के ऐश-आराम तुम्हारे दम के लिये हैं। मगर दिल क़ाबू में नहीं। चैन नहीं पड़ता। देखिये में अभी खाना पकवाता हूँ। घर •. आखिर पकता ही है; वाहर भी दो-चार फ़रमाइशी चीज़ें पक जायेंगी।

ख—नहीं भाई साहव, वखेड़ा न कीजिए। जो घर से पकके आएगा, वही क्या बुरा होगा ! वस, वही वहुत।

साहवज़ादा—वाहवा, क्या अब हम खाना खाना छोड़ देंगे। हमारी तो बड़ी कोशिश यह है कि जिस तरह हो ग़म ग़लत करें; मगर नामुमकिन है।

ख—हमें इस वक़्त बड़ा अफ़सोस हुआ, वल्लाह।

साहवज़ादा—वावर्ची को बुलाओ, जी। घर में दर्याफ़्त करो, इस वक़्त क्या पक रहा है। और अरवी का सालन, क़ीमे में मेथी, और खुश्क पराठे; सूली की चपातियाँ, और मीठे टुकड़े, और माश की दाल।

ख—वस काफ़ी है यार।

साहबज़ादा—अच्छा, तुम ? बाहर ?

ख—हम बताएँ, हम बताएँ......जो हम बताएँ,—वो पकवाओ। अन्दर तो बहुत चीजें पकती हैं। मगर कबाब नहीं हैं। गर्मागर्म नहीं गर्मागर्म सीख कबाब, और अंडे भरे कबाब; बस। पुलाव हमें पसन्द नहीं।

साहबज़ादा—अरे वाहरे गँवार!

ख—हमको शराब के साथ कबाब और पूरी पसन्द है।

साहबज़ादा—कुछ पूरियाँ भी तल लेना जी।

ख—ले अब हमारा शग़ल मँगवाओ और तख़लिए में चलो। साहबज़ादे साहब इनको एक कमरे में ले गये। दरवाज़े खोले तो अजब बहार का लुत्फ़ दिखाई देता था—और हरी-हरी दूब का पूरा जोबन यहाँ से लूटते थे। ये शराब नहीं पीते थे, मगर उनके हिन्दू दोस्त बड़े पियक्कड़। अकेले में बातें होने लगीं।

ख—हमारी तो यही राय है, कि वालदा से साफ़-साफ़ कह दीजिए।

साहबज़ादा—अरे भाई, हमारी वालदा चाहती हैं कि हमारे एक चचा की लड़की से हमारा रिश्ता हो। हम घर ही में शादी करेंगे। मैंने जो दो-एक औरतों से साफ़-साफ़ कह दिया कि हम अभी निकाह न करेंगे, और निकाह करेंगे तो अपनी पसन्द से; बस, ग़ज़ब हो गया। बहुत रोयीं। मुझे बुलाके बहुत समझाया कि बेटा मैं दुखी हूँ। मुझ पर दुख पर दुख पड़े हैं। अब जो अल्लाह ने सुख दिया—तुमको लाखों बरस की उम्र अल्लाह दे—तो तुम यों जलाते हो। ऐसी अच्छी लड़की है, गोरी-चिट्टी; सोलह बरस की उम्र, सलीक़ेदार। ऐसी कहाँ मिल सकती है? और अपनी लड़की जानी-बूझी, घर की लड़की। अब हम उनसे अपने दिल का हाल क्या कहें कि हमारी तो किसी और पर जान जाती है; दूसरी कब पसन्द आएगी। उसके सिवा, जो औरत हमारी बग़ल में बैठेगी, काली मालूम होगी। दूसरे दिन उन्होंने लड़की को बुलवाया। लड़की है; अब सयानी हुई; यों तो हमारा निकाह उससे होना ही चाहिए। बराबर, पीढ़ी दर पीढ़ी, घर ही में शादियाँ हुआ कीं, अपने-अपने घर की रस्म है। हमारे ख़ानदान में ग़ैर जगह की लड़की लाना ऐब समझा जाता है। और क़यामत का सामना यह है कि अगर ग़ैर जगह शादी करे तो सिर्फ़ बुरी बात ही नहीं, बल्कि बुरा शगुन समझा जाय। ख़ानदान में किसी ने ग़ैर जगह शादी की थी। एक ही अठवारे में मियाँ-बीवी दोनों चल बसे। तब से ग़ैर जगह शादी करने की रस्म ही छोड़ दी गई। लड़की दिखाने के बाद हमारी वालदा ने एक औरत को जो लड़कपन में हमारे साथ खेली हुई थी, [illegible] के भेजा कि हमारा दिल टटोले। उसने बातों बातों में कहा, सरकार अपनी दुल्हन को देखा? आँखें और [illegible] [illegible] [illegible] है। अल्लाह ने अपने हाथ से बनाई है—उसे देखो तो [illegible], दोनों [illegible], दोनों [illegible]—हमारी नज़र [illegible]

मूरख नहीं; दोनों के मिज़ाज में सादगी। हाय हम तो हजूर को ढूंढ़ते ही थे कि वीवी (मतलव उस लड़की) की वदनसीवी से यह सब गड़वड़ हुआ। अव अल्ला-अल्ला करके यह दिन देखने में आया.....तो वेगम साहव से लड़-लड़के भारी जोड़ा लूँगी। वह यह वातें कर रही थी और मैं ठंडी साँसें भर रहा था। जी चाहता था कि यह यहाँ से उठ जाय, तो अच्छा। वह सिखाई-पढाई तो आई ही थी, हमारी परेशानी और ठंडी साँसें भरते और चितवनों और तेवर से ताड़ गई कि वहन से रिश्ता करना इनकी मरजी के खिलाफ़ है। मैंने भी जल-भुन के कह दिया—अरी, कुछ दिवानी हुई है! मै शादी ही नहीं करूँगा; तू है किस फेर में ? वस इतना सुनना था कि वह वहुत समझाने लगी और मैं उठ के चला गया। वस, अम्मा से जा के जड़ दिया। घर भर में सवको अफ़सोस। उस लड़की से नहीं कहा, कि अपने दिल में वुरा मानेगी, कि मैं कोई सड़ी मछली हूँ कि फेंक देते है? वालदा ने कई दिन तक समझाया। घर जहन्नुम का नमूना हो गया। वालदा वहुत रोया कीं, और उनके रोने से मेरा दिल भर आता था। मकान फाड़े खाता था।

ख—वड़ी मुश्किल आन पड़ी है।

साहवजादा—कैसी कुछ! मुश्किल सी मुश्किल है! हा!

इतने में एक नौकर ने वाहर से अर्ज की—हजूर वड़ी सरकार ने याद किया है। महरी आयी है।

साहवज़ादे ने दस मिनट की इजाजत अपने दोस्त से ली और उन्होंने इसी खवास से कहा—जरा वाहर के वावर्चीखाने से कोई नमकीन चीज़, जो वची वचाई हो, ले आओ! यह 'वहुत खूव !' कहकर गया और सुवह की वची हुई तली अरवियाँ और दो शामी कवाव और प्लेट में थोड़ा-सा मुतंजन और भेजा। मुतंजन तो उन्होंने फेर दिया, और वाक़ी सव चीजें रख लीं, और शगल किया किये। सामने तालाव लहरें ले रहा था। लहरों की झिलमिल रवानी, और किनारे का दमकता हुआ सब्जा; हरी-हरी दूव। एक तरफ हाथी झूम रहे; एक तरफ शेर और अरना भैंसा और रीछ। कई क्यारियों में ताजे फूल महकते हुए; दरख्तों पर जानवर चहकते हुए। थोड़ी देर में साहवज़ादे आये; आँसू पोंछते हुए।

ख—वही वखेड़ा होगा, और हो ही क्या सकता है!

साहवज़ादा—जी हाँ! जिन्दगी तलख है।

ख—जिनको खुदा ने धन-दौलत दी है, उनको आराम नहीं।

साहवज़ादे—भाई, एक काम करो। तुम जाके पता तो लगाओ कि क्या मामला हो रहा है, और हमारी माशूक़ा कहाँ है आखिर! उन सवको हमारा हाल क्या मालूम, मगर तुमको तो मालूम है।

ख—मैं तो खुद सोच रहा था। कल ही रवाना हूँगा।

देर तक बातें हुआ कीं; और आपस में खूब सलाह-मशविरा हुआ। खाना खाने के बाद दोनों ने आराम किया। और सुबह को चुपड़ी रोटियाँ और सादा क़ोरमा और मछली के कबाब बावर्ची ने नाश्ते के लिये साथ कर दिये, और इस जन्टिलमैन ने अपने दोस्त के साथ दूधिया चाय पी। इधर रानी साहब ने लड़के को बुलाकर फिर समझाया-बुझाया—कि बेटा जो काम करो, समझ के करो; जल्दबाज़ी न करो। और निकाह के बारे में मुझ दुखिया को और ज्यादा दुख न दो। अरे मैं तुम्हारे ही भले के लिये कहती हूँ।

—:०:—

छठी हूक

एक साफ़-सुथरी, नफ़ीस-सी जगह पर—जिसके हर पेड़-पालो, फल-फूल जड़ी-बूटी, घास-पत्ती, हवा-पानी, ज़मीन-आसमान, आस-पास की हर चीज़ से गोया जंगल में मंगल का सा लुत्फ़ पैदा होता था—एक छत के बँगले में, जो सादगी मगर क़रीने और सलीक़े और तमीज़ और सफ़ाई के साथ सजा हुआ था, पांच कमसिन-कमसिन लड़कियां, अलग-अलग सज-धज और बनाव-चुनाव के साथ फ़र्श पर बैठी थीं। शाम का वक़्त; सूरज डूब चुका था। तारे यों ही झिलमिलाते आसमान पर कहीं कहीं नज़र आते थे। सूरज की लाल किरनों से एक तरफ़ आसमान पर गुले-लाला खिला हुआ था—बादल के लक्के, कोई सफ़ेद, कोई आबी, कोई नीलगूं, ज़रा-ज़रा से, मगर एक-दूसरे से मिले हुए फैले थे; जैसे रंग-बिरंग की धुनकी हुई रुई। हवा जन्नाटे से चल रही थी। पीपल और बरगद के पत्ते बहुत ही ज़ोर से खड़खड़ाते थे और ये पांचों कमसिन लड़कियां बँगले में बैठी थीं; मगर सबके दिल गोया बुझे-बुझे से। एक ने कहा—बहन, आज रात तो गाना-वाना गाके, वाह-वाह पी के कहानियां हों। दूसरी ने हामी भरी। तीसरी बोली—तुम लोग कहानियां कह लो, हम इतने पहेलियां बुझायेंगे। मगर इनकी बात काट कर, और ठंडी आह भर, इन सबकी [illegible] ने बहुत दुखी हुई आवाज़ में कहा—अरे, यहां न पहेलियां [illegible] है, न कहानी सुनने को जी चाहता है। हमारी कहानी में दर्द और [illegible] होगी। यह कह कर आंसू आ गये; और इन चारों ने समझाना शुरू किया:

१—हुज़ूर, ग़म न करें।

२—हां, [illegible] इस ख़याल को दिल से दूर कीजिए।

३ [illegible]—हाय, [illegible] हुई हो!

२—सरकार, हमारा दिल तो कुढ़ता है। वह दिन अल्लाह जल्द दिखाए कि आपका अरमान निकले।

जवाव—अव निकल चुका!

३—यह न कहिये! अल्लाह के वड़े-वड़े हाथ हैं!

जवाव—यह सच; मगर उम्मीद नहीं होती।

४—आपका यह खयाल ग़लत है। मर्द उठ वैठते हैं। सांप के काटे हुए को दफ़नाने ले गये, और वह जनाज़े से कुलवुला के उठा, और अव तक ज़िन्दा जीता-जागता है।

२—फिर इन वातों के मुक़ावले कौन वात है!

३—हमारा दिल गवाही देता है, कि डेढ़ महीने के वाद ये सव मुसीवतें दूर हो जायेंगी। हमसे एक पंडित ने कहा था। वह वड़ी सच्ची-सच्ची वातें वताता है। जो कहता है वही होता है।

कौन पंडित?—कौन? क्या नाम है?

३—मुझे इन हिन्दुओं का नाम नहीं याद रहता। एक तेजकरन मारवाड़ी को तो जानती हूँ, मुआ ठग!

उसने कहा—ये वातें तो हुआ ही करने की, मगर ऐसा न हो कि तुम लोग सव हाल अम्माजान से कह दो; तो ग़ज़व भी हो जाय। मेरी भी जान जाय।—क्योंकि अगर कोई वात मेरे खिलाफ़ हुई, तो मैं ज़रूर अपनी जान दे दूंगी!—वह और भी ज़्यादा कुढ़ेगी।

इस पर सवने कहा—जी नहीं। ऐसा क्या कोई नादान समझा है!

यह वातचीत उस वक़्त की है जव एक परी-सा ख़ूवसूरत लड़का, तीन कमसिन लड़कियों के साथ वाग़ में टहल रहा था; और एक लड़की वाग़ के फाटक पर इसलिये विठाई गई थी कि जव कोई ज़नानी सवारी नज़र आये तो फ़ौरन इत्तला दे। और वह गोरा लड़का 'पी कहाँ! पी कहाँ!' कह कर के, झूम के मस्तानावार क्यारियों के वरावर-वरावर चहलक़दमी कर रहा था।—कि एकाएक उस पहरेवाली लड़की ने आके कहा—हुज़ूर, सवारियाँ आ गईं। और वह लड़का झपट के एक कमरे में हो रहा। और वहाँ मर्दाना लिवास वदल कर ज़नाने कपड़े पहने—मलमल का कपासी रँगा हुआ दोपट्टा, मलमल ही की गुलावी कुर्ती और वसन्ती पायजामा। ज़ेवर एक भी नहीं। और उन चारों को लेकर उस कांच वाले वँगले में वैठी।—'वैठी' हमने इसलिये लिखा कि उस लड़के ने अव लड़की का भेस वदल लिया था।

थोड़ी ही देर में एक वूढ़ी औरत कोठे पर आई—साथ-साथ दो खवासें, एक वग़दाद की हवशिन, दो महरियाँ; और एक जवान औरत, कोई वीस-वाईस वरस का सिन, कड़े-छड़े पहने हुए आई। वूढ़ी औरत वेगम थी, और

लपट दूर तक जाती थी। वहाँ जाके पीपल का एक पत्ता तोड़ा। मैंने कहा, यह क्या करती हो! ए, बस, मेरा इतना कहना था कि टहनी तोड़ ली। नाजुक फुनगी सब चली आई। कहा—अरे ओ भूत-परेत-आसेब-चुड़ैल—(थू थू!!)—तू जो कोई हो, आ! और मैं गुस्से हुई। मगर न माना। बस जैसे ही नीचे आने लगीं, एकाएकी नाक के पास दर्द होने लगा। मेरे तो हाथों के तोते उड़ गये। आप पार गई थीं। मैंने पड़ोस से उनको बुलवाया—वही आमिल—मियाँ जोग की चढ़ाई के मशहूर आमिल! उन्होंने धूनी बताई। उससे जाके दर्द कम हुआ।

खवास—तुमने मुझसे कहा था।

बेगम—अब रखवाली रखनी चाहिए।

खवास—ए हुजूर सौ काम छोड़ के।

नजीर—भला कुछ बताती-बताती हैं कि पपीहा कहाँ से आया?

फ़—उनको जरी भी कुछ नहीं याद है।

नजीर—अच्छा, फिर जो वजह है, वह तो जाहिर है।

फ़—जरी मालियों से पूछो; मजीदन (खवास) और सितारन को बुलाओ।

सितारन और दो माली आए। दोनों बूढ़े।

मजीदन—हुजूर, जरी आड़ में हो जाइए। माली हाजिर होते हैं; बूढ़े हैं।

बेगम—आने दो। यहाँ जान पर बनी है। किसका पर्दा और किसका जर्दा। तुम जरी आड़ में हो जाओ बेटा।

नजीर—आने दो, अम्मीजान; मुए, बूढ़े, गँवार। और [illegible] है।

मालियों ने दूर से झुक के सलाम किया।

बेगम—अरे मालियो, तुम जानते हो कुछ कि यह पपीहा जो बना है, कहाँ से आया!

एक—हुजूर, इनको मालूम है।

दूसरा—सरकार, यह जो [illegible] है, इसके दरवाजे के पास गुलाम की वह गोली है। उसने हमसे सवेरे कहा—बाबा, रात को एक लड़का आया, कोठे पर चढ़ गया, और वहाँ से फिर उतरा। और वहाँ, यह जो चैन पड़ी है, वहाँ बोली बोलने लगा।

बेगम—उसको यहाँ तो बुलाओ।

वह आई। उसने सारी बात को दुहराया, और कहा—मैं [illegible] के नहीं निकली—कि कोई मुझको उस लड़के से लगाव नहीं; जवान औरत। बस, [illegible] पर चढ़ गया। तब मुझे डर लगा। और भाग के बाग की [illegible] के पास आई। [illegible] मुँह से बात-चीत नहीं निकलता था। [illegible] आवाज आई, और थोड़ी देर में वह आदमी उतर [illegible]। मैं [illegible] पर सो रही। [illegible] सुना कि [illegible]। [illegible] और [illegible] के [illegible] दिया। सुना, [illegible], [illegible] बिल्कुल [illegible] थे।

वेगम—सरकार कौन? अरी कौन सरकार?

माली—हजूर, हमारे मालिक। हजूर के साहवजादे।

वेगम—क्या ? यह क्या वकता है। वेवक़ूफ़।

फ़—अच्छा , तुम लोग जाओ।

वह चले गये।

वेगम—नज़ीर, यह तो नई वात सुनी। (ठंडी साँस भर के) मगर यह तो लड़का वताती है।

फ़—सच कहती है। मैंने एक दिन हँसी-हँसी में मर्दाने कपड़े पहनाए थे, और मर्दाने कपड़े तोशकखाने से ले आई थी। आज ही तो उतारे हैं।

मजीदन—जव तो कोई आसेव जरूर है। और सवेरे उन लोगों ने इनको वेंच पर देखा भी। और वह कहती भी है कि सरकार की-सी चाल थी।

वेगम—अव क्या होगा! हम तो एक ही मुसीवत को रोते थे, हाय, अव दूसरी मुसीवत पड़ी।

नज़ीर—(रोनी सी आवाज़ में) शहर ले चलो।

फ़—खुदा ही ने कहा है—वह तो होना ही है।

मजीदन—(नज़ीर से) आप ज़री जाके अपनी तौर पर पूछिये तो शायद कुछ याद आ जायगा।

फ—कुछ नहीं याद है। घर-घर के पूछ चुके हैं। पूछिये! वह कहती हैं, हम जानते ही नहीं।

वेगम—शहर किसी को भेजो कि जाके नवाव दूल्हा को वुला लाए। माली को वुलाओ।

मजीदन—अरे ये मौत-खपट्ट क्या जल्दी जायँगे!

वेगम साहव ने कहा—हम मालियों से पूछेंगे कि यहाँ तेज़ सवारी कौन मिलती है, जो सवसे जल्द जाय।

माली हाज़िर हुए। उनसे पूछा गया। उन्होंने कहा—यहाँ से काली भैंरो के टप्पे पर एक वनिया रहता है। उसके पास एक टट्टू है। हवा है, हवा। उसको भेज दीजिए।

हुक्म हुआ, उसको लाओ। एक माली हुक्म की तामील के लिये गया। वेगम साहव और खवास वहीं वैठी रहीं। नज़ीर वेगम उस लड़की को साथ लेकर गईं। ज़ीने पर क़दम रक्खा ही था, कि आवाज़ आई—'पी कहाँ! पी कहाँ!' वह लड़की अव माँ और वहन के लिहाज से, उनको पास न पाकर, आहिस्ता-आहिस्ता अपनी पी को याद कर रही थी। जव नज़ीर वेगम की पाजेव की झंकार सुनी, तो वैसे तो खामोश हो रही, मगर दिल ही दिल में 'पी कहाँ! पी कहाँ!' कहती जाती थी।

नज़ीर—बहन ज़री टहलो। बातें करो। दिल वहलाओ। देखो हम लोगों ने तुम्हारे लिये ऐसा घर और ऐसा लड़का ढूंढा है कि खुश हो जाओगी।

फ़—दिल में तो खुश हो गई होंगी।

लड़की चुप। गोया कह रही है—

न छेड़ ए निगहते-बादेवहारी, राह लग अपनी;
तुझे अठखेलियाँ सूझी हैं, हम वेज़ार वैठे हैं!

फ़—ए लो, वोलो जी!

नज़ीर—अरे, आखिर अव तुम सयानी हुईं। माशेअल्ला, इतना सिन आया; अव तुम्हारा रिश्ता होना चाहिए कि नहीं? खुदा ने चाहा—खुदा ने चाहा, तो पाल डाला जायगा।

लड़की—(डवडवाई हुई आँखों से) वाजी, हमारा दिल ठिकाने हो ले, तो हम जवाव दें।

नज़ीर—अच्छा, यह माना। मगर दिल ठिकाने न होने का सवव है। वह कौन वात है, जिससे दिल ठिकाने नहीं। तुम ग़रीव-मोहताज की लड़की नहीं हो!

फ़—और जहाँ रिश्ता कर रहे हैं, वह भी वसीक़ेदार हैं। लड़का अच्छा, खूवसूरत। फिर भी जी के वे-ठिकाने होने का क्या सवव है?

नज़ीर—कश्मीरी दरवाज़े के पास मकान है। ये उस लड़के के साथ खेल चुकी हैं। खालाजान कहती थीं कि खेलते-खेलते उसको मारा, तो वह रोता हुआ अपनी माँ के पास गया और कहा कि इस लड़की ने हमें मारा। ये अपने मियाँ को पहले ही ठोंक चुकी है!

मियाँ का लफ़्ज सुनना था कि इस वेचारी के दिल पर चोट लगी, कि लो अव तक तो वातें ही वातें थीं, अव तो ये खुल्लमखुल्ला 'मियाँ' कहने लगीं। इतने में उसके चेहरे का रंग फ़क़ और वेहद उदासी छाई, जो देखा तो नज़ीर वेगम को भी रंज हुआ, और गुस्सा भी आया, और झल्ला के कहा—कितनी वदनसीव लड़की है। कहाँ से वह निगोड़ा दरोग़ावाला लौंडा आया—उस पर अलम-विरादर का अलम टूटे!—अव की हैज़े में सवके पहले गोई उसी उजड़े को लगे! और हमारी आँखों के सामने तोड़पाये!

इस इश्क़ के मारे हुए को यह ताव कहाँ कि ऐन उसी के वारे में जिस पर उसकी जान निछावर थी,—यह सुने! सुनते ही ज़ोर से चीख मारी और ग़श आ गया। वेगम दौड़ी आईं। मुंह पर छींटे दिये केवड़े के; और ठंडा-ठंडा पानी पिलाया। दो औरतें पंखा झलने लगीं। ज़रा-ज़रा होश आया।

इतने में माली उस वनिये को लेकर आया और एक सिपाही को उसके टट्टू पर रवाना किया, कि शहर जा के, नवाव दूल्हा, नजीर वेगम के मियाँ, को वुला लाये, और ताकीद करे कि साथ ही चलिये, वड़ा ज़रूरी काम है।

सिपाही रवाना हुआ। दूसरे रोज़ शाम के पहले नवाव दूल्हा आये। अलहदा कमरे में वेगम और नज़ीरवेगम और फ़ैज़न और ख़वास गईं। और साहवज़ादी को सत-खंडे पर चढ़ने और पपीहा लाने का सव हाल कह सुनाया। माली और उसकी वहू को वुलवाया। माली ने फिर वह क़िस्सा दुहराया। नवाव दूल्हा ने कई सवाल किये, और कई औरतों से वहुत सी वातें पूछीं और एक दफ़ा रान पर हाथ मार कर कहा—अरे! यह तो वड़ा वुरा मरज़ है। वड़ी चौकसी रखनी होगी। सोते-सोते, ऐन नींद की हालत में, काम करना और सतखंडे पर जाना और जानवर लाना, और फिर सो रहना, ग़ज़व ही तो है। अगर कोई ज़रा उस वक़्त टोक देता, तो, ख़ुदा-न-ख़ास्ता उसीदम दम निकल जाता। वड़ा ख़राव मरज़ है—सोमनाम्वुलिज़म!

—:o:—

सातवीं हूक

शेर को रातव दिया जाता था, और वह साहवज़ादा, कि ख़ुद रियासत का मालिक था, दिल वहलाने के लिये दिल्लगी देख रहा था। एक सिपाही के लौंडे ने शेर की दुम, जो कटघरे के वाहर थी पकड़ के खींची। शेर उस वक्त वकरी की रान खा रहा था। पहले ज़रा यों ही सा ग़ुर्राया। जव उस लौंडे ने ज़ोर से दुम को खींचा, तो शेर इस ज़ोर से डंकारा और फिरा कि लौंडा गिर पड़ा। शेर वदस्तूर गोश्त खाने लगा। और उस साहवज़ादे को उस लौंडे की शरारत और वौखलाहट पर वेतरह हँसी आई;—और पहली ही मर्तवा था कि इस मकान में आकर ये हँसे हों। हँसी के आते ही अचानक उसको ख़याल आया कि—अरे! मैं हँस रहा हूँ! हाय, वह वेचारी इस वक़्त क्या जाने क्या कर रही होगी, और सोती न होगी तो वेचैन ज़रूर होगी। और मैं कम्वख़्त हँस रहा हूँ!

शेर के कटघरे के पास से ये दूव के तख़्ते के पास आये और टहलने लगे। हद से ज़्यादा उदास; वड़े रंज में। एक आदमी को वुलाकर कहा—देखो एक साँडनी सवार को नवावगंज की चौकी तक भेजो कि देखे, वावू किशोरी लाल साहव यहाँ आते हैं या नहीं। पालकी गाड़ी पर आयेंगे। अगर उनकी गाड़ी मिले तो कह दे कि राजा राहत हुसैन ने भेजा है, और कहा है कि इतना वता दीजिए, कि वेटा या वेटी?—वल्कि एक काम करो। कलम, दवात, क़ाग़ज़ मँगवाओ। ख़त लेके जाय, और क़लम-दवात-काग़ज़ उसके साथ कर दो, कि वह जवाव लिख दें; उनके पास मुसाफ़रत में कहाँ होगा। रुक़्क़ा जल्दी में लिखा—

'माई डियर किशोरी—

अरे यार आँखें तुमको देखने को तरसती हैं। भाई कुछ पता लगाया या नहीं ?

तुम्हारा दोस्त,

राहत—बराय नाम।'

साँडनी सवार रुक़्क़ा और क़लम-दवात-काग़ज लेकर बहुत तेज़ गया; और तीन घंटे बाद वापिस आया; और कहा—हुज़ूर, चौकी से तीन कोस गया, मगर कहीं पता नहीं। एक सवार घोड़ा दौड़ाए हुए आता था। उससे पूछा, कोई टमटम पीछे आता है? उसने कहा, नहीं। इतना सुनना था कि राहत हुसेन दूब पर बैठ गये, और उनके आदमी और दारोग़ा साहब दौड़ पड़े।

१—सरकार, सरकार! अरे!

२—बोचा लाओ! बोचा लाओ! जल्दी लाओ!

३—हुज़ूर लेट जायँ। पसीने आ गये! ये हुआ क्या! डाक्टर साहब को बुलाओ!

४—अरे मियाँ बोचा लाओ! घंटों लगा देते हो, पाजियो!

५—पसीना रूमाल से पोंछिये, दरोग़ा साहब!

ज़नानख़ाने में ख़बर हुई तो क़यामत का सामना हो गया। और इधर इसी दूब के फ़र्श पर एक पलँग पर राजा राहत हुसैन साहब को लोगों ने लिटाया, और पंखा झलने लगे। इतने में एक महरी ने आन कर कहा—पर्दा हो जाय! सब एक सिरे से चले जाइये। बड़ी सरकार आती हैं! सब एकदम हुर्! अब बाग़ और ज़मीन और दूब और तालाब भर में सिवाय इस लड़के के मर्द का नाम भी नहीं।

महरी ने पंखा ले लिया था। महलदार ने इत्तला दी कि, हुज़ूर पर्दा हो गया। बड़ी बेगम, मय ख़वासों और महरियों और मुग़लानियों और महलदार और चेंगी-पोंटों के, पलँग के इर्द-गिर्द। सबके पहले इस लड़की ने, जिसके साथ बड़ी रानी ने लड़के का निकाह तजवीज़ा था, राहत हुसैन के माथे पर हाथ रखकर, झुक के पूछा—मेरे प्यारे भाई, कैसे हो? यह कमसिन, बहुत ही कम-उम्र, हसीन, कुँआरी लड़की अगर किसी और नौजवान मर्द के माथे पर अपना मेंहदी से रचा हुआ हाथ रखकर इस मोहब्बत से पूछती, तो वह समझता कि कारूँ का ख़ज़ाना मुझे मिल गया; मगर यह तो और ही फ़िराक़ में था। उसने इशारे से कहा— बैठ जाओ! और वह उसी पलंग पर बैठ गई।

बेगम—बेटा, यह तुम एकाएकी गिर क्यों पड़े।

राहत हुसैन यानी वही साहबज़ादा—अजी सरकार, ये लोग तो ख़ामख़ाह बात का बतंगड़ बना देते हैं। मैं ज़रा दूब पर बैठ गया, और कच्ची घड़ी भर में खलबली मच गई।

बेगम—बेटा, घर भर तुमको देखकर जीता है। जो ज़रा भी कोई सुने

कि तुम्हारे पाँव में काँटा चुभा, तो चैन क्योंकर आये। अब तुम यह बताओ कि हो कैसे! डाक्टर को बुलाने आदमी गया है।

राहत—(किसी क़दर चिड़चिड़ेपन के साथ) आप तो बेकार दिक़ करती हैं। अरे भई, देखती हो कि खासा अच्छा हूँ, भला-चंगा; डाक्टर क्या करेगा?

बहनों में से एक ने कहा—भाई तुम हम लोगों के पूछने से परेशान क्यों होते हो? हमारी तो ज़िन्दगी का दारोमदार तुम हो। अम्मीजान सच कहती हैं कि तुमको देख के जीते हैं।

राहत—अरी बहन, आख़िर बीमारी की कुछ अलामत पाती हो? फिर क्यों घबराती हो?

बहन—बस, अब हमको जैसे लाखों रुपये मिल गये। जान में जान आ गई। तुमने हमें जिला लिया, ज़िन्दगी दे दी।

बेगम—मैं कहने ही को थी: अच्छा अगर डाक्टर आके देख ले तो क्या हर्ज है!

राहत—(चिड़चिड़ेपन के साथ) अम्मा, तुमने कलेजा पका दिया। डाक्टर क्या मेरी लाश पर मरेगा आके?

बहन—खुदा न करे! खुदा न करे! ये क्या बातें मुंह से निकालते हो, भाई! अम्मीजान, तुम यहाँ से चली जाओ!

बेगम—अच्छा, लो अब हम जाते हैं। तुम भाई-बहन बैठो।

राहत—(मुस्कराकर) नहीं, नहीं; जाइये नहीं। मगर मुझे दिक़ न करो भई। परेशान क्यों करती हो। जो मैं बीमार होता—तो खुद न कहता? मेरी बीमारी डाक्टर के इलाज से अच्छी होने वाली नहीं है।

इतना कहना था कि बड़ी बेगम ने इनकी बहन की तरफ़ देखा, और उसने उनकी तरफ़, और जितनी वहाँ खड़ी थीं, सब एक दूसरे को देखने लगीं।

राहत—अब तुम लोग जाओ। मेरा तुम्हारे बैठने में कोई हर्ज नहीं है; मैं फ़क़त तुम्हारी तकलीफ़ के लिये कहता हूँ।

बहन—कैसी बच्चों की सी बातें करते हैं।

खवास—अरे हज़ूर, तकलीफ़ है, कि ऐन राहत है।

दूसरी—इसमें क्या शक है। अल्ला जानता है, जैसे ही सुना कि ग़श उनके दुश्मनों को आया, बस जैसे जान तन से निकल गई।

बेगम—अच्छा अब हम तो जाते हैं।

इतने में फीलवान की बीबी ने कहा, सरकार कोई औरत बन्द गाड़ी में आई हैं, राजा साहब से मिलना चाहती है। सुनते ही सबके कान खड़े हुए, और राजा ने ताज्जुब के साथ पूछा—औरत आई है? और हमसे मिलना चाहती है? कौन औरत है, भई!....अच्छा, अब तुम लोग जाओ। **और** बे

सब चली गई। मगर सबको अचम्भा कि कौन औरत आई है। घर भर में खलबली मची हुई। इधर एक खवास ने आनकर कहा, सरकार एक बन्द गाड़ी में कुछ सवारियाँ आई हैं। 'फ़ैज़न' नाम बताया है। फ़ैज़न का नाम सुनना था कि बाछें खिल गईं। हुक्म है कि फ़ीलखाने की छत पर जो खपरैल है, वहाँ पर्दा करा के सवारियों को उतरवाओ। दिल में बड़े खुश कि अपनी प्यारी माशूक़ा का कोई सँदेशा आया; और कौन जाने कि खुद भी आई हो। डर था कि कहीं मारे खुशी के जान ही न निकल जाय! खवास हुक्म की तामील के पहले दौड़ गया था। ये आदमी दूर पहुँचे ही थे कि उसने वापिस आके कहा, सरकार, वह नहीं उतरतीं। हुज़ूर ही को बुलाती हैं! यह खुश-खुश चहलक़दमी करते हुए चले। एक-एक क़दम पर यह मालूम होता था कि कलेजा गज़ भर का हो गया है।

अब इधर का हाल सुनिये कि बड़ी बेगम और राहत हुसैन की बहनों और कुल घर के लोगों और नौकरों और मुसाहिबों को रंज था कि मालूम होता है कि वही औरत आई है जिस पर साहबजादे रीझे हुए हैं। लेकिन अगर बाहर-भीतर के आदमियों, मर्दों-औरतों में, किसी को खुशी थी तो वह दारोग़ा थे।

बेगम—मैं कहती हूँ, अब क्या होगा?

बहन—क्या बताऊँ, अम्मी जान।

खवास—मालूम होता है, वही आई है। यह है कौन, जिस पर ये इत्ते रीझे हुए हैं। टोह तो लेनी चाहिए।

बहन—फ़ैज़न तो किसी देहातिन का नाम मालूम होता है। अच्छा, नेक क़दम, तुम जाके टोह तो लो! किसी बहाने से जाओ।

खवास—फ़ीलवान के पास जाके बैठो। वहाँ से सब सूझेगा।

बेगम—हाँ, मैं कहने ही को थी।

बहन—अल्ला हमारी आबरू रखे।

बेगम—घर में लड़की मौजूद होके, लड़का मौजूद होके, और जगह कूद पड़ना—इसकी अक़ल को क्या हो गया है?

बहन—और यह मुआ दारोग़ा और पुरचक देता है।

खवास—यह मुआ है कौन? भद्दा-भदेसल!

इतने में नेकक़दम फ़ीलवान के पास गई। और राजा राहत हुसैन साहब बहादुर बादशाह बने हुए उस बन्द गाड़ी के पास पहुँचे। फ़ैज़न से यह खुले हुए थे, बचपन के। जब गाड़ी के पास पहुँचे तो दिल धड़-धड़ करने लगा और फ़ैज़न का नाम लेकर गाड़ी का पट खोला तो धक् से रह गये। और अन्दर की सवारी ने क़हक़हा लगाकर कहा—"हात् तेरे गीदी के!" राजा ने कहा—भई वल्लाह, बड़ी मायूसी हुई! ऐसी दिल्लगी —ऐसी हालत में अच्छी नहीं होती! मैंने

तो सोचा था कि हमारा क़ातिल होगा, तो जान में जान आ जायगी... साथ ही भाग जाता! और जो फ़ैज़न ही होती, तो खुदा की क़सम, क़ुरवान जाता—बल्कि क़दमों पर टोपी रखता—पाँव चूमता, और धो-धो के पीता, कि माशूक़ की भेजी हुई आई है। तुमने, बच्चा! इस वक़्त और भी रंज दिया। क्या जाने कब का बदला तुमने निकाला है।

किशोरीलाल ने कहा—किसी क़दर कामियाबी तो हमारे जाने में ज़रूर हुई। बड़ी बुरी हालत बेचारी की है। वह किसी बाग़ या जंगल में रहती है, और पी कहाँ! पी कहाँ! की हाँक लगाती है। अफ़सोस के क़ाबिल हालत हो गई है। जिस औरत ने मुझसे बयान किया, वह खुद देख आई है—! कहती थी बिलकुल दीवानी हो रही है; और अगर यही नक़्शा क़ायम है तो, खुदा-न-ख़ास्ता, बिलकुल सिड़न हो जायगी और तिनके चुनने लगेगी। वह तो कहती थी कि सिवाय पी कहाँ! पी कहाँ! के और कुछ कहती ही नहीं। मर्दाने कपड़े में देखा था। कहती है, बिलकुल यह मालूम होता था कि कोई ख़ूबसूरत सा लड़का खड़ा है—चुस्त घुटन्ना, अँगरखा वसन्ती रँगा हुआ, हरी चौड़ी गोट लगी हुई। कमर तक क़ुदरती लम्बे-लम्बे बाल, बीच की माँग निकली हुई, मगर वह रंग-रूप नहीं। वह फूल से गाल नहीं। जर्दी छाई हुई। घुल के काँटा हो गई है। बाज़ी बात कहने को जी नहीं चाहता। कोई ताज्जुब नहीं कि पागल-पने में अपनी जान दे दे। जान पर खेल जाय—या मारे रंज के मर जाय।

राहत—पूरा पता न मालूम हुआ, कि है कहाँ?

जवाब—अरे भाई यह तो कोई जानता ही नहीं। लाख-लाख जतन किये, लालच देके कहा, कि भरपूर इनाम दूँगा। उसने कहा—बाबू जी यह न होयगा! फ़ैज़न ने अपने मरने की क़सम दे दी है।

राहत—क्या फ़ैज़न भी साथ है? उसको यह क्या सूझी!

जवाब—अल्ला ही जाने! फ़ैज़न की एक रिश्तेदारिन से तो हमने सुना था—फूफी है, या ख़ाला, या कुछ ऐसी ही है। देखो, मैं फिर टोह लगाता हूँ!

राहत—किसके मकान पर है, पूछा?

जवाब—वहाँ किसी के बताने से भी हाल मालूम न हुआ। सख़्त ताकीद है, कि कोई किसी ग़ैर से बात न करने पाये।

राहत—इसमें कोई भेद ज़रूर है। (ठंढी साँस भर कर) हाय क्या ग़ज़ब हो रहा है। आँखें तरस रही हैं!

जवाब—अरे भई, अलैहदा इस वजह से कर दिया कि उसका दिल और तरफ़ होकर धीरे-धीरे बदल जायगा और भूल जायगी। मगर वहाँ उलटी आँतें गले पड़ीं। पागलपन और बढ़ गया। मगर घबराओ नहीं, दिल को ढारस रखो!

राहत—अगर दीवानी हो गई तो ग़ज़ब हो जायगा। और अगर खुदा

न करे—ख़ुदा-न-ख़ास्ता....(बहुत ही दुखी होकर, रोते हुए) हम भी उसी की क़ब्र पर जान दे देंगे।

जवाब—ख़ुदा न करे! ख़ुदा न करे! यार, यह बदशगूनी की बातें मुँह से मत निकाला करो! उसकी क़ब्र पर जान दूँगा! वाह! —जब न मिले न!

राहत—हमारी ज़िन्दगी पर तुफ़ है! जब से पैदा हुए दम भर चैन नहीं आया। चैन लेने ही नहीं पाते। इससे बढ़कर सितम और क्या होगा कि हम उस पर जान दें, वह हम पर—और न हमें मालूम कि वह कहाँ है, न उसको हमारा हाल मालूम! क्या ग़ज़ब हो रहा है—अंधेर हो रहा है! अच्छा तीन हफ़्ते तक हम और क़िस्मत को आज़माते हैं। अगर मिल सके तो ख़ैर, वर्ना.......
—हमारा दिल बैठा जाता है........

यह कह कर एक चक्कर सा आया और गिर पड़ा। और इधर बाबूजी ने उनके आदमियों को बुलवाया। सुनते ही बेताब होकर सब दौड़ पड़े।

१—अरे! ख़ैरियत तो है!

२—ग़श आ गया!

३—पंखा झलो! पंखा झलो! इत्र मँगाओ।

४—यह हुआ क्या? अभी तो अच्छे थे।

सबके सब जमा हो गये और तरकीबें करने लगे कि मिज़ाज हुज़ूर का रास्ते पर आये। इतने में महलख़ाने में ख़बर हुई। वहाँ ख़बर होना बस ग़ज़ब का सामना था। सितम हो गया, पिट्टस-सी पड़ गई। कुहराम मचा हुआ। जिसने जाके यह ख़बर सुनाई, उसने बहुत कुछ चढ़ा कर कहा था। हुक्म हुआ, पर्दा कराओ। कई आवाज़ें मिल कर आईं—पर्दा कराओ! पर्दा कराओ! महलदार दौड़ी। महरी सटर-सटर करती हुई बाहर आई। पहरे पर कौन है! सारे में पर्दा करा दो—कोठी, तलाव, रमना, फीलख़ाना, अस्तबल, ढयोढ़ी, बाग़। फाटकों से लोग हट जायँ। जल्दी पर्दा हो! अन्दर से फिर ताकीद हुई। इतने में बेगम साहब और राहत अली ख़ाँ की दो बहनें—एक सगी, एक चचेरी, फ़ीनसों पर सवार होकर पहुँच गईं। मर्द सब नीचे उतर आये। ख़वासें उनके पास रहीं। पर्दा होकर सवारियाँ उतरीं। और बाक़ी और बेगमें और औरतें भी, जब पर्दा हो गया तो पैदल आने लगीं, अब ग़शी की हालत दूर हो गई थी; मगर कमज़ोरी कहीं बढ़ी हुई।

बेगम—(माथे पर हाथ रखकर)—पसीने आये हुए हैं।

बहन—भाई कैसे हो? यह हुआ क्या था?

राहत—ग़श सा आ गया। अब आराम है।

बहन ने कहा—अल्ला करे, आराम ही रहे!

हकीम साहब आये।

बेगम—हकीम साहब, मेरी कुल ज़िन्दगी का दारोमदार इसी बच्चे पर है। ये अच्छे हो जायँ, तो मेरी जान तक हाज़िर है। इतने दिनों के बाद जो घर में उजाला हुआ, तो यह नई बात पैदा हो गई।

हकीम—आप घबरायें नहीं। ख़ुदा पर भरोसा रखें। अल्लाह-ताला फ़रमाता है कि मेरे मक़बूल बन्दे वह हैं जो मुझ पर भरोसा रखते हैं।

बेगम—(रुआँसी आवाज़ में) यह रोज़-बरोज़ तबीअत इनके दुश्मनों की बिगड़ती क्यों जाती है?

हकीम—इनका कुल हाल बयान फ़रमाइये। कहाँ रहे, किस तरह पर रहे। कौन-कौन बीमारियाँ इन्हें हुईं। किसी खास बीमारी की शिकायत है? ये सब बातें मालूम होनी चाहिये।

बेगम—इनके साथ एक शख़्स आया है; जो दारोग़ा-दारोग़ा कहलाता है; और एक इनका दोस्त है हिन्दू। इन दोनों को कुल हाल मालूम होगा, मगर हमसे छिपाते हैं। कम्बख़्त साफ़-साफ़ नहीं बताते हैं। इन्हीं दोनों की साँठ-गाँठ है। हकीम साहब, मुझे जिला लीजिए। मैं बड़ी दुखी औरत हूँ। ज़िन्दगी इसी लड़के पर है। और इसकी हालत मुझे अच्छी नहीं मालूम होती। और मुझे मौत भी नहीं आती।

हकीम—अगर आप इस क़दर घबराइयेगा, तो और सब के भी हाथ-पाँव फूल जायेंगे। मैं इन दोनों से जाके साफ़-साफ़ हाल पूछता हूँ। क्या नाम बताए आपने?

बेगम—एक दारोग़ा हैं, नाम नहीं जानती। और दूसरा कोई हिन्दू है इनका दोस्त—उसकी बड़ी खातिरें होती हैं।

हकीम साहब ने कहा—मैं इन दोनों से दरियाफ़्त करके हाज़िर होता हूँ। क्योंकि ऐसी पेचीदा बीमारियों का तूल खिचना अच्छा नहीं। जल्द रोक-थाम चाहिए। यह कह कर बाहर आये। दीवानजी को बुलवाया। अकेले में बैठे। दारोग़ा साहब और साहबज़ादे के हिन्दू दोस्त बुलवाये गये। हकीम साहब ने उन सब से कहना शुरू किया—

साहबज़ादे का हाल अच्छा नहीं है। अव्वल तो कमज़ोरी बेहद हो गई है। दूसरे ग़िज़ा के नाम से नफ़रत है। दूसरे इख़्तलाजे-क़ल्ब ० बेहद बढ़ा हुआ। और इन सब पर तुर्रा यह कि मरज़ का सही-सही पता नहीं चलता। डाक्टर साहब की अक़्ल भी गुम है और हमारी समझ में भी नहीं आता। अब फ़रमाइये, मरीज़ बेचारे के अच्छे होने की कौन उम्मीद है। डाक्टर सर पटक के मर गया हम इलाज करके थक गये। कुछ समझ में नहीं आता, क्या किया जावे। एक जरूरी बात दरियाफ़्त करने की यह है कि ये किस हालत में थे; शौक़ क्या

०दिल की धड़कन।

था। कोई खास बीमारी है या नहीं। दिमाग़ तो कभी बिगड़ नहीं गया। दिल का दौरा कब से उठता है। कोई सदमा तो एकाएक नहीं पहुँचा। जहाँ ये थे, वहाँ किसीके छुटने और जुदाई के रंज ने तो यह हालत नहीं पैदा कर दी। पेश्तर भी कभी यह कैफ़ियत हुई थी? कुल हालत मालूम हों, तो फिर खुदा के फ़ज्ल से आराम हुआ समझिये। जब तक मरज़ की तशखीस:०: नहीं होती इलाज से कोई फायदा न होगा।

यह सुन कर दारोग़ा ने कहा—जनाब हकीम साहब, हमसे पूरा-पूरा हाल सुनिये। जब बेगम साहब के पहले शौहर न रहे, और उन्होंने दूसरा निकाह कर लिया, तो उनके दूसरे शौहर ने इन साहबज़ादे को निकाल दिया और मैंने इसकी परवरिश की। जिस ढ्योढ़ी की दारोग़गी पर मुक़र्रर था, उनकी एक लड़की थी; बड़ी खूबसूरत। नवाब ने इस लड़की को पढ़ाने के लिये एक बूढ़ा मौलवी नौकर रखा था। और यह लड़का भी वहाँ पढ़ने लगा। जब लड़की ज़रा सयानी हुई, तो इन साहबज़ादे से पर्दा कराने लगे। मगर दोनों के दिल को यह रोक-टोक बहुत अखरी। और कोठे से झरोखे से, इधर से, उधर से, इशारेबाज़ियाँ होने लगीं। मगर पाक मोहब्बत। बदी का खयाल न था। बचपने के दिन। धीरे-धीरे मोहब्बत बढ़ती गई और अब इश्क़ का दर्जा हो गया। नवाब ने जो यह हालत देखी तो मुझे और उस लड़के को निकाल दिया, और क़सम खाके कहा कि अगर फिर इस शहर में देखा तो मरवा ही डालूँगा। ज़िन्दा न छोड़ूँगा। हम दोनों को भागना पड़ा। ग़रज़ यह कि क़िस्मत ने यहाँ तक पहुँचाया। बात को तूल कौन दे: माँ ने बेटे और बेटे ने माँ को पाया। खुशी के शादियाने बजने लगे। मगर लड़का, बावजूद धन-दौलत, जायदाद और इलाक़ा वग़ैरह सब कुछ होने के, खुश नहीं। परेशान, हैरान, बुत बना हुआ। सोने का लुक़मा खिलाओ तो वही बात, और जौ की रोटी खिलाओ तो वही बात। सावन हरे न भादों सूखे। मोहब्बत तो बहुतों को होती है। मगर इनकी सी मोहब्बत न देखी, न सुनी। घंटों रोया करता है, और जबसे इनकी वालदा ने कहा है कि खान्दान की एक लड़की के साथ तुम्हारा निकाह होगा, तबसे जो बीमारी ने घेरा, तो ग़ज़ब ही हो गया। और अब तो हालत बहुत ही खराब है। खुदा ही खैर करे। यों तो दुनिया उम्मीद पर क़ायम है; मगर हमको मायूसी सी होती जाती है।

जब दारोग़ा ने अपनी बात खतम की तो हिन्दू दोस्त ने कहा—मुझे शहर भेजा था, और बड़ी खुशामद की थी कि पता लगाओ। मालूम हुआ कि उस लड़की की हालत और भी खराब है। उसके माँ-बाप ने उसको किसी बाग़ में भेजा है, कि शायद आबो-हवा की तब्दीली से मिज़ाज सही हो। मगर वहाँ

:०: निदान।

और भी वदतर हाल हुआ। सुना कि 'पी कहाँ! पी कहाँ!' की आवाज़ लगाती है, और चौ-तरफ़ा पी को ढूंढ़ती फिरती है; और पी इधर उसकी जुदाई में घुले जाते हैं।

हकीम साहव और दीवान जी और दारोग़ा ने पूछा—वह वाग़ कहाँ है? कहा—मुझ से साहवज़ादे ने नहीं वताया। उस लड़की की कोका की लड़की है—शायद 'फ़ैज़न' नाम है,—उसकी एक रिश्तेदारन ने हमसे वयान किया। मगर जगह का नाम नहीं वताया। या तो छिपाया, या जानती न हो। मगर जानती ज़रूर होगी।

दारोग़ा ने कहा—मैं फ़ैज़न के सारे रिश्तेदारों को जानता हूँ। अच्छा, मुझे पता लगाने दीजिए। उनके रिश्तेदारों से, ख़ास कर उसके वाप से, साफ़-साफ़ कहा जायगा, कि जो वात आप समझे थे, वह नहीं है।—वह समझे थे कि यह लड़का मेरा है। दस-वारह रुपए महीने के दारोग़ा के लड़के को अपनी साहवज़ादी वेटी क्यों दूं! इसी सवव से मुझे भी निकाल दिया और लड़के को भी। अव उनसे कहा जायगा, कि यह लड़का हमारा नहीं है। एक वड़ा नामी ताल्लुक़ेदार है; आपसे हैसियत और आमदनी में कहीं ज़्यादा; इज़्ज़त और आवरू में कहीं ज़्यादा। और दोनों को आपस में इश्क़। इधर आपकी साहवज़ादी कुढ़ती हैं, उधर लड़का। यह भी साफ़-साफ़ कह दिया जायगा, कि लड़का, ख़ुदा-न-ख़ास्ता, जान दे देगा। हालत नाज़ुक है। हकीमों और डाक्टरों ने जवाव दे दिया। अगर दोनों एक दूसरे को देखें, तो अजव नहीं कि जी जायँ, वल्कि यक़ीनी। मुझे पूरा यक़ीन है कि जी जायँ। दोवारा ज़िन्दगी हो जाय।

हकीम साहव यह सव सुनके खुश हुए। कहा कि—अगर उस लड़की के वाप को यही ख़याल था कि एक छोटे-से आदमी के लड़के के साथ लड़की का निकाह क्यों हो; किसी ऊँचे घर में क्यों न दूँ; तो अव वह वात हासिल है। चलो वस छुट्टी हुई!—ये हैं कौन?

दारोग़ा ने कहा—मियाँ जोश की चढ़ाई पर वह जो टीले पर वूढ़े नवाव रहते हैं, जो आसमानी नवाव कहलाते हैं—चढ़ाई पर टीला और टीले पर वँगला—उन्हीं की लड़की है।

हकीम साहव ने कहा—अख्खाह! यह कैसे हम समझ गये! मैंने तो उस लड़की का इलाज किया है: नूरजहाँ वेगम नाम है। उसके वाप के पास आप भी चलिये और मैं भी चलूं। मैं समझा लूँगा।

दारोग़ा ने पूछा—लड़की का हाल तो मुझे नहीं मालूम; मगर हाँ, इस अपने वेचारे का हाल तो अच्छा नहीं है। साफ़-साफ़ तो यों है, कि वचना मुश्किल है। मगर, हाँ, अगर आसमानी नवाव राज़ी हो जायँ, तो कोशिश का कुछ नतीजा निकले। वस, अव देर न कीजिए और चलिए। चाहे वावू साहव को भी ले चलिये।

हिन्दू दोस्त ने कहा—मुझे इन्हींके पास छोड़ जाइये।

हकीम साहब और दीवान जी ने बेगम साहब को इत्तला दी कि, अस्ल मरज़ यह है। बेगम ने कहा—मैं तो इनकी वहशत और बेचैनी से समझ गई थी कि कुछ यही हेर-फेर है। बल्कि कांजीमल से कहा भी था, कि डाक्टर साहब से, हकीम साहब से यह भी कहो। मगर इस मुए दारोग़ा को तो देखो, कि सब जानता था और नहीं बताता था। नहीं तो बात इतनी बढ़ने काहे को पाती! अच्छा, अब जो हुआ, वह हुआ। अब आप लोग कोशिश करें।

हकीम—कोशिश क्या माने: उनको मजबूर करेंगे। उनकी लड़की की हालत भी तो अबतर है।

दीवानजी—हकीम साहब दारोग़ा को लेकर जाते हैं। उस लड़की के बाप को समझाएँगे। मियाँ जोश की चढ़ाई पर रहते हैं।

बेगम—उन्हीं की लड़की है? वह आसमानी नवाब? अल्ला-अल्ला? अब वह इतने हुए कि हमारे साहबजादे को नापसन्द करें! ख़ुदा की शान!

हकीम—आप समझीं नहीं। उनको क्या मालूम था कि किसका लड़का है; कौन है कौन। वह समझते थे कि हमारे दारोग़ा का लड़का है। उसको मुलाज़िम का लड़का समझकर टाल दिया। यह क्या मालूम था कि राजा है, और ताल्लुक़ेदार का लड़का। अगर यह मालूम होता, तो अब तक निकाह कबका हो चुका होता। वह तो अपने आपको बड़ा ख़ुशनसीब समझते। लड़के को ख़ानादामाद* कर लेते।

बेगम—यह तो बड़ी ख़ुशख़बरी सुनी। तो अब अगर उनसे कहा जाय, तो फ़ौरन मंज़ूर कर लें! यह तो मुझे अब मालूम हुआ, कि यह गुत्थियाँ पड़ी हुई हैं। जभी हमारा बच्चा कुढ़-कुढ़ के घुला जाता है। फिर अब हम पैग़ाम भिजवाएँ!

हकीम—मैं दारोग़ा साहब को लेकर ख़ुद जाता हूँ।

बेगम—तो मैं भैया से जाके कह दूँ कि जो बात तुम चाहते थे वह पूरी हो गई।

हकीम—ना: अभी नहीं। साईं के सौ खेल! अभी पक्की-पोढ़ी हो ले! जाके इतना कह दीजिए कि परसों-नरसों तक हम कोई ख़ुशख़बरी सुनायेंगे। मियाँ-जोशकी-चढ़ाई वाली बात। बस इतना कह दीजिए।

यह कह कर हकीम साहब और दीवानजी रुख़सत हुए। बेगम ने जाके लड़के को तसल्ली-भरी बातें सुनाईं।

उधर हकीम साहब दारोग़ा साहब को लेकर और हाथी पर सवार होकर मियाँ-जोशकी-चढ़ाई पर चढ़ाई करने चले।

---

*घर-जमाई।

आठवीं हूक

अब इधर का हाल सुनिये कि नूरजहाँ बेगम की माँ और बहन उसी जंगल के बाग़ में साहबजादी की तसल्ली और हिफ़ाज़त और इलाज और निगरानी के लिये टिके रहे। पहलेपहल तो नूरजहाँ बेगम लिहाज़ के मारे दिल ही दिल में 'पी कहाँ! पी कहाँ!' कह कर दिल को ज़रा-ज़रा ढारस व दिलासा देती थी, कि ऐसा न हो कि ये लोग यह आवाज सुन कर अपने दिल में कहें कि लड़की हाथ से जाती रही—बिलकुल बदलिहाज़ हो गई: कल की छोकरी और हमारे सामने यह बदलिहाज़ी! लेकिन जब जनून ने और ज्यादा ज़ोर किया, और सब्र का दामन हाथ से छूटने लगा,—तो शर्म बिला-इजाज़त ग़ायब-गुल्ला: किसका लिहाज़ और किसका ख़याल, और किसकी शर्म और किसका पर्दा। ये सब बातें और ख़याल तो होश के साथ होते हैं। अब यह खुले-बन्दों शोर मचा-मचा के पी को ढूँढ़ने लगी—'पी कहाँ! पी कहाँ!' किसी की शर्म, न लिहाज़; बिलकुल दीवानी हो गई। पिंजड़ा हाथ में ले लिया और बाग़ में गश्त करने लगी। पी कहाँ! पी कहाँ! हर दरख़्त, हर दर-दीवार, हर रविश और क्यारी, हर नहर, हर जड़ी-बूटी और पत्ते से पूछती थी: 'पी कहाँ!' माँ-बहन रोया करती थीं। बहनोई बहुत ही रंजीदा। नौकर-चाकर सब ग़म से उदास—कि इस सिन् में यह कौन बीमारी पैदा हो गई, जिसका इलाज ही नहीं। नवाब दूल्हा ने शहर से हकीम साहब को बुलवाया। तीन दिन तक हकीम साहब मरज़ की अटकल लिया किये; और इलाज शुरू कर दिया। शहर से कई अरक़ खिचवाके मँगवाए, और ये सब दवाएँ नामी अत्तारों की दूकान से आती थीं। इलाज में कोई कोर-कसर नहीं रखी गई। हकीम साहब ने जान लड़ा दी। मगर—

मरज़ बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की!

जब बिलकुल मजबूर हो गये तो हकीम साहब ने कहा—हज़रत अब किसी अच्छे डाक्टर से भी सलाह लीजिए। हमारे नज़दीक तो इनकी बीमारी दो हालतों से खाली नहीं। या तो किसी का साया है; या किसी पर इस साहबज़ादी का (आहिस्ता से) दिल आया है।

ये मायूसी के लफ़्ज सुन कर नवाब दूल्हा को और भी रंज हुआ, कि हकीम साहब ने साफ़-साफ़ जवाब दे दिया और ख़ुद सलाह दी कि अब डाक्टर को दिखलाइये। इनके नज़दीक यह कोई मरज़ नहीं है। या तो किसी भूत-परेत का साया है—किसी झाड़ने-फूंकनेवाले या आमिल को बुलाएँ; या किसी से आँख लड़

गई है—उसको ढूंढ़ निकालें। बीवी से जाके उन्होंने कहा—लो साहब, अब तो लड़की की तरफ़ से पूरी मायूसी हो गई। बीवी ने पूछा—क्यों, क्यों? ख़ैर तो?

नवाब—ख़ैर कहाँ है। हकीम साहब ने जवाब दे दिया। उनकी राय है कि डाक्टर को दिखाओ; या झाड़-फूंक हो! और एक बात और भी बेतुकी-सी कही, कि मालूम होता है, यह साहबज़ादी किसी पर आशिक़ हैं। उसके इश्क़ ने यह हालत पहुँचाई और यह नौबत आई; अब इनका इलाज करना फ़ज़ूल है।

बेगम—यह बात सही है।—किसी से कहना नहीं। वह जो मुआ दारोग़ा उनके यहाँ था, उसके लड़के निगोड़े पर इसकी जान जाती थी, और इसी सबब से यह तबाही दुश्मनों के हाल पर पड़ी। यह बात उसने ठीक कही। यह बिजोग है।

और वह लड़का है कहाँ?

क्या जाने मुआ कहाँ गया!

वह दारोग़ा तो शरीफ़ज़ादा है। अच्छे ख़ान्दान से है। बारहे का सैयद, रसूल की औलाद। लड़का भी पढ़ा-लिखा था, और बहुत ख़ूबसूरत। जब यह हालत हो गई, तो हमारे देखने में इससे तो बेहतर यही है कि इसी के साथ निकाह हो जाय। कोई जुलाहा या कबड़िया नहीं है....और जो लड़की की जान जाती रही! उस लड़के का कहीं पता लगाना चाहिए। हम बड़े नवाब को बुलवाते हैं।

जो सलाह हो वह करो। हमको अंगारों पर समझो! अल्लाह का दिया सूखी रोटी का टुकड़ा मैके-सुसराल दोनों में बहुत है; और उसको देके खायँ। मगर यह बैठे-बिठाये मुसीबत कहाँ से सर पर पड़ गई। इसका क्या इलाज है? अब्बाजान को ज़रूर बुलवाओ। अब यह बीमारी खेल नहीं है। रोज़बरोज़ बढ़ती जाती है।

नवाब दूल्हा ने उसी दम अपने ससुर के नाम ख़त लिखा, जिसमें उन्हें बताया कि मरीज़ की हालत अब यहाँ तक पहुंच गई है कि जनाब हकीम साहब ने जवाब दे दिया। उनकी राय है कि किसी अच्छे डाक्टर को दिखलाइये। वह कहते हैं कि यह कोई बीमारी नहीं है। या तो इन पर किसी का साया पड़ा है, या किसी पर इनका दिल आया है। गुज़ारिश यह है कि आप फ़ौरन् डाक्टर साहब को लेकर रवाना हूजिये। अगर होम्योपैथिक डाक्टर को लाइये तो दवाओं का बक्स उनके साथ ज़रूर होगा, और अगर एलोपैथिक हों तो ज़रूरी दवाएँ लेते आयें। सबकी यही राय है कि आप यहाँ चले आइये। तबीअत की हालत बहुत ही नाज़ुक है। बहरहाल ख़ुदा का भरोसा रखना चाहिये। बड़ी बेगम साहब दिन-रात रोया करती हैं; क्योंकि मरीज़ा की बीमारी ने अब पागलपन की शक्ल ले ली है। अफ़सोस। मगर जो मर्ज़ी-ए-ख़ुदा!

यह ख़त पढ़ते ही नवाब साहब ने डाक्टर साहब को साथ लिया और पाल्की-गाड़ी पर रवाना हुए। पहुँचे, तो कुल हाल सुना। डाक्टर साहब ने मरीज़ा को देखा। पूछा, दिल का क्या हाल है? जवाब—पी कहाँ! पूछा—

ज़रा आप हमारे सवाल का जवाब दे सकती हैं? जवाब—पी कहाँ! थोड़ी देर के बाद डाक्टर ने फिर कहा—अच्छा मिज़ाज का हाल खुलासा बताइये। जवाब—पी कहाँ! पी कहाँ! पी कहाँ! डाक्टर खामोश हो रहा।

हकीम साहब ने कुछ देर के बाद उससे कहा—ज़रा नब्ज़ दिखाइये। और वह लड़की खड़ी होकर चिल्लाने लगी—पी कहाँ! पी कहाँ! सब लोग खामोश और उदास; जैसे काग़ज़ की तस्वीरें हों।

जब डाक्टर साहब को अलैहदा ले गये, तो सलाह-मशविरा होने लगा। और आखिरकार यही राय तय पाई कि कोई बहुत सख्त सदमा पहुँचा है; जिसके सबब से दिमाग़ सही नहीं रहा और सारा जिस्म निढाल और बेक़ाबू हो गया है। नवाब और नज़ीर बेगम और क़रीब-क़रीब घर-भर को इस बीमारी का कारन मालूम था। मगर मुँह से नहीं निकालते थे, कि बदनामी की बात है: कि रईस शरीफ़ की लड़की, और इश्क! बहू-बेटियों को इश्क़बाज़ी से क्या काम! मगर नज़ीर बेगम के दूल्हा को इसका हाल नहीं मालूम था; अब उनको भी मालूम हो गया। रात को नवाब दूल्हा और बड़े नवाब में सलाह हुई और बड़ी रद्दो-बदल के बाद बड़ी बेगम और नज़ीर बेगम बुलवाई गईं, और सबकी सलाह से यह तय हुआ कि उस लड़के की तलाश चारों तरफ़ की जाय और उसी के साथ निकाह हो, ताकि लड़की की जान बचे। गो ग़रीब का लड़का है, हमको या हमारी लड़की को रुपये की कौन कमी है। अब यह फ़िक्र हुई कि वह लड़का मिले, और बड़ी कोशिश की जाय कि मिल जाय।

दूसरे रोज़ यह लड़की पी कहाँ! पी कहाँ! कह रही थी कि महरी ने आनकर नवाब साहब से कहा कि दो-एक साहब हाथी पर सवार बाग़ के फाटक पर खड़े हैं और हुज़ूर से मिलना चाहते हैं। नवाब के कान खड़े हुए। यहाँ कौन आया है, भई, और फिर हाथी की सवारी पर। नवाब दूल्हा को बुलवाओ! ये अपनी बीबी से उनके कमरे में बातें कर रहे थे, कि उनको इत्तला हुई; दोनों बाहर आये। नवाब के पास दामाद ने जाकर कहा—इरशाद! उन्होंने हाल बताया। यह बाग़ के बाहर आये और हाथी की दोनों सवारियों को देख कर खुश हुए। फ़ीलवान ने 'बिरी' कह कर हाथी को बिठाया। पहले एक साहब उतरे। दूसरे साहब भी उतरने ही को थे कि हाथी उठने लगा, और फ़ीलवान ने फिर 'बिरी' कह कर बिठाया। पहले साहब तो कूद पड़े, और दूसरे साहब के लिये ज़ीना लगाया गया। यह भी उतरे।

हकीम साहब और दारोग़ा जी कुर्सियों पर बैठे। अन्दर से मामा खासदान लाई, हुक्का लाई। नवाब साहब आये।

नवाब—(दोनों से गले मिल कर) जनाब हकीम साहब की अर्से के बाद आज ज़ियारत हुई। मिज़ाज शरीफ़। कहिये दारोग़ा साहब, खैरियत है?

दारोग़ा—हज़ूर, ख़ैरियत तो नहीं है।

नवाव—क्यों, क्यों, साहवज़ादा आपका कहाँ है?

हकीम—इनका साहवज़ादा कैसा?—इनके वापके भी साहवज़ादा था? वह लड़का तो ताल्लुक़ेदार है।

कुल हाल वयान किया।

नवाव साहव दंग हो गये, और लड़की की वेचैनी का हाल कहा। दारोगा और नवाव और हकीम और नवाव दूल्हा, सव खुश। अन्दर-वाहर घर-भर में ख़ुशियाँ।

पहले तो नूरजहाँ वेगम की माँ को इस वात का यक़ीन न आया। कहा, यह हमारे खुश करने को तसल्ली दी जाती है। मगर इस भोंडी और झूठी वात से भला कव तसल्ली हो सकती है? ऐसी क़िस्मत हमारी कहाँ! नज़ीर वेगम को भी यक़ीन न आया। मगर इनके मियाँ कभी झूठ नहीं वोलते थे, इस सवव से उन्होंने अपनी माँ को तसल्ली दी कि, अम्मीजान यह खवर झूठ नहीं हो सकती। कभी हमसे झूठ नहीं वोला जाता है। झूठ से हमको नफ़रत है। अच्छा महरी से पूछिये, मामा से दरियाफ्त कीजिए। हाथ कंगन को आरसी क्या है।

महरी ने कहा, वह मुए दारोग़ा आए हैं। और वह हकीम है जिन्होंने वीवी का इलाज किया था। मामा सिर्फ दारोग़ा को पहचानती थीं। दोनों गवाही में पूरी उतरीं। नवाव दूल्हा से क़समें दे-देकर वड़ी वेगम ने पूछा—वेटा, मुझे अपनी सास न समझो, अपनी माँ समझो। मैं तो तुमको दामाद नहीं, अपना वेटा समझती हूँ। नवाव दूल्हा ने तसल्ली दी, और कहा—खुदा को अच्छा ही करना मंजूर है।

इतने में दरख़्त से आवाज़ आई—पी कहाँ! और फ़ैज़न ने साहवज़ादी से कहा—हमारी सलाह मानिये, तो अव इस पपीहे को आज़ाद कीजिए। जिस तरह आपने यह खुशख़वरी इतनी मुद्दत के वाद सुनी, उसी तरह इसको भी खुश कर दीजिए। और सच्ची वात यह है—कि दोनो नर-मादा कोसते होंगे कि किस ज़ालिम ने हम पर यह इतना वड़ा ज़ुल्म ढाया कि नर को मादा और मादा को नर की ख़वर ही नहीं। एक आसमान पर, दूसरा पाताल में।

वेगम—मैं खुश, मेरा खुदा खुश।

नज़ीर—अरे हां, छोड़ दो वेचारे को। मियां-वीवी फिर मिल जायें!

फ़ैज़न—हमारी तो यही सलाह है।

प्यारी—सरकार, सैकड़ों दुआएँ देंगे। क्या इनके जान नहीं है?

सितारन—कैसी हूक उनके दिल से उठती है!

वेगम—अरे, वरसों का साथ होगा!

ख़वास—हमें वड़ा तरस आता है!

नज़ीर—तरस की वात ही है।

इतने में नूरजहाँ वेगम उठीं और पिंजरा खोल कर कहा—उड़ जा! और पपीहा निकल के फ़ुर्र से उड़ गया। नर और मादा की जोड़ी फिर एक हो गई; और इतने दिन के विछुड़े हुए मिले।

नवाव साहव ने अपने दोनो मेहमानों की वड़ी खातिर की। अन्दर मामा ने नज़ीर वेगम की निगरानी में खाना पकाया—मुर्ग़ और वटेर और तीतर और हिरन और हरियल और मछली और वकरी का गोश्त—सात क़िस्म के जानवरों का गोश्त पका था। दो तरह का नमकीन पुलाव; एक किस्म का मीठा मुजस्सिम मुर्ग़ का कवाव। मछली दफ़ना के पकाई गई थी—कई क़िस्म के मसाले पड़े हुए; काँटे सव गल गये थे। वैंगन का डलमा इस कारीगरी से पका था, कि देखने से कच्चे वैंगन मालूम होते थे—कि अभी-अभी खेत से तोड़ के वैंगन आये हैं।—और तराशिये तो वह खुशवू कि दिमाग़ तर हो जाय, और खाइये तो सारी खुदाई का खाना भूल जाइये।

नूरजहाँ को कुछ-कुछ तो यक़ीन आता था। मगर कभी-कभी वह सोचती थीं कि सपने की-सी वातें मालूम होती हैं। फ़ैज़न को अलैहदा ले जाकर कहा—फ़ैज़न तुम्हारी क्या राय है? यह वातें सव क्या सुन रही हो। अगर यह सव सच है, तो फिर तो मारे खुशी के मेरी जान ही निकल जायगी। मैं खूव जानती हूँ कि मैं सपना नहीं देख रही हूँ; जागती हूँ। लेकिन यह खवर ऐसी है कि यक़ीन कम आता है। अन्वा जव पतियाए जव आँखें पायें। यह मुमकिन है कि उन्होंने मेरी तसल्ली के लिये दारोग़ा को वुला लिया हो, और उसको कुछ ले-दे के अपनी तरफ कर लिया हो। मेरी अच्छी फ़ैज़न, इसकी टोह लो!

अव मैं साफ-साफ वता दूँ, वह लड़का दारोग़ा जी का नहीं है; वह ताल्लुक़ेदार का लड़का है; कोई राजा का। राजा जव मर गया, तो रानी ने अपने देवर से निकाह किया। उस देवर ने रानी को वेदखल कर दिया, और भाई के लड़के को निकाल दिया और सोलहों आने का मालिक वन वैठा। अव वह भी जाता रहा। तव रानी ने लड़के की तलाश की। वड़े नवाव तो दारोग़ा जी और लड़के को निकाल ही चुके थे। लोगों से खोज लगाके लड़के को ढूँढ़ा। रानी ने इन लोगों को हज़ार-हज़ार रुपया दिया। लड़का अव राजा हो गया। मगर आपकी जुदाई से उनके दुश्मनों की वुरी हालत है। यह जो हकीम आये हैं, यही राजा का इलाज करते हैं। दारोग़ाजी को लेके यहाँ आये हैं। अव लीजिये, एक ही अठवारे के अन्दर जाकर अपने प्यारे से मिलिये।

नूरजहाँ वहुत ही खुश हुई। जामे में फूली नहीं समाती। दिल का अजव हाल था। अगर कारूँ का खज़ाना और तमाम दुनिया की सलतनत मिल जाती तो भी उस पर लात मारती। वह सव एक तरफ़ और वह और उसका प्यारा एक तरफ़

प्यारी—सरकार मुबारक, वह भारी जोड़ा लूँगी कि बादशाहज़ादियों, वज़ीरज़ादियों ने भी न पहना हो।

फ़ैज़न—बेशक, बेशक। इससे बढ़के और ख़ुशी क्या होगी!

सितारन—दारोग़ा जी बड़े ख़ुश हैं। मैं चाय लेके गई थी, ना। कहने लगे, तुम भी चलोगी? हमने कहा—जी हाँ!

फ़ैज़न—चलेंगे कहाँ?

सितारन—ए तुमको बसन्त की कुछ ख़बर ही नहीं। चलेंगे कहाँ की अच्छी कही! सारा घर भर जायगा।

प्यारी—क्या लड़की को वहाँ ले जायँगे? यह कौन दस्तूर है भला?

सितारन—ए बहन, सुना तो यों ही है।

नूर—यह क्या बात है, फ़ैज़न?

फ़ैज़न—नई बात सुनी।

इतने में फ़ैज़न ने नज़ीर बेगम से दरयाफ़्त किया। नज़ीर बेगम ने अलैहदा ले जाकर कहा—सितारन ठीक कहती है। उस लड़के की तबीअत बहुत बिगड़ गई है। नूरजहाँ से—ख़बरदार—ख़बरदार!—न कहना। हकीमों ने जवाब दे दिया है। अल्लाह अपना फ़ज़ल करे। मगर हकीम की राय है कि नूरजहाँ के देखते ही अच्छे हो जायँगे। क्योंकि यही बीमारी है; और इस बीमारी का इलाज यही है कि नूरजहाँ से मिलें। और इधर नूरजहाँ की वहशत भी जाती रहेगी।

फ़ैज़न—ए अब जाती ही है। मगर एक बात तो सुनो। क्या वह साहबज़ादा अब यहाँ तक आने के भी क़ाबिल नहीं।

नज़ीर—नहीं।

फ़ैज़न—तो यहाँ से कौन-कौन जायगा?

नज़ीर—सारा घर-भर। कुल क़ाफ़ला रवाना होगा। नादिरजहाँ बेगम को बुलवाया है। नादिरजहाँ बेगम नज़ीर बेगम की छोटी बहन का नाम था। यह नूरजहाँ की हमजोली थी, और साल भर उसकी शादी को हुआ था। फ़ैज़न ने नूरजहाँ से कहा—सब मामला लैस है। अब आप ज़रा न घबराइये। घबराने की कोई बात नहीं है। वहाँ इस वजह से चलना होगा कि बड़ी रानी उस लड़के को अब दम-भर भी अपने पास से जुदा नहीं करती हैं। कई बार ग़श आ गया। और बीमार हो-हो गये। जब उन्होंने दारोग़ा और हकीम साहब को रवाना किया और कहला भेजा कि अगर हमारे बच्चे की जान लेना न मंज़ूर हो, तो जल्द निकाह हो जाय।

नूर—फ़ैज़न, तुम्हारा वह पंडित बड़ा सच्चा निकला।

फ़ैज़न—हाँ, हुज़ूर बड़ी पक्की बात बताता है। उसने जो कहा, वही हुआ। जुमेरात या मंगल के दिन बताता है। नहा-धोके, पाक-साफ़ होके आता है,

और विना स्नान-पूजा किये, हाथ नहीं देखता। हाल सुनता है। उससे हमने पूछा। पहले उसने नाम पूछा, फिर हाल पूछा। फिर मुझसे कहा, कोई फूल अपने दिल में ले लो। हमने फूल दिल में लिया; चम्वेली का फूल। ए वस, कुछ पढ़ के, और कुछ हिसाव करके तड़ से वता दिया: सफ़ेद फूल लिया है। और हमसे कहा—जल्द मतलव हासिल हो जायगा।

नूर—वाहरे पंडित—वाम्हन है?

फ़ैज़न—हाँ, वाम्हन है, वड़ा नामी पंडित।

नूर—इनाम का काम किया है।

ये वातें होती थीं कि नवाव-दूल्हा अन्दर आये और वड़ी वेगम से वातें करने लगे। नूरजहाँ ने उनकी वातें वड़े ग़ौर से सुनीं। खूव दिल लगा के। और हर फ़िक़रे, हर जुमले, हर वात पर वाछें खिली जाती थीं। फ़ैज़न तो वेहद ही खुश। प्यारी भी खुशी से खिली हुई। सितारन जामे में फूली नहीं समाती थी। दुलारी को गोया लाखों रुपये मिल गये थे। घर में खुशी के शादियाने वजते थे। अभी-अभी सवके सव रंज में भरे हुए थे: किसी को चैन नहीं; नूरजहाँ की तवीअत दम-वदम वदतर होती जाती थी, और वदतर क्या माने, यों कहना चाहिये कि जनून जोश पर था, दीवानी हो गई थी और अच्छे होने की उम्मीद क़रीव-क़रीव खत्म।—मगर मिज़ाज ने एकाएक पलटा खाया। ग़म के लश्कर को खुशी की फ़ौज ने भगा दिया—रंज की पल्टनें उखड़ गईं; खुशी और चैन की अमलदारी हुई।

यहाँ से एक साँडनी सवार दौड़ाया गया कि राजा राहतहुसैन से जाकर कहे कि हकीम साहव और दारोग़ाजी, मय क़ाफ़ले के आते हैं, और जिनके सवव से आपके दुश्मनों की तवीअत कमज़ोर हो गई है, उनको भी साथ लाते हैं। इसी हफ़्ते में निकाह की रस्म पूरी होगी; इत्मीनान रखिये। हम सव कल ही दाखिल हो जायँगे।

साँडनी सवार यह खत लेकर रवाना हुआ, और इधर नूरजहाँ वेगम ने नज़ीर वेगम के साथ मुद्दत-वाद खाना खाया। अव तक दिल की वहशत और जनून की वजह से न खाना वक़्त से खाती थीं और न भूख लगती थी, और न खाने में लुत्फ़ था। अपने आपे ही में न थीं, खाना कैसा! आज अलवत्ता पेट भर के खाना खाया, और खाना भी तकल्लुफ़ी और मज़ेदार था, और हँस-हँस के खाया। वात-वात में शोखी। न पी कहाँ की पुकार, न आँसू, न वेक़रारी। आँखों में पहले से भी ज़्यादा नूर आ गया। सव कमज़ोरी जाती रही। दिल का अजव हाल था। ज़रा क़ावू से और जाता रहे, तो वाक़ई खुशी के मारे दम निकल जाय। जव खाने-पीने से छुट्टी पाई, तो फ़ैज़न से कहा—चुपके से किसी वहाने से वाहर जाके दारोग़ा साहव से कहो कि पूछती हैं—मिज़ाज

कैसा है? अब तो कोई रुकावट न होगी? निकाह पर उनकी माँ राज़ी हैं, या अभी कुछ आगा-पीछा सोच रही हैं। कहना—ख़ुदा को दरम्यान में रख कर और क़ुरान की क़सम खाकर सच्चा हाल कहें।

फ़ैज़न ने चुपके से नज़ीर बेगम से कहा—तुम बाग़ में जाके ज़री देर ठहरो। और ऊपर ख़ुश-ख़ुश आके, अलग ले जाके, कहा, कि दारोगा कहते हैं कि जब हम लोग रवाना हुए कि इनको ले जायँ, और जब से उनको पूरा-पूरा यक़ीन हो गया है कि दिल की मुराद जल्द पूरी होगी, तब से बड़ी ख़ुश हैं और नौकरों को अभी से भरपूर इनाम दिये; और जोड़े झड़ाझड़ बन रहे हैं। नौबत अभी से बिठा दी है। उसकी टकोर दूर तक जाती है। गोरे बुलवाए हैं और अँग्रेज़ी बाजा बजेगा। साहब लोगों की दावत की है।.....यही सब बातें कहना।.......

फ़ैज़न बाग़ में गई। सितारन से गेंद-धड़क्का खेला। आपस में चुहल हुई।

सितारन—तख़्त की रात को ज़री ख़ूब निखरना!

फ़ैज़न—यह क्यों! तख़्त की रात को दुल्हन को निखरना चाहिये कि हमको!

सितारन—शायद, पलंग की.....

फ़ैज़न—(आहिस्ता से थप्पड़ लगाकर, मुस्करा कर) कुतिया कहीं की!

सितारन—ओ हो! दिल में तो खिल गई होगी!

फ़ैज़न—हम अपनी ख़िदमत तुम्हारे सुपुर्द कर देंगे।

सितारन—हमारा वहाँ कौन काम?

फ़ैज़न—किसे उम्मीद थी सितारन, कि ख़ुदा यह दिन दिखायेगा!

सितारन—तोबा करो बहन!

फ़ैज़न—मगर इसमें शक नहीं कि अल्ला रक्खे चाँद-सूरज की जोड़ी है।

सितारन—अ हा हा हा! क्या चाँद और क्या सूरज—तुमको चूम लेने तक का तो हक़ है!

फ़ैज़न—तुम्हीं.....जाके!

सितारन—यह इतना बिगड़ती क्यों हो? (मुस्करा कर) और दिल में ख़ुश होती होगी कि हम भी इतने हुए!

फ़ैज़न—इतने हुए क्या माने! कुछ मैं बुढ़िया-सिढ़िया हूँ—या कोई कानी-लुतरी हूँ। सूबेदार का लड़का कैसा लट्टू था! गावँ-गिरावँ लिखे देता था!

सितारन—अक़्ल की दुश्मन हो!

फ़ैज़न—अरी सितारन! अल्लाह को देना होगा तो यों ही देगा।

सितारन—अच्छा, ले अब तुम जाओ; वह बड़ा इन्तज़ार कर रही होंगी।

फ़ैज़न बहुत ही ख़ुश कोठे पर गई, और इशारे से नूरजहाँ बेगम को बुलाया।

फ़ैज़न—यहाँ तो बड़ी-बड़ी तैयारियाँ हो रही हैं।

नूर—(खुश होकर) हाँ! क्या?

फ़ैज़न—साहब लोगों की दावत होगी। कलकत्ते से अंग्रेज़ बावर्ची बुलाए गये हैं। गोरों का बाजा होगा। नौबत बिठाई गई है।

नूर—अभी से! अमीर तो हैं ही।

फ़ैज़न—बड़ी बी अपनी हवस निकालेंगी। एक बेटा है, उसकी शादी में सभी अरमान निकालेंगी। भारी-भारी जोड़े अभी से तैयार हो रहे हैं। एक से एक बढ़िया। हाथियों के वास्ते गंगा-जमनी हौदे चाँदी-सोने के बन रहे हैं। दारोग़ाजी ने कहा कि सब सामान लैस है।

ग़रज़ यह कि नूरजहाँ के खुश करने और तसल्ली देने के लिये नज़ीर बेगम ने दस झूठी बातें कही थीं तो बी फ़ैज़न ने तर्रारी के साथ निन्नानवे उससे और बढ़-चढ़ के कहीं। और नतीजा यह हुआ कि नूरजहाँ अपना पिछला सारा रंज इस तरह भूल गईं कि जैसे रंज कभी हुआ ही न था।

नवीं हूक

है दुनिया दुरंगी मकारा-सराय
कहीं खूब-खूबाँ, कहीं हाय-हाय

दुनिया के यही माने हैं। गो यह शेर भदेसल है, मगर क़दर के क़ाबिल है। कितना सच्चा मज़मून है! दुनिया और दुनियावालों की दोरंगी ज़ाहिर है। मुँह पर कुछ, पीठ-पीछे कुछ। मकारा-सराय के यह मानी, कि मकर की जगह: मकर और ज़ोर-ज़बरदस्ती से भरी हुई। दूसरे मिस्रे के मज़मून से कौन इनकार कर सकता है। कोई हँस रहा है, तो कोई रो रहा है। किसी की बरात धूम-धाम से ससुराल जाती है, किसी का जनाज़ा लोग क़ब्रिस्तान लिये जाते हैं। एक के-हाँ खुशी के शादियाने बजते हैं, दूसरे के यहाँ कुहराम मचा हुआ है। नूरजहाँ बेगम पोतड़ों की रईसा—जिस दिन पैदा हुई थीं मियाँ-जोश की-चढ़ाई पर घर-घर खुशी हुई थी। एक हफ़्ते तक तोरे-बन्दी, दस रोज़ तक नाच-रंग। जब लड़की बड़ी हुई तो घर भर की पुतलियों का तारा; बच्चा, सब की जान से प्यारा। आसमान के तारे और चिड़िया का दूध भी माँगती तो माँ-बाप लाकर मौजूद कर देते।

एक दिन मचल गई कि चाँद से खेलूँगी। बच्चे की हठ भी राजहठ और तिरियाहठ की तरह मशहूर है।—अब किसी का कहना नहीं मानती! उसकी माँ

उसको कोठरी में ले गई, और एक जुगनू पकड़वा के दिखा दिया। उसकी रोशनी को यह चाँद समझी। जब जाके कहीं रोना ख़त्म किया और हिचकियाँ बन्द हुईं। अब की फिर पलटा खाया, और नौबत यहाँ तक पहुँची कि दीवानी हो गई। अब ख़ुदा-ख़ुदा करके यह दिन देखा, कि जिसकी चाह में बावली हो गई थी, उससे मिलने जा रही है। हाथी पर दारोग़ा और हकीम साहब, और घोड़े पर बड़े नवाब और नवाब-दूल्हा, और फ़िनसों में बड़ी बेगम और नज़ीर बेगम और नूरजहाँ बेगम; और डोलियों में खवासें, महरियाँ, वग़ैरह। यह क़ाफ़िला इस तरह पर रवाना हुआ। सबके कलेजे हाथ-हाथ भर के। जैसे इतने बड़े क़ाफ़िले में कोई भी ऐसा न था, जिसको तमाम उम्र कभी भी रंज हुआ हो; जैसे रंज और ग़म का नाम ही नहीं सुना था।

शाम को मंज़िल पर पहुँचे। यहीं एक डाक-बँगले में टिके; और थोड़ी देर के बाद एक क़ाफ़िला और दाखिल हुआ। नवाब नादिरजहाँ बेगम, उनके मियाँ, आग़ा मोहम्मद जान, एक महरी, एक खवास, दो छोकरियाँ, एक सिपाही, एक मशालची। नादिरजहाँ और नूरजहाँ हमजोलियाँ मिलीं तो एक कमरे में जाके बातें होने लगीं।

नादिर—यह क्या गुल खिला रही हो, नूरजहाँ?

नूर—गुल कैसा!

नादिर—गुल वही, जिस पर रीझी हुई हो!

नूर—रीझना कैसा?

नादिर—तुम्हीं जानो।

नूर—हम तो रीझना-बीझना कुछ भी नहीं जानते, बहन।

नादिर—चल झूठी! वह लौंडा कौन ऐसा परिया है जिस पर तुम-सी परी इतनी लट्टू हो गई। क्या बड़ा गोरा-चिट्टा है!

नूर—कौन लौंडा; हम क्या जानें लौंडा-पौंडा। यह कैसी बहकी-बहकी बातें करती हो, बहन? बूटी पी के आई हो, क्या?

नादिर—अब मार बैठूँगी, हाँ! ले, अब हँसी-दिल्लगी हो चुकी; यह बताओ, कि कौन है। कहीं ऐसा न हो, कि किसी ऐसे-वैसे पर गिर पड़ो। इतना फ़र्ज़ाना भी हो, और फिर वही मोची के मोची!

नूर—अरे बहन, देखोगी तो हमसे छीन लोगी। आग़ा दूल्हा को भूल जाओगी। मेरी तो गनमुन जान जाती है।

नादिर—हाँ, कभी यह इश्क़ इतना चर्राया है!

नूर—चर्राया-वर्राया हम नहीं जानते। देखोगी तो कहोगी, यूसुफ़ अपने [illegible] है।

नादिर—और [illegible] तुम।

नूर—क्या जाने क्या सवव है, वहन, कि थोड़ी देर से दिल वैठा जाता है। पहले तो हमें यक़ीन नहीं आता था। समझी, कि मेरी तसल्ली के लिये झूठ-मूठ की वातें वनाई हैं। जव यक़ीन आया, तो वड़ी खुशी हुई, और इतनी खुशी हुई कि सचमुच जामे में फूली नहीं समाती थी।

नादिर—यह तो क़ायदे की वात है।

नूर—अव दिल डूवा जाता है।

नादिर—अरे, अव दो दिन में कलेजा गज़ भर का हो जायगा, जव वह होंठो से मिसरी घोलेगा; गर्मा-गर्म वोसे लेगा।

नूर—यह वाहियात वातें न करो!

नादिर—वाहियात वातें हैं? दिल में तो खुश होगी, और कहती होगी कि यह मुई पहाड़ सी रात काटे नहीं कटती; कहीं जल्दी से खत्म हो। और जव दोनों मिलोगे तो लाखों दुआएँ माँगोगी, कि तड़का देर में हो। सुनो तो!—इसकी खवर क्योंकर मालूम हुई कि कहाँ रहता है?

नूर—(सव हाल वयान करके) एक-एक घड़ी पहाड़ मालूम होती है।

नादिर—यह वात अव खुली!

नूर—ए तो तुमसे कौन-सी चोरी है!

नादिर—जव वुढ़िया-वुड्ढे से चोरी नहीं, तो हम तो वरावर की हैं। दो-चार महीने की वड़ाई-छुटाई क्या! यह वही है ना, जो दारोग़ा ने पाला था! —या शायद उसका भतीजा है!

फ़ैज़न ने नूरजहाँ के हुक्म से कच्चा-चिट्ठा कह सुनाया। यह क़िस्से को खत्म कर ही चुकी थी कि डाक-वँगले के पास रोशनी नज़र आई; दस्ती मशाल। फ़ीनस पर से एक डाक्टर उतरे, और खानसामा से व्राण्डी माँगी। हकीम साहव ने कहा—यह तो डाक्टर गोपाल क्रिस्टो गांगोली की-सी आवाज़ है। इतने में कहा—क्या डाक्टर साहव हैं? जवाव आया—जी हाँ, हकीम साहव वन्दगी। अल्लाह, नवाव साहव हैं; वन्दगी!

हकीम—कहाँ के धावे हैं, डाक्टर साहव?

डाक्टर—वह जो राजा राहतहुसैन है, वह भौत वीमार हो गया है। आदमी हमारे पास आया, कि रातों रात आइये! सो, हम जाता है।

हकीम—वह आदमी कहाँ है? वह जो टाँगे पर आता है?

नवाव वहुत घवराये। उनके दामाद भी परेशान हुए। इतने में टाँगा पास आया। दारोग़ा आगे वढ़े।

दारोग़ा—अरे मियाँ, मुवारक हुसैन, राजा कैसे हैं?

मुवारक—दारोग़ा साहव, क्या अर्ज़ करूँ। मिज़ाज अच्छा नहीं है। वेचैनी की कोई हद नहीं।

दारोग़ा—अल्लाह अपना फ़ज़्ल करे।

मुबारक—हाँ, खुदा मालिक है। मगर हाल अच्छा नहीं है।

हकीम—क्या हाल है ?

मुबारक—नब्ज़ बहुत ही सुस्त चलती है।

हकीम—अरे !

नवाब—या खुदा, हर आफ़त से बचाना !

डाक्टर साहब और मुबारक हुसैन चल दिये। और इस कुल क़ाफ़िले को मालूम हो गया कि जिसके लिये जाते हैं, उसका हाल पतला है। नूरजहाँ का तो सुनते ही फिर पहले-जैसा हाल हो गया। बड़ी बेगम तजरुबेकार औरत थीं। सोचा कि जब नब्ज़ ही सुस्त हो गई तो बचने की कौन सूरत है; लड़की दोनो जहान से गई। मियाँ-बीवी, लड़कियों और दामादों में चुपके-चुपके बातें हुईं। नवाब ने हकीम साहब से भी सलाह की।

हकीम—मुबारक हुसैन कोई डाक्टर नहीं, हकीम नहीं। लुर आदमी है। क्या जाने कि नब्ज़ क्या चीज़ है। नब्ज़ का देखना कोई दिल्लगी है ? वह डाक्टर ही कौन बड़े नब्बाज़ होते हैं !

दारोग़ा—अमीर का लड़का है, और सिर्फ़ एक ही औलाद है। ज़रा पावँ में फांस चुभी, तो बस ग़ज़ब ही हो गया।

हकीम—बस यही बात है। घबराइये नहीं।

नवाब—चलिये, इसी वक्त रवाना हों ! कुछ दूर तो है नहीं।

हकीम—बेशक, चलिये।

दारोग़ा—चलिये तो जान में जान आ जाय।

हकीम—क्या अफ़सोस है !

नवाब—जो मौला की मर्ज़ी !

बेगम साहब की भी यही सलाह हुई। नवाब-दूल्हा ने आदमियों को हुक्म दिया कि रोटी जल्द खाओ; हाथियों, घोड़ों, बैलों को रातब खिलाओ। कूच होनेवाला है। सब ने झट-पट रोटी खाई, रातब खिलाया; लैस हुए। नूरजहाँ को नादिरजहाँ और नज़ीर और फ़ैज़न ने बहुत समझाया।

क़ाफ़िला रवाना हुआ। नूरजहाँ का दिल बल्लियों उछलता था। हरदम नाउम्मीदी की तस्वीर आँखों में फिरती थी। आँखों से आँसू नहीं बहते थे, मगर दिल रोता था। बड़ी बेगम को शक की जगह यक़ीन था कि लड़का न बचेगा, और लड़की भी रो-रो के जान दे देगी। फ़ैज़न और प्यारी बहुत उदास थीं; सिकन्दर और दुलारी मुर्झाई हुई। दोनो दामाद उदास। नवाब के चेहरे पर मुर्दनी छाई हुई। दारोग़ा और हकीम तो खामोशी की हालत में; नवाब बहुत परेशान। एक मुक़ाम पर पहुँचे तो आवाज़ आई—पी कहाँ ! सब इस आवाज़

का सुनना था कि नूरजहाँ, दीवानी तो हो ही गई थी, और भी दीवानी हो गई; और बे-झिझक, बिला-लिहाज़ पी कहाँ! पी कहाँ! की आवाज़ लगाने लगी। जंगल में दो आवाज़ पी कहाँ! की उठीं। इस दर्द-भरी आवाज़ और जनून की हालत से क़ाफ़ले भर का दिल और भी भर आया। गो रात का वक़्त था, मगर जो आदमी इक्का-दुक्का मिलता था, वह फ़ीनस में से 'पी कहाँ!' की आवाज़ सुनकर साफ़ समझ जाता था, कि कोई लड़की दीवानी हो गई है; किसी कमसिन की आवाज़ है। चलते-चलते एक आदमी मिला। उससे दारोग़ा साहब ने पूछा—अरे भाई, ख़ैर-सल्लाह कह चलो! उसने कहा—दारोग़ा साहब, तबीअत बहुत बिगड़ गई थी। डाक्टर साहब ने आके के देखा, और दवा दी। जब से तबीअत सँभल गई है। नहीं तो रोना-पीटना मच गया था। और सच यों है कि जब उठें और नहाएँ, जब हम पतियाएँ। हमको डाक्टर साहब ने बर्फ़ लेने को भेजा है। दारोग़ा ने कहा—बर्फ़ हमारे साथ है, पन्द्रह सेर। तुम भी जाके लाओ। ड्योढ़ लगी रहे।

इस चीज के सुनने से बाज़-बाज़ को ज़रा तसल्ली हुई। मगर नूरजहाँ और बड़ी बेगम को ज़रा तसल्ली न हुई। क्योंकि उस आदमी ने कहा कि जब उठके बैठें और नहाएँ, तब की बात है। उससे दिल की तसल्ली होना मुश्किल ही थी। मगर यह मालूम हो गया कि राजा अभी ज़िन्दा हैं। हकीम जाते ही हैं; डाक्टर मौजूद ही हैं; इलाज हो रहा है कि बच जायँ। नज़ीर बेगम दो दिन की जागी थीं, फ़िनस में सो रहीं। जब एक दफ़ा ज़ोर से पी कहाँ! की आवाज़ सुनी तो उठ बैठीं और बड़ा रंज किया कि कि हाय! अच्छी होके फिर दीवानी हो गई। दिल को इतनी ढारस थी कि इस लड़के के देखते ही दोनों की जान में जान आयेगी। मुमकिन है कि यह उसको और वह इसको देख के ऐसे खुश हों कि उसकी बीमारी और इसकी दीवानगी दूर हो जावे। ख़ुशी अजीब चीज है। जिस तरह इंसान ग़म से घुल जाता है, उसी तरह ख़ुशी से पनप जाता है।

चलते-चलते रास्ते में दारोग़ा ने एक से पूछा, अरे, भई, ख़ैरियत तो है? उसने कहा, दारोग़ाजी, डाक्टर साहब जान लड़ा रहे हैं। और पहले से बडा फ़र्क़ है। दुआ और दवा दोनों में, रुपया कौड़ियों की तरह खर्च हो रहा है। और बड़ी रानी साहब अंगारों पर लोट रही हैं। अब जल्द जाइये। दारोग़ा ने कहा, अब तो पहुँच ही गये। ख़ुदा मालिक है। घबराने की कोई बात नहीं। अल्लाह पर हरदम भरोसा रखना चाहिये।

थोड़ी ही देर में क़ाफ़िला अपनी मंज़िल पर आ पहुँचा। वहाँ देखा, तो सब फाटक खुले हुए; और हर मुक़ाम पर तेज़ रोशनी, चकाचौंध का आलम; और लोग इधर-उधर दौड़ते हुए। सब बदहवास, परेशान। पर्दा हुआ। मर्द

सब बाहर रहे। औरतें अन्दर गईं। जनानी ड्योढ़ी पर वहाँ की औरतें आगे बढ़के उन्हें मिलीं और अन्दर ले गईं। और बड़ी रानी ने बदहवासी के साथ पूछा—हमारी बहू कौन है?

नज़ीर बेगम ने नूरजहाँ की तरफ इशारा करके कहा—आपकी बहू ये हैं। इतना सुनते ही बड़ी रानी नूरजहाँ को लिपट गईं। और आँखों में आँसू भर कर कहा—अल्लाह करे तुम्हारी जोड़ी बरक़रार रहे। अब हमारी जान में जान आ गई। सबकी सब अन्दर गईं।

अब वहाँ का हाल सुनिये। एक बड़े बैठकखाने में डाक्टर बैठे हुए। उसी में एक पलंग बिछा हुआ, बिस्तर साफ़-सुथरा। इत्र और गूगल और अगर की बत्ती और फूलों की खुशबू से मकान भर महक रहा था। लैम्प रोशन; सब लैम्पों पर हरा शेड। घर की नौकर औरतें अदब के साथ हाथ बाँधे हुए खड़ी; सब खामोश। दवाओं की शीशियाँ और बोतलें इसी बैठकखाने में एक तरफ़ चुनी हुई। उस पलँग को, जिस पर राजा राहत हुसैन आराम करते थे, बहुत सी औरतों ने घेर लिया था। कोई पूछती थीं—भैया हमको पहचानते हो? कोई कहती थी—डाक्टर साहब, मैं लौंडी हो जाऊँगी, इनको कोई ऐसी दवा दीजिए कि बातें करने लगें। किसी ने रोकर कहा—या इलाही, यह क्या हो रहा है! मर्दों में सिवाय दीवान कांजीमल और डाक्टर और एक ख्वाजासरा के और कोई नहीं। कांजीमल और डाक्टर से इस परेशानी की हालत में किसी ने पर्दा नहीं किया। जान पर बनी हुई थी। डाक्टर साहब वाक़ई जान पर खेल गये; जान लड़ा दी, बाहर दो सौ सैयदों को खिलाया गया। एक तरफ लंगर बट रहा था, दूसरी तरफ फ़क़ीरों को खाना और कपड़ा दिया जाता था। यह उस वक्त का हाल है जब यह क़ाफ़िला दाखिल नहीं हुआ था। जब यह क़ाफ़िला दाखिल हुआ, और ये लोग आये, फ़ौरन बाग़ और इमलाक भर में पर्दा करा दिया गया। अब सिर्फ डाक्टर बैठे थे। कांजीमल बाहर चले गये। नूरजहाँ अपनी परेशानी और रंज और ग़म सब भूल गईं। एक-एक क़दम पर यह मालूम होता था कि एक जान की जगह हज़ार-हज़ार जानें पैदा होती जाती हैं; दिल बाग़-बाग़। बड़ी बेगम ने कहा—मुझे तो दोबारा जिन्दगी मिली! नज़ीर बेगम बोलीं—अम्मीजान, दुबारा जिन्दगी पाई!

नादिर जहाँ ने कहा—किसको यह उम्मीद थी। हाय, मैं तो बाजी जान, बिलकुल नाउमीद हो गई थी।

फ़ैज़न नूरजहाँ के साथ-साथ थी, और चुपके-चुपके कहती जाती थी कि वह भारी जोड़ा लूँगी कि यहाँ की जितनी रानियाँ और बेगमें हैं, सब शरमा जायें!

प्यारी अकड़ के चल रही थी।

दुलारी, सितारन, सब बेहद खुश, कि दूल्हा के घर पर आ गये। डाक्टर साहब से कहा गया, कि ज़रा आड़ में हो जाइये।

पलँग के पास फ़ैज़न, नूरजहाँ बेगम तो चली गईं, और सब दूर खड़ी रहीं। नूरजहाँ पहले तो जाते हुए झिझकी; शर्म आई।

फ़ैज़न ने कहा—अरे, सरकार, चलिये! फिर मुस्कराकर चुपके से कहा—ए वाह, अब रंग लाई गिलहरी।

और जितनी औरतें थीं, सब हट गईं।

अब सुनिये कि डाक्टर ने आके इस साहबज़ादे को बड़ी बुरी हालत में पाया था और स्टीमुलेंट देने शुरू किये; यानी दवा जो मरते हुए को थोड़ी देर जिन्दा कर देती हैं, यानी कुछ नशे की दवाएँ। उनसे सौ में दो-चार दस-पाँच अच्छे भी हो जाते हैं।

इन दवाओं ने जो तजरुबेकार डाक्टर पन्द्रह-पन्द्रह बीस-बीस मिनट में देते जाते थे, मरज़ की खूब रोक-थाम की। नूरजहाँ जब जाके पलँग पर बैठी, तो फ़ैज़न ने जो इस लड़के के साथ खेल चुकी थी, कहा—हुज़ूर का मिज़ाज कैसा फैसा है ?

उन्होंने आँखें खोल दीं, और नूरजहाँ को देखकर रूह को कुछ ताज़गी मिली; मगर फ़ैज़न के सवाल का कुछ जवाब न दिया।

फ़ैज़न ने फिर छेड़ कर कहा—ए हज़ूर, देखिये तो पलँग पर कौन बैठा है ?

नूरजहाँ का कलेजा बल्लियों उछलता था।

उस लड़के ने आँखें खोल कर अपनी प्यारी माशूक़ा पर नज़र डाली। इतने इश्क़ और मोहब्बत के होते हुए भी, इस क़दर कमज़ोरी जिस्म पर छा गई थी, कि बोलने की सकत न थी।

आँखें भर कर देख तो लिया, मगर मुस्कराने तक की मरज़ ने इजाजत न दी!

फ़ैजन ने कहा—ए हज़ूर, इनका तो पी कहाँ! कहते कहते मुँह थक गया, गला सूख गया, और आपकी ऐसी बेरुखी!—ए मुँह से बोलो, मकर किये पड़े हो।

इस लड़के और फ़ैज़न की लड़कपन से मुलाक़ात थी और बेतकल्लुफ़ी तो लड़कों में होती ही है।

कभी इस वक़्त के ऊँचे दर्जे का लिहाज़ करके सरकार कहने लगती थी, मगर मुंह से बोलिये के बजाय बोलो कह जाती थी। घर की औरतें सब हैरान, कि यह क्या माजरा है। हम तो समझे थे कि दोनों की चार आँखें होते ही दोनों पनप जायँगे, बीमारी दूर हो जायगी; मगर यह सब खयाल ही खयाल था। इतने में डाक्टर साहब ने कहा—पन्द्रह मिनट हो गये। पर्दा होना चाहिये।

बड़ी रानी ने अपनी एक महरी को हुक्म दिया कि चादर नूरजहाँ बेगम को उढ़ा दो; बस, पर्दा हो गया। वह चादर ले जाने ही को थी कि एकाएक मरीज़ का मनका ढलका—औरतें और डाक्टर आड़ से मरीज़ को ग़ौर के साथ देख रहे थे; औरतें दौड़ पड़ीं।

डाक्टर दूर से देखकर बाहर चल दिये, और वहाँ हकीम साहब से कहा—राजा साहब गुज़र गया।

और महलखाने में इतना कुहराम मचा कि इस मुक़ाम के दस कोस तक पचास-साठ बरस से ऐसा कुहराम न मचा होगा।

एक़ दफ़ा डाक्टर और हकीम को ज़बरदस्ती लोग अन्दर ले गये। हकीम साहब ने नब्ज़ देखी, डाक्टर ने सीने पर हाथ रक्खा, और दोनों फिर बाहर चले। हकीम साहब ने चलते हुए इतना कहा—अल्लाह में सब क़ुदरत है !

इतने में पलँग के इर्द-गिर्द भीड़ लग गई, और तीन हिचकियाँ इस मरीज़ ने लीं, और चौथी हिचकी में दम निकल गया। अब पिट्टस और कुहराम की आवाज़ें आसमान के पर्दे फाड़ने लगीं। और जब नूरजहाँ ने एक औरत के बैन की आवाज़ सुनी—अरे मेरे नर्गिस आँखोंवाले बच्चे! देख तो सिरहाने कौन बैठी है !

इतना सुनना था कि नूरजहाँ ने आँख खोल के देखा और लाश की गर्दन को अपने मेंहदी-रचे हाथों से ज़रा उठाकर बाहें डाल दीं, और बावली सिड़न तो हो ही गई थी, दो बार गालों को चूमा। और उसी दम एक पलँग पर दो लाशें नज़र आई। एक की बाहें दूसरे के गले में।

अगर रूह कोई चीज़ है तो वाक़ई इन दोनों बेजान तन की रूहों को कितनी ख़ुशी होगी कि इस क़दर हसरत और नाकामी में भी यह बात हासिल हुई कि दोनों लाशें गले लगाए पड़ी हैं।

जिस वक़्त नूरजहाँ ने दम तोड़ा, उसके एक मिनट पहले उसने तीन बार वह आवाज़—जिसको उसके दिल की बड़ी सख़्त हूक कहना चाहिये—ऊँची की थी, और तीसरी आवाज जिसके बाद उसने अपनी जान जान देनेवाले को सुपुर्द कर दी , यह थी—

पहला दौरा

बेतुकी हाँक

महुए से कुछ ग़रज़ है न हाजत है ताड़ की
साक़ी को झोंक दूँगा मैं भट्टी में भाड़ की!

हात्तेरे पीनेवाले की दुम में पुरानी भट्टी का जंग लगा हुआ भभका! ओ गीदी, हात्तेरे शराबख़ोर की दुम में मियाँ अल्लू बुख़ारा अत्तार की क़रनबीक़! ओ गीदी, हात्तेरे मतवाले की पगड़ी के दोनों सिरों में कठपुतली नाच—ताक धनाधन ताक धनाधन। हात्तेरे की—और लेगा? अबे, तुम लोगों के हम वैसे ही दुश्मन हैं जैसे मोर साँप का, कुत्ता बिल्ली का, गैंडा हाथी का। गैंडे ने हाथी को देखा—और जंजीर तुड़ाके दौड़ा और सींग मारा और हाथी का पेट फाड़ डाला,—हात्तेरे की—और लेगा? मियाँ हब्शा साहब कजली बन के महाराजा बने चले जाते हैं, मगर दुश्मन से नहीं चलती। साँप के नाम से लोग काँप-काँप उठते हैं; यहाँ तक कि औरतें रात को साँप का नाम नहीं लेतीं—कोई मामूजी कहती है, कोई रस्सी। अगर मोर ने पकड़ा और झिंझोड़ा और निगल गया—हात्तेरे की! और लेगा? बिल्ली, जुलमी जानवर मशहूर है—बाघ की मौसी शेर की खाला। मगर कुत्ते ने जहाँ दबोचा, बिल्ली मय म्याऊँ के ग़ायब-ग़ुल्ला—हात्तेरे की! और लेगा?

इसी तरह हम जानी दुश्मन तुम लोगों के हैं। बस चले तो कच्चा ही खा जायँ, कभी न छोड़ें। और क्यों छोड़ने लगे, जी? न पियो तो हम काहे को बोलें! ग़रज़? मगर यह मुमकिन नहीं कि पियो और हम छोड़ दें; यह तो सीखा ही नहीं यहाँ। पीने के नाम पर तीन हरफ़—लाम, ऐन, नून; बल्कि चार—लाम, ऐन, नून, ते*—जिनको बाज़ मूरख कम पढ़े 'नालत' बोलते हैं। हम वह शख्स हैं जो तुम्हारा नाम सुनके इस तरह भागें, जैसे लाहौल्! कहने से शैतान भागता है—जैसे गधे के सर से सींग नदारद—कहीं पता ही नहीं—बिलकुल कमन्दे हवा!—हत्तेरे गीदी की! और लेगा?

यह दुख्तरे-रिज,[१] हरामज़ादी, मुर्दार,
मीनाबार की है रहने वाली!

इन मालज़ादियों को भलेमानस कहीं मुँह लगाया करते हैं! उसकी ऐसी-तैसी! हम किसी शरीफ़ को कब मानते हैं; ए लाहौल! —हात्तेरे की और तेरे साथ ही ऐरे-ग़ैरे की।

---

* ल, अ, न, त—'लानत' १. अंगूर की बेटी, यानी शराब

दिन रात गुफ़्तगू है शराबो-कबाब की,
क्या मुँह लगों ने यार की सोहबत खराब की!

बहुत ठीक, बहुत दुरुस्त। निहायत सही।

शराब थोड़ी सी मिलती तो हम वजू करते;
खुदा के सामने पैदा कुछ आबरू करते!

यह ग़लत, इसका बाप ग़लत! यों कहना चाहिये—

शराब थोड़ी सी पीते तो मस्त होते हम
खराब होते हम और मय परस्त होते हम!

जितने शेर शराब की तारीफ़ में हैं सबको उलट कर न रखा हो तो हमारी दुम में भी बहराइच का नम्दा। और नम्दा भी कौन? मोटा सा; आग से ज़्यादा गर्म —धुआँ निकलता हुआ।

ओ हो हो, वाह रे मैं और वाह री मेरी तबीअतदारी। बस मैं ही मैं हूँ, जो कुछ हूँ। जवाब काहे को रखता हूँ। चोर हो मेरा दोस्त; डाकू हो मेरा यार; उठाईगीरा हो मेरा जिगर; लुच्ची हो मेरी जान। वेसवा हो कि भटि-यारी हो—उसकी एक एक अदा पर मेरी जान वारी। मगर शराबी की सूरत से नफ़रत चाहिए। थोड़ी पिये चाहे बहुत, इससे बहस नहीं। आदमी वह अच्छा जो इस मुर्दार के पास न फटके; दूर-दूर रहे—मंज़िलों दूर। शराब पर तुफ़। जहाँ पाओ उसकी बोतल तोड़ डालो। उसकी भट्टी को भाड़ में डालो, उसकी दूकान का तख्ता उलट दो, कलवारीखाने को आग लगा दो, कलवार को फूँक दो—कलवार का नाम दुनिया के सफ़े से ग़लत हरफ़ की तरह मिटा डालो। अगर मुँह लगी हो—तो तलाक दे दो।

यह बोतल है कि इक टिल्लो है कानी;
चुड़ैलों की चची डायन की नानी!

अगर डाक्टर दवा में शराब दे, तो दवा को फेंक दो, पुड़िया को फूँक दो, शीशी को तोड़ दो, बोतल को फोड़ दो! और अगर इन्सानियत मिज़ाज में हो—तो आव देखो न ताव, डाक्टर को मार बैठो! हात्तेरे की—और लेगा, गीदी?

यह है हर हाल में माहुर से बदतर
खुदाई मार इस दारू मुई पर!
न कपड़ों की खबर ना तन की कुछ सुध,
कहीं, पगड़ी, कहीं जूता कहीं सर।
भलेमानुस से बन जाते हैं पाजी,
पड़े हैं अक़्ल पर कैसे ये पत्थर!

जो हो जायें ये इक चुल्लू में उल्लू,
सुनाएँ लाख साक़ीनामे फ़र फ़र,
उचकते फाँदते हैं पी के ठर्रा,
हैं इंसाँ शक्ल में, सीरत में बन्दर,
नहीं कुछ थाह उनके पाजीपन की
भरे ऐबों से हैं दफ़्तर के दफ़्तर!

ग़रज़ कि जहाँ कहीं शराब देखो, छीन लो ; शराबी मिले तो—मतवाला देख लो तो—चटाख़ से दो! हात्तेरे गीदी की!

——:o:——

दूसरा दौरा

तोड़ फोड़—खटपट

नाविल के पढ़नेवाले बड़े परेशान होंगे कि आख़िर इस बेतुकी हाँक के क्या मानी! मगर इसमें परेशानी और ख़राबी की क्या बात है? मज़मून का चेहरा तो मुलाहज़ा फ़रमा लीजिए—हम तो ख़ुद इसके क़ायल हैं कि 'बेतुकी हाँक' है। अब इसका ख़ुलासा हमसे सुनिये—

लाला जोती प्रसाद नामी एक बुज़ुर्गवार बड़े शराबख़ोर, बदमस्त और मुतफ़न्नी थे। उनके भाई-बन्दों दोस्तों,—बड़ों-छोटों ने समझाया कि भाई—

ऐब भी करने को हुनर चाहिए!

आदमी की तरह पिया करो। यह नहीं कि दिन-रात धुत्; हर दम ग़ैन! जब देखो नशे में चूर; दिन-रात एक ख़ुमारी की हालत। यह क्या बात है? बीच का रास्ता पकड़ो। बहुत से आदमी बरसों से पीते हैं; मगर इन्सानियत के जामे से ख़ारिज नहीं हो जाते; ख़ासे मज़बूत, तन्दुरुस्त , हट्टे-कट्टे सुर्ख़-सफ़ेद बने हुए हैं। लाख-लाख लोगों ने समझाया इन्होंने एक की न मानी।

एक रोज़ इत्तफ़ाक़ से एक लेक्चर सुनने गये जिसमें अमरीका की एक मिस ने शराबख़ोरी की बड़ी बुराइयाँ कीं और कहा कि हिन्दुस्तान-से गर्म मुल्क के लिये शराब बड़ी नुक़सान की चीज़ है। यहाँ इसकी कोई ज़रूरत ही नहीं। जब इंगलिस्तान और कश्मीर-से ठंडे मुल्कों में लोग बग़ैर शराब के रहते हैं तो हिन्दुस्तान-से गर्म मुल्क में क्यों नहीं रह सकते। तुम लोगों को चाहिए कि शराब के नाम से कोसों दूर भागो और जहाँ इसकी बोतल देखो फ़ौरन तोड़ डालो।

उस लेक्चर का असर उन पर ऐसा पड़ा कि शराब के दुश्मन हो गये।

आदमी में हवास ही हवास होते हैं। इनके हवास बिला इजाज़त ऐसे चम्पत हुए कि लन्दन तक पता नहीं। लेक्चर के कमरे से ही हल्ला मचाना शुरू किया, और वहीं से लेक्चर देते चले। आदमी तबीअतदार थे; पढ़े-लिखे, एम. ए.; फ़ेलो आफ़ दि कलकत्ता युनिवर्सिटी। लेक्चर के कमरे से चले तो हल्ला मचाते और स्पीच देते हुए चले। जिधर सींग समायी उधर निकल गये। पागल की दाद न फ़रियाद—मार बैठेगा। चलते-चलते एक दफ़ा याद आया कि राह में कलवार की दूकान है—दौड़ के भागे और उस रास्ते से क़तरा के चले; ताकि कलवारीखाने के पास भी न फटकें; साया भी किसी शराबी का न पड़ने पाय। चलते-चलते राह में एक और कलवारीखाना याद आया। वहाँ से भी रस्सियाँ तुड़ाके भागे; यह जा, वह जा। इत्तफ़ाक़ से एक आदमी जो बोतलें मोल लेता फिरता था, अपनी शामत का मारा इनको मिला। बस ग़ज़ब ही तो हो गया।

जोती—अरे यार बोतलें बेचते हो कि मोल लेते हो?

बोतलवाला—हज़ूर, मोल लेते हैं।

ज—हमारे पास कोई दो सौ खाली बोतलें हैं। किस हिसाब से लोगे?

व—हज़ूर सफ़ेद एक आने को और काली तीन पैसे को और अद्धा आध आने को।

ज—दो सौ की दो सौ खरीद लोगे?

व—जी हाँ, दो सौ हों चाहे पान सौ।

ज—अच्छा हम रुक़्का लिखे देते हैं, तुम बोतलों का टोकरा रहने दो। हम यहाँ सर्राफ़ की दूकान पर बैठे हैं। हमारे आदमी को रुक़्का दो और सब बोतलें लदवा लाओ। दाम चाहे आज दो, चाहे कल। मगर हमारे आदमी को अपना मकान दिखा दो।

व—और हज़ूर का मकान कहाँ पर है?

ज—झाऊलाल का पुल देखा है?—कहो, हाँ।

व—जी हाँ देखा है। वहाँ किस जघों पर है?

ज—वहाँ मिर्ज़ा हैदर अली बेग वकील की कोठी और बाग़ पूछ लेना। वहीं हम भी रहते हैं।

व—हज़ूर का नाम क्या लूँ?

ज—हमारा नाम नरायनदास और हमारे आदमी का नाम दुर्गा जर्नैल।

सर्राफ़ की दूकान पर पहुँचकर आपने काग़ज़ के एक पर्चे पर यह इबारत लिखी—

अगर कहीं शराब की बोतल देख पाओ तो फ़ौरन तोड़ डालो, शराबी को मार बैठो, मतवाले को चटाख से टीप लगाओ। फिर हाथ मलके एक और दो! हात्तेरे की—और लेगा, गीदी?

झाँसा दिया तुमने खूब हुश्शू
बोतलवाले की ऐसी-तैसी!

चला है वहाँ से बड़ा मखादीन बन के! बोतल लेने चले हैं! दो सौ बोतलों की चाट पर झाँसे में आ गया। खुश तो बहुत होगें। बच्चाजी बोतल मोल लेंगे। पाँच जूते और हुक़्क़े का पानी! हात्तेरे की।

सँभले रहना बचाजी, हुशियार,
बोतल के एवज़ मिलेगी पैज़ार।

यह लिखकर उस आदमी को दिया और वह खुश-खुश झाऊलाल के पुल की तरफ़ चला। रास्ते में उसकी बीबी मिली। पूछा—टोकरा और बोतलें कहाँ हैं? उसने हँसकर जवाब दिया—अरी सुसरी, आज घिरे हैं! एक लाला हैं नरायनदास वह दो सौ बोतलें एकदम से बेचे डालते हैं। यह चिट्ठी लिये उनके घर जाता हूँ। एक बोतल नारंगी की ला रखना और कलेजी भी कलवारीखाने से ले आना; और चटनी खूब चटपटी बना रखना!

बीबी की भी बाँछें खिल गईं। याँ तो जूँ की तरह रेंगती हुई चलती थी या अब तनके सीना उभारके चलने लगी। इधर बोतलवाले का नज़र से ओझल होना था, कि लाला जोती परशाद साहब (जिनका तखल्लुस 'हुश्शू' है) सर्राफ़ की दूकान से उठे और बोतल के झौए के पास जाकर एक बोतल उठाई, और उसका लेबिल पढ़ा—

'पिलसनर बीअर!'

दो चार दफा 'बीअर, बीअर' कहकर जोर से पटका तो अट्ठारह टुकड़े। हात्तेरे गीदी की। उसके बाद दूसरी बोतल उठाई—

'फ़ाइन ओल्ड का काग पिग!' तीन-चार दफ़ा यह नाम पुकारकर फेंकी। सत्रह टुकड़े हो गये—हात्तेरे की! इसके बाद तीसरी बोतल पर प्यार की नज़र डाली—

'ओल्ड टाम!' बहुत हँसे। फ़र्माया—बहुत पी। अच्छा, तू भी ले!

'कार्लो विटनर!' इसको ज़ोर से दीवार पर पटका तो चकनाचूर, फ़र्माया, इसमें खटमल की बू आती है। पाँचवीं बोतल को बड़ी इनायत की नज़र से देखा और 'सेंट जूलियन' पढ़कर कहा, खूबसूरत अद्धा है और दरख़्त के तने पर फेंका; और अद्धे के टूटने की आवाज़ से बहुत ही खुश हुए, गोया लाखों रुपये मिल गये। छठी बोतल उठाई थी कि इतने में सर्राफ़ ने दूकान से उतर के कहा—लाला नरायनदास साहब, यह आप क्या कर रहे हैं?

उन्होंने बोतलवाले से कहा था कि मेरा नाम नरायनदास है; इसी से वह समझाने लगा कि लाला नरायनदास साहब आप क्या कर रहे हैं? इतने में इनका जनून देखकर कई राह-चलते खड़े हो गये और उन्होंने यह भीड़ और मेला देखकर झौए को उठाके एक दफ़ा ही दे पटका, और भागे।

अब बोतलवाले की सुनिये कि खुश-खुश झाऊलाल के पुल पर मिर्ज़ा हैदर अली.बेग की कोठी पर पहुँचा। देखा मिर्ज़ा साहब हुक़्क़ा पी रहे हैं। सलाम करके कहा—हज़ूर यहाँ नरायनदास का मकान कहाँ है?

मिर्ज़ा—नरायनदास? नरायनदास तो यहाँ कोई नहीं हैं।

बो—हज़ूर, वह जिनका नौकर दुर्गा जंडैल है।

मिर्ज़ा—(हँसकर) यहाँ न कोई कंडैल है न जंडैल है।

बो—पता तो यहाँ का दिया था। साँवले से हैं। नाटा क़द है।

मिर्ज़ा—अरे भाई यहाँ कोई नरायनदास नहीं रहते।

वह पर्चा लेकर बोतलवाला अपना-सा मुँह लिये हुए बैरंग वापिस आया तो देखा लाला हवा हुआ है—झौआ औंधा पड़ा हुआ है। अरे! कोई बोतल इधर टूटी पड़ी है कोई उधर चकनाचूर। किसी के अट्ठारह, किसी के दस टुकड़े। सर पीट लिया। सर्राफ़ से पूछा। उसने कहा—कोई सिड़ी मालूम होता है। बोतलों को उठाए, पढ़े और ज़मीन पर, दरख्त पर, दीवार पर दे पटके और हँसे!

बोतलवाला आँखों में आँसू ले आया। सर्राफ़ ने कहा—उनका आदमी कहाँ है? वह बोला—अरे आदमी कैसा! जब उनके मकान का कहीं पता भी हो! वहाँ तो कोई इस नाम का रहता ही नहीं। आज अच्छे का मुँह देखकर उठे थे! रोते नहीं बनती।

इस मुसीबत के साथ घर गया; जोरू खुश हुई कि दो सौ बोतलें लेके आया। शराब की बोतल में से चौथाई यानी पाव बोतल पी चुकी थी। जवान औरत कोई सत्रह बरस का सिन, और रंगत भी खुलती थी। बन-ठनके बैठी थी कि मियाँ आते के साथ ही रीझ जायँगे। देखो तो चेहरे पर फटकार बरस रही है; उदास! झौआ देखा तो—जल्ले जलाल हू!

बीवी—अरे! टूटी बोटलें!

मियाँ खामोश बैठे रहे; जैसे जूते पड़े हों।

बीवी—यह क्या हुआ?

मियाँ—थोड़ी-सी पिलाओ।

बीवी—(पत्थर के प्याले में थोड़ी-सी उँडेलकर) लो! यह टूटी बोतलें कैसी!

(कलेजी सामने रख दी)

मियाँ ने शराब पी, और ठंडा पानी खूब तनके पिया; और मारे रंज के पड़के सोये तो तड़के की खबर लाये।

बीवी बेचारी बनी-ठनी, सँवर करके तैयार; मियाँ बेज़ार—जल्ले जलाल हू! समझे क्या थी, हुआ क्या! लाला जोती परशाद साहब 'हुश्शू' ने ऐन करियाल में गुल्ला लगाया। दो बजे मियाँ की आँख खुली। बीवी को जगाकर सारी कैफ़ियत सुनाई। उसको भी बेहद मलाल हुआ, और रोने लगी। मियाँ ने

उठकर आँसू पोंछे, मुँह धोया, समझाया कि--चलो अब जो कुछ हुआ वह हुआ; गुसैंयाँ मालिक है! यह कहकर बोतल की बची हुई शराब दोनों ने पी और लाला नरायनदास साहब को दोनों ने पानी पी-पीके कोसा। इसके बाद ख़ुदा जाने क्या कारंवाई हुई; जिसको अल्लाह ही बेहतर जानता है।

——:०:——

तीसरा दौरा

कलवारीख़ाना और काना

पहला सीन

इधर बमचख, उधर जूती, इधर पैंजार, उधर दंगा!
वही कलवारखाने में है कैसी उलटी यह गंगा!!

बोतलवाले और बोतलवाली चमक्को को कुठरिया में पड़े रहने दीजिए; वह जानें, उनका काम।

अब मियाँ हुश्शू साहब का हाल सुनिये कि बोतलवाले की बोतलें तोड़, शीशा औंधा करके जो सीधी भरी तो एक कलवारीखाने में पहुँचे। कलवार साहब बड़े तोंदल डबल आदमी—लाला दरगाही लाल—दूकान के राजा बने हुए बैठे थे। मियाँ हुश्शू भी धँस ही तो पड़े। भलेमानस अमीर देखकर उसने मोंढा दिया; कपड़े भी अच्छे पहने थे।

पूछा—हुक्म। कहा—भाई साहब पीने आये हैं। उसने अपने आदमी, चपई से कहा—वह फ़ालसे की जौन केदारपुर के तहसीलदार के लिये खींची है रग्घू के घर रक्खी है। एक बोतल भरवा ला।

लाला जोती परशाद साहब ने कहा—इसकी सनद नहीं है, लाला। तुम ख़ुद जाओ। और एक बोतल क्या होगी? हाथी के मुँह में ज़ीरा। न गैलन, न दो गैलन! ढाई बोतल रोज़ का तो मेरे यहाँ ख़र्च है। लाला एक मैं पीता हूँ, एक क़बीला चढ़ाती है; आधी में बाल-बच्चे। भला तीन गैलन तो ला!

लाला ख़ुश-ख़ुश उठे। कहा—ज़री देर होगी। तब तलक आप कन्दी का शगल कीजिए।

उन्होंने कहा—भई हमें कुछ जल्दी नहीं है। अब तो हम आज रात को यहाँ से जानेवाले को कुछ कहते हैं! कलवारीखाने से हम चले जायँ तो हम पर लानत। अब हम यहीं ढेर होंगे। मगर भई हमारी सोने की घड़ी और नोटों की फ़िक्र रखना।

लाला मारे ख़ुशी के फूलके कुप्पा हो गये। समझे सोने की चिड़िया हाथ आई। नौकर से कहा—लाला की बड़ी ख़ातिर करना, और कान में कहा—

इनको जरी तेज़ कर रखना। यह कहकर लाला दरगाही लाल रवाना हुए। रास्ते में मंसूबे गाँठते जाते थे कि यों धुत् करूँगा, और घड़ी टहला दूँगा; और नोट दे दूँगा, जिसमें किसी को शक न हो। अब सुनिये कि इस शराब के सिर्फ़ दो गैलन थे, मगर उन्होंने तीन बनाए।

अब इधर का हाल सुनिये कि लाला ने चपई से कहा कि—चपई काका! तुम एक इक्का किराया करो तेज़-सा; हम उसको आठ आना देंगे। दौड़के जाओ। बिल्ली की चाल जाओ और कुत्ते की चाल आओ। हिरन की सराय के पास काका की दूकान है। वहाँ से कलेजी के कबाब एक रुपये के लो, और आगरेवाले की दूकान से एक रुपए की दालमोठ लो, और दीना खोंचेवाले से एक रुपये के दही के बड़े लो। और ऐसे आओ जैसे गोला। दुकान से दाम ले जाओ, हिसाब कर लेना। समझे?

चपई—और दुकान पर बिक्री कौन करेगा?

जोती—हम।

च—(हँसकर) अरे नाहीं! हजूर।

ज—दो रुपया इनाम दूँगा।

च—अच्छा सरकार। इसमें कन्धी है, इसमें महुआ, इसमें गुलाब की है।

ज—अरे यार यह हम निबट लेंगे।

मियाँ चपई ऐसे इनके भरों में आये कि दूकान छोड़के लम्बे हुए। सोचा कि दो रुपये एक मिलेंगे, और तीन रुपये के सौदे में से दो बनाऊँगा। इनको सूझेगा क्या खाक। और इधर टका आती, टका जाती दूँगा। और अठन्नी खरी करूँगा। अब यहाँ से सड़क पर आये। आवाज़ आई—एक सवारी गोल दरवज्जा। झप से बैठ लिये। तीन पैसे पर तय हुआ। लाला दरगाही लाल को तो रग्घू की दूकान पर दौड़ा दिया और चपई काका को हिरन की सरा रवाना किया और खुद जनाब लाला जोती परशाद साहब 'हुश्शू' कलवार के क़िबला-गाह बनके और खूब तनके दूकान पर बैठे। इधर-उधर देखा तो पानी के घड़े पर नज़र पड़ी। ठंडा करने के लिये कलवार ने बहुत-सी बालू उसके नीचे रक्खी थी। उन्होंने सब उठाके बोतलों और पीपों में झोंक दी। अब जो दूकान पर आता है, इनको देखकर टिक जाता है।

१—लाला कहाँ हैं?

जवाब—लाला हम।

१—नहीं हजूर वह जो इस दूकान के लाला हैं।

जवाब—अरे भाई तुम अपना मतलब कहो। लाला हमारे क़र्ज़दार थे। दूकान हमारे हाथ बेच डाली। क्या, लोगे क्या?

१—एक अद्धा भरवाने आये हैं। पाँच आने का।

ज—(बोतल उठाकर) लो (पाँच आने लेकर) बस, जाओ!

१—अरे साहब, अद्धा भर चाहिए।

जवाब—हमने पाँच आने बर्तन लगा दिया; जिसमें जल्द बिके।

आधी तो उसने निकाल ली, कि जब लाला मँगवाएँगे तो पाँच आने रख लूँगा, यही अद्धा दे दूँगा। पाँच आने रोज़ की गोटी हुई।

इतने में दूसरे आये।

२—एँ! लाला कहाँ हैं? एक बोतल लेने आये थे!

ज—हम से लो।

२—नहीं साहब हमारी मजाल पड़ी है! आप रईस आदमी, सोने की घड़ी लगाए हैं।

ज—फिर इससे क्या होता है? हैं तो ज़ात के कलवार। हमारी तरफ के कलवारों को देखो दो-दो हाथी फ़ीलखाने में झूम रहे हैं।

२—लाला दरगाही लाल हज़ूर के कौन हैं?

ज—हमारे सुसर हैं। उनकी छोटी लड़की हमको ब्याही है।

दस आने में उन्होंने दो बोतल दीं। वह समझे, लाला के दामाद ग़प्प खा गये। चुपके से लम्बा हुआ।

अब तीसरे आये, आपकी सूरत से अहमक़पना और बेतुकापन बरसता था। उन्होंने दस आने दिये और दो बोतल हमारे अनोखे कलवार ने हवाले कीं। उसने कहा—भाई दो कैसी? उन्होंने कहा—हमने पाँच आने बोतल लगा दी है। पूछा—जो लाला बैठे थे, वह कहाँ हैं। कहा हम उनकी लड़की के मियाँ हैं।

उसने अपने मालिक से कहा—आज पाँच आने बोतल बिकने लगी। वह भी नौकर की तरह सीधे आदमी थे। दो रुपये दिये, कि जाके छै बोतलें लाओ, और पैसे फेर लाओ। अब चौथे आये।

४—क्या आज दूकान पर कोई नहीं है?

ज—आँखें क्या बेच आये हो? बैठे तो हैं।

४—मैं तो आपको नहीं कह सकता।

ज—अजी यह दूकान हमारे साले की है।

४—आप बहनोई हैं उनके।

ज—हाँ।

४—तो हम तो दो आने की पीने आये हैं।

ज—यहाँ न पियो। ले जाओ। (आधी बोतल देकर) तुम योंही ले जाओ। दाम भी न दो। अच्छा, चार आने की ले लीजिए। एक आना कम सही।

इसी तरह जोती परशाद ने थोड़ी देर में बीस-बाइस रुपये की बिक्री की और चिराग़ गुल करके बोतलों को औंधा कर दिया, पीपे उलटा दिये, सकोरे तोड़ दिये और चम्पत हुए—हात्तेरे गीदी की!

दूसरा सीन

अब सुनिये कि इधर तो—

हरीफ़ाँ पीपहा तोड़ीदा, रफ़्तन्द,

मठूरें ढूँढ कर फोड़ीदा रफ़्तन्द!

और इधर लाला दरगाही लाल रग्घू को जगह-जगह तलाश करके बोतलों के एक एक के दो-दो करके खरामाँ-खरामाँ आये। इत्मीनान तो हो ही गया था कि लाला तो सुबह तक उठनेवाले नहीं हैं, और क़न्दी पी ही रहे हैं। आराम के साथ तशरीफ़ लाये तो चिराग़ गुल, पगड़ी ग़ायब! जल्ले जलालहू! ऐं!! अरे चपई! ओ चपई!

पड़ोस के कचालूवाले ने कहा—लाला क्या आज अभी से दूकान बढ़ा दी?

अन्दर आये तो न आदमी न आदमज़ाद। न चपई न लाला—गुले लाला खिला हुआ है। अरे!

चपई होत्! अबे चपई मर गया क्या?......अरे कोई है? कोई हो तो बोले!

मियाँ चपई तो दीना के हाँ दही-बड़े ले भी रहे हैं और चख भी रहे हैं। लाला अपने घर लम्बे हुए। घर से नौकर को बुलाया। चिराग़ जलवाया। अरे! हायँ! बोतलें औंधी पड़ी हुईं—पीपे खाली। शराब के नाले बह रहे हैं। मठूरों को कोठरी में देखा तो टूटी हुईं। दरिया बह रहे हैं। सर पीट लिया। बड़ा गुल मचाया। अरे लुट गया, मर मिटा! आस-पास के लोग आये। देखते हैं तो मठूरें और बोतलें और पीपे सब एक सिरे से जख्मी; और मारे बू के रहा नहीं जाता। और शराब का यह हाल है कि दरिया बहता है। अन्दर बाहर शराब ही शराब। सबको रंज हुआ। पूछा—यह क्या हुआ भई? उन्होंने कहा—हुआ क्या, हमारी बदनसीबी! हमारी नहूसत, दिनों की गर्दिश; और साहब क्या पूछते हो? एक लाला आये थे, हम उनके वास्ते फ़ालसेवाली लेने गये; अमीर आदमी थे। हमने कहा, भाई, इनका आदर-भाव करें। चपई से कह गये कि उनको जब लग कन्दी पिलाओ। यहाँ आये तो दिया गुल; दूकान में अँधेरा पटा हुआ। होश उड़ गये। अरे यह क्या भैया! दिया जलाया तो बोतलें टूटी हुई। अरे! पीपा जो देखा, वह औंधा पड़ा हुआ। जान निकल गई। कोठरी में मठूरे सब टूटी-फूटी। और न लाला का पता, न चपई हराम जादे का! एक आदमी ने कहा—चपई को तो हमने चौक में देखा था। लाला

को और भी हैरत हुई, कि इतने में चपई आये, और इक्के से उतरे। और लाला ने दौड़के एक लपोटा जोर से दिया—अबे तू था कहाँ, हरामजादे ? दुकान लुटा दी! अब उसका हर्जा कौन देगा?

चपई रोने लगे। कहा—यह जबरीती है, लाला! लाला ने झल्ला के दो-तीन लपोटे और जमाए। और चपई भी बिगड़ा। और तमाशाई बीच-बिचाव करने लगे।

१—पहले पूछो तो कि दुकान छोड़के चला कहाँ गया था!

२—अबे हाँ, दुकान किस पर छोड़के गया?

३—जरा जाके देखो तो दुकान जाके।

चपई ने दुकान में क़दम रक्खा तो शराब की नदी बही हुई है। रंग फ़क़ हो गया। और लाला ने इस गुस्से की नजर से देखा कि मालूम होता था, खा जायँगे। और गुस्से की बात ही थी। इतने में इक्केवाले ने कहा—

अजी, अब हमको अठन्नी मिले, हम चलते हैं।

लाला—अठन्नी कैसी?

जवाब—अवाई-जवाई के आठ आने चुके थे। मारामार ले गये और आये!

लाला—अबे तू कहाँ गया था दुकान छोड़के?

चपई—(रुआसा होके) लाला जो आये थे, उन्होंने कहा—जाके चौक से सौदा ला दे, अवाई-जवाई आठ आने देंगे, गोल दरवज्जे तक।

लाला—(बहुत खफा होकर) यह कहो, बड़े हातिम बन गये! गोल दरवज्जे तक आती जाती के आठ आने हुए? टके पर आदमी जाता है और टके पर आता है।

ग़रज़े कि लाला और चपई और इक्केवाले में देर तक गुलखप रही। तीन पैसे पर चपई आ गये थे, मगर इक्केवाले से कहा था कि लाला से अठन्नी कहना। मगर अब इक्केवाले की नीयत जो डाँवाडोल हुई तो वह वाक़ई अठन्नी ही माँगने लगा। चपई तो जो सिखाके लाए थे वही खुद भी गाने लगे। मगर अब यह दिल्लगी हुई कि इक्केवाला सचमुच तीन पैसे की अठन्नी माँगने लगा। और जब लाला ने डाँटा तो इक्केवाले ने चपई का दामन पकड़ा, और तकरार बढ़ गई। आखिरकार लोगों ने समझा-बुझाके इक्केवाले को तीन आने पर राज़ी किया, और चपई को देने पड़े।

लाला ने बड़े गुस्से में आके कहा—आखिर मालूम तो हो कि कहाँ गया था! दूकान क्यों छोड़ी और लाला कहाँ हैं?

चपई—हमसे कहा—चपई काका, एक इक्का किराया करो और जाके आगरेवाले की दूकान से दालमोठ एक रुपये की और एक रुपये के दही-बड़े और एक रुपये की कलेजी चटपट दौड़के लाओ। हमने कहा, दुकान पर कौन

रहेगा। कहा, जब तलक हम बेचेंगे। जब हमने दाम माँगे तो कहा, तुम दुकान से ले लो। फिर हिसाब हुआ करेगा। आप के छै रुपये हमारे पास थे ही। उसमें से हम तीन का सौदा लाये और अठन्नी इक्केवाले को दी। अढ़ाई रुपये रहे। वह ये हैं।

टेंट से रुपये निकालने ही को थे कि लाला ने आग-भभूका होकर पट्टे पकड़के इतना मारा कि भुरकस निकाल दिया। और जो लोग खड़े तमाशा देख रहे थे, उनसे यों बातें हुईं—

लाला—अरे यारो देखो तो इसकी बातें! एक रुपये की कलेजी, कोई अंधेर है! और हमसे पूछा, न गुछा! क्या इनके बाप का माल था? और एक रुपये के दही-बड़े! अन्धेर है कि नहीं? और एक रुपये की दालमोठ!

जिसने सुना वह हँसने लगा, कि भई वाह! एक रुपये के दही-बड़े और एक रुपये की दालमोठ, और एक रुपये की कलेजी की अच्छी कही!

१—एक रुपये की कलेजी अगर एक-एक आदमी नाश्ते के साथ खा जाय तो कलेजी वाले तो बन जायँ।

२—भला कोई बात भी है! अच्छी कही!

३—और एक रुपये की कलेजी के अलावा एक रुपये के बड़े! वाह, साहब वाह! एक ही हुई!

कलवार—हज़ूर जो बात थी एक ही रुपये की थी। एक रुपये से कम की नहीं थी। इन्साफ़ तो कीजिए—कलेजी भी एक ही की, और दालमोठ भी एक ही की और दही-बड़े भी एक ही के! एक रुपये से घट के तो बात करता ही नहीं।

१—और दाम अपनी गिरह से नहीं दिये!

२—तौबा साहब! अपनी गिरह से देना क्या माने!

३—भई वल्लाह, अच्छी दिल्लगी हुई, माक़ूल!

कलवार—सब इसी की जान को रोना पड़ेगा! शराब जो गिरी है, उसके दाम भी इसके बाप से लूँगा।

ये बातें हो ही रही थीं कि एक आदमी ने आनके गुल मचाया और आसमान सर पर उठा लिया। कहा—दरगाही लाल, यह क्या बदनीयती पर कमर बांधी है! अरे मियाँ शराब में नौ मन रेत मिला दी!

कलवार—कैसी रेत? और हम थे कहां कि जो रेत छोड़ते?

जनाब—अजी को तुम थे या नहीं थे, चल के देखो! तुम्हारे दामाद तो थे!

'दामाद' का लफ़्ज़ सुनना था कि दरगाही लाल, कलवार आग हो गया। एक तो नुक़सान इतना हुआ था, उसका रंज था; दूसरे इस बात का गुस्सा, कि तीन-चार रुपये और ऊपर से ख़र्च हुए—और अब एक आदमी ने आके

गाली दी—लाला का दामाद एक अजनवी को वनाया। आग ही तो हो गया। कहा—वस यहाँ से डोल जाओ! दामाद तेरा होगा।

वह आदमी भी विगड़ा। मगर कलवार के एक भाई-चन्द ने उससे कहा—भई विगड़ने की तो वात ही है। गाली देते हो, और कहते हो, विगड़ो नहीं। इनकी एक लड़की है, वह अभी जरा-सी; कोई तीन वरस की, और तुम दामाद वनाए देते हो। वुरा मानें कि न मानें!

उसने कहा—भई हमको क्या मालूम था। उसने कहा, लाला के दामाद हैं हम; वही हमने कहा।

इतने में एक और आदमी दौड़ा आया। यह वहुत ही झल्लाया हुआ था। आते ही ग़ुल मचाके कहा—वाह, लाला, वाह! आज तो अच्छी दारू वेच रहे हो! मार के वालू और रेत ही भरी हुई है। हमारे दाम फेर दो। वह जो तुम्हारे वहनोई वैठे थे, उन्होंने पाँच आने वोतल लगा दी थी। मगर किस काम की।

कलवार 'वहनोई' का लफ़्ज़ सुनकर फिर आग-भभूका हो गया। कुछ कहने ही को था कि एक और आदमी ने आके डाँटा—भई, वाह रे लाला दरगाही लाल, अव तक महुए और फ़ालसे और गाजर की खींचते थे; मगर अव मालूम होता है वालू की भी खींचने लगे। मार के रेत ही रेत भरी है। हम तो पहले उनको देखके ठिठके थे। मगर उन्होंने खुद ही कहा कि लाला दरगाही लाल की लड़की के हम मियाँ हैं, लाला हमको वैठा गये हैं—

दरगाही लाल झल्ला के दूकान से भाग गये!

——:०:——

चौथा दौरा

हुश्शू का वार।

हवेली में टिके पाजी पजोड़े,
विकी ईंटें, हुए कड़ियों के कोड़े!

लाला जोती परशाद को वीच का रास्ता पकड़ने से दिली नफ़रत थी। या कूंड़ी के इस पार या उस पार! अगर पीने पर आये तो दिन-रात ग़ैन, हर घड़ी चूर, हर दम धुत्त; सिवा शराव के और कोई शग़ल ही नहीं। खाना-पीना, ओढ़ना-विछौना, सव शराव! और अगर छोड़ दी तो एक क़तरा भी हराम। अगर डाक्टर नुस्खे में भी तजवीज़े तो भी न पियें। इन दो सूरतों से

किसी हाल में भी खाली नहीं रहते थे। या तो उसके नाम से इस क़दर नफ़रत कि ज़हर से वदतर समझते थे; या इस क़दर इसके ग़ुलाम कि बे-पिये ज़रा चैन नहीं।

अव इससे कुल्ली नफरत हो गई थी। दरगाही लाल की दूकान की कार-गुज़ारियाँ और वोतलवाले की फजीहतों का हाल किसको नहीं मालूम! हाँ, यह अलवत्ता किसी को नहीं मालूम कि घर में जाके वोतलों और क़ारूरे (यानी पेशाव) की शीशी तक को न छोड़ा। यह किसी को मालूम नहीं था। शराव और शरावी और शराव के वेचनेवाले और खरीदनेवाले और शराव के वर्तन—सव के दुश्मन।

एक दिन उन्होंने यह उपच की ली कि एक कलवार की दुकान पर गये; जिसकी दूकान उनके मकान से मिली हुई थी। उस कलवार ने मकान से कोई चार सौ क़दम के फासले पर एक हवेली वनवाई थी। दस रुपये महीने किराये की। लाला जोती परशाद साहव उसके पास गये।

जोती—लाला, तुम्हारा नया मकान खाली है?

कलवार—जी हाँ, खाली है।

ज—क्या किराया है?

क—है तो वारह रुपये, मगर आपसे दस लेंगे।

ज—(वारह रुपये देकर) लो और कुंजी हमको दो।

क—हजूर दस दें। आप ही रहेंगे ना?

ज—नहीं वारह देंगे; जिसमें ऐसा न हो कि कोई और गाहक वारह का देनेवाला आये और तुम हमको निकाल दो।

क—जी नहीं। ऐसी वात है? आप चाहे रुपये भी लेते जायें!

ज—हम खरा मामला रखते हैं। अपना आदमी साथ कर दो।

क—वहुत अच्छा!

लाला जोती परशाद साहव कलवार के आदमी को लेकर चले।

आदमी—हजूर का मकान कहाँ है?

ज—मुल्तान, पंजाव में।

आदमी—हजूर वड़ा खरा सौदा करते हैं। पेशगी वारह दे दिये झपाक से।

ज—भई मैं उन्तीसवें दिन तन्खाह देता हूँ। और छै-छै महीने का किराया पेशगी। और नाज, घी और लकड़ी एक साल भर के लिये भर रखता हूँ। और कपड़ा वम्वई से मँगाता हूँ। और क़स्साव को महीने भर के गोश्त के दाम पहले ही दे देता हूँ।

आदमी—लाला ने भी वहुत आदर-भाव किया।

ज—यही मकान है ना?

आदमी—जी हाँ। (ताला खोलके) मकान क्या है कि दिलकुशा है!

ज—अजी हम इसको दिलकुशा वना देंगे।

आदमी—फिर जहाँ हजूर रहें, वहाँ दिलकुशा क्यों न वन जाय!

ज—जोड़ियाँ भी अच्छी लगाई हैं। शहतीर और तख्ते सव साखू के हैं! और वहुत मजवूत मकान वना है।

आदमी—सरकार चूने की जुड़ाई हुई है, सीसा पिलाया है।

ज—हमारा इस मकान से जी खुश हुआ; और लाला का हमसे —कि ऐसा खरा किरायेदार मिला।

१—फिर हैं भी तो आप ऐसे ही।

यह कहकर आदमी ने सलाम किया और रुख़सत हुआ। और कोई वीस दिन वाद लाला जोती परशाद साहव फिर कलवार की दूकान पर गये; और साहव-सलामत पीछे की, वारह रुपये पहले दुकान पर रख दिये।

क—वन्दगी सरकार, कहिये मज़े से?

ज—जी हाँ, लाला।

क—यह वारह रुपये कैसे?

ज—किराया मकान!

क—अभी तो इकादसी-इकादसी पन्द्रह दिन हुए। तेरस-चौदस-अमावस और आज परेवा है। वीस ही दिन तो हुए।

ज—हाँ, मगर मैं आज कलकत्ते जाता हूँ। एक महीने में आऊँगा।

क—फिर जल्दी कौन-सी थी? जव आते तो दे देते।

ज—हमको दो महीने तीन महीने का पेशगी किराया दे देना गौं है; यह गौं नहीं है कि तुम्हारा आदमी तक़ाज़े को आये।

क—क्या मजाल है, यह भी कोई वात है भला!

ज—नहीं! यही नहीं, वल्कि कैसा ही काम हुआ, आदमी को न भेजिएगा। लोग समझेंगे, ज़रूर तक़ाज़े को आया है।

क—भला जो किसी वात को भेजना पड़ा। कोई वात ऐसी ही हुई।

ज—तो खत लिख भेजा, वस।

क—वहुत अच्छा। अव आपकी क्या खातिर करूँ!

ज—वस अव मैं रुखसत!

क—हजूर, रईस कहाँ के हैं!

ज—मुल्तान के।

क—यहाँ कहीं आप नौकर हैं हजूर?

ज—नहीं, मैंने यहाँ सदरवाज़ार में मुर्ग़ी-अंडों का ठेका लिया है।

क—हाँ, इसमें तो वड़ी फ़ायदा होगी। हजूर का नाम क्या है?

ज—हमारा नाम चुलवुली सिंह। हम ठाकुर हैं।

क—हुज़ूर कलकत्ता से चिट्ठी भेजेंगे?

ज—हाँ भेजेंगे; और जो सौग़ात कहोगे लेते आयेंगे। अब रुख़सत।

क—(थोड़ी दूर साथ जाके) अच्छा सरकार बन्दगी!

लाला जोती परशाद साख विठाके रुख़सत हुए, और कलवार और उसका आदमी खुश कि अच्छा किरायेदार मिला है। पेशगी किराया दे गया। और अभी महीना ख़त्म भी होने नहीं आया कि बाहर रुपये मौजूद। उनकी बड़ी तारीफ़ें की, वाह क्या आदमी है—लाखों में एक!

लाला जोती परशाद जो घर गये तो चचा ने कहा—तुमने कोई मकान किराये पर लिया है। हमने खबर पायी है कि मकान लिया है। यह कैसा मकान है और इसकी क्या जरूरत थी? उन्होंने कहा—जी, मैंने मकान नहीं लिया है। मकान एक दोस्त ने लिया है। मैंने दिलवा दिया है। अच्छा मकान है। चचा ने कहा—हाँ, वही मैं जो सोचता था कि भई यह मकान क्या होगा।

इतने में जोती परशाद के एक दिली दोस्त ने उनके चचा से उनके सामने कहा—क़िबला, अब इनका मिजाज़ सही है। मगर कोई ऐतबार नही। जहाँ एक दफ़ा आदमी सिड़ी हुआ, फिर उसका तमाम उम्र ऐतबार न करना चाहिए। एक शाही जर्राह सिड़ी हो गया। बड़े-बड़े हकीमों के इलाज में पाँच-छै महीने में फ़ायदा हुआ। एक रोज़ बादशाह को फ़स्द खुलवाने की जरूरत हुई। हकीमों से पूछा कि अगर फ़लाँ जर्राह से जो दीवाना हो गया था, फ़स्द खुलवाऊँ तो कोई हर्ज तो नहीं है। हकीमों ने कहा—हरगिज़ ऐसा इलाज न कीजिएगा। पागल का कोई एतबार नहीं। बादशाह ने उस जर्राह को बुलवाया, और कहा—हम फ़स्द खुलवाना चाहते हैं, उसने कहा—बेहतर; गुलाम हाज़िर है। पूछा—अगर खून जरा देर तक न बन्द हो तो क्या करो? कहा—जहाँपनाह, एक और गहरा चिर्का लगा दूँ। बस हकीमों ने आपस में इशारा किया, और बादशाह ने मुस्कराकर कहा—अच्छा जब जरूरत होगी, तो हम बुला लेंगे। जर्राह सात बार फ़र्शी सलाम करके रवाना हुआ। बादशाह ने कहा—खुदा ने बहुत बचाया। इस सौदाई का वाक़ई कोई एतबार नहीं।

ज—आपकी ऐसी-तैसी।

च—जी नहीं, अब फज़्ले-इलाही है।

दोस्त—हाँ, अब चेहरे से भी वह वहशत नहीं बरसती है।

च—मुझे कुछ कहना है। खूब बात याद आई। (अलैहदा ले जाकर) भला पागल के मुँह पर कोई पागल को पागल कहता है!

दोस्त—जी, मैं मज़ाक में कहता था।

च—उनके सामने तो ऐसी बात करनी ही न चाहिए।

दोस्त—अब मिजाज बिलकुल सही है।

अब सुनिये कि एक रोज कलवार का अपने नये मकान की तरफ से गुजर हुआ। सोचा कि चलो जरा ठाकुर चुलबुली सिंह से मिल लो; शायद कलकत्ते से आ गये हों। मुलाक़ात भी हो जायगी, खैरसल्ला भी दरयाफ़्त कर लेंगे। और शायद कोई सौग़ात लाये हों तो वह भी ले लेंगे। गये, तो दूर से मकान को बन्द पाया। समझे कि अभी कलकत्ते से नहीं पलटे।

मगर ताज्जुब हुआ कि इतने बड़े आदमी और घर का दरवाजा बन्द और ताला लगा हुआ। देखकर सोचा कि मालूम होता है कि आदमी किसी काम को बाहर गया है। दिन का वक़्त तो है ही; ताला बन्द करके चला गया। आता होगा। दो-एक आदमी साथ कलकत्ते गये होंगे।

यह सोचकर पटुए की दूकान पर बैठ गये।

कलवार—यह मोहल्ला बहुत आबाद है।

पटुआ—हाँ, यही दो चार मोहल्ले तो आबाद हैं। उधर चौक और नक्खास, इधर ये दो-तीन मोहल्ले; बस।

क—अमीनाबाद में आबादी बहुत है।

प—अमीनाबाद से बढ़कर कौन मोहल्ला है?

क—सदर में भी आबादी अच्छी है।

प—चौक और अमीनाबाद में बड़ी आबादी है।

क—हाँ बस चौक के इधर-उधर वीराना है।......ये ठाकुर जो इस सामनेवाले मकान में रहते थे वह क्या अभी कलकत्ते से नहीं पलटे?

प—ठाकुर कौन? ठाकुर तो यहाँ कोई नहीं रहते थे।

क—हाँ? तुम्हारे कहने से नहीं रहते थे!

प—हाँ, हमारे कहने से मोहल्ले भर में पूँछ लो! इसमें तो कोई लाला रहते थे।

क—लाला! लाला कौन? कोई बनिये थे कि कायस्थ? अब कब से नहीं रहते?.......यह चले क्यों गये?

प—और चले न जाते तो रहते कहाँ?

क—यह क्यों? अरे, यह इतना बड़ा मकान जो है। पल्टन की पल्टन इसमें रह सकती है।

प—अरे, तो, लाला, काहे में पल्टन रहती? वह तो जबसे आपने मकान उनके हाथ बेच डाला और उन्होंने एक शख़्स पार के रहने वालेके हाथ ईंट और लकड़ी और जोड़ियाँ खुदवाके बेच लीं, तब से खंडल पड़ा हुआ है, रहते वह काहे में?

क—क्या! खंडल!

प—जी हाँ, खंडल, अरे, चलकर देख न लो!

क—तुम कहते किस मकान को हो जी?

प—यही इस सामनेवाले मकान को, जो तुमने बनवाया है।

क—और यह तुम क्या कहते हो? बेचा किस पाजी ने?

प—बेचा या नहीं बेचा, मगर उन्होंने तो खोदके कोड़े कर लिये।

क—उनकी ऐसी तैसी।

प—चलो। क्या जाने क्या कहते हो!

इतने में पंसारी ने कहा—सलाम लाला! उन्होंने सलाम का जवाब दिया और कहा—मकान देखने आये हैं!

पंसारी—बनवाया क्या, और बेचा क्या, और अब देखने क्या आये हो!

क—अरे यारो, यह माजरा क्या है? जो है वह यही कहता है! क्या सचमुच मकान को उसने जड़ से खुदवा डाला?

आगे बढ़े तो एक भिश्ती मिला। कहा—लाला, यह क्या सूझी कि मकान बनवाके बेच-बाच डाला। मियाँ भिश्ती का इतना कहना था कि उन्होंने मकान की ड्योढ़ी देखी। बाहर से ताला। इधर-उधर खंडल। सन्नाटा पड़ा हुआ। न शहतीर न कड़ी। तख्ता, बर्टिगा, न जोड़ियाँ, न ईंट। देखकर बहुत चौंके!—खाली जमीन और एक बड़ा-सा दरवाज़ा, और उसमें ताला।

पटुआ—क्या मकान बेचा था या गिरी रक्खा था? उन्होंने तो खोद-खाद के लकड़ी दरवाजे ईंट-पींट सब को पटेल डाला।

क—हमको तो मार डाला। कहीं का न रक्खा।

पंसारी—और अब तक क्या सोते थे?

क—कौन जानता था कि इतना बड़ा बेइमान निकलेगा?

पटुआ—मार ही डाला तुमको।

क—हम जानते हैं वह कलकत्ते गये और आदमियों के सिपुर्द कर गये; आदमियों ने बेच डाला और भाग गये। हम तो कहीं के न रहे। और तुम लोगों ने भी न रोका। हमसे न कहा।

पंसारी—यह क्या जानते थे! हम तो जानते थे कि मकान बिक गया।

क—पाऊँ तो कच्चा ही खा जाऊँ। नाम तो दुकान पर लिखा हुआ है और घर का पता भी लिखा है, और छावनी में नौकर भी था।

पंसारी—तो फिर उनका काम नहीं है। आदमियों ने पाजीपना किया होगा!

क—हमारा गला तो काट लिया। मगर है आदमियों ही का काम! क्योंकि वह ऐसे आदमी नहीं हैं। नेक आदमी हैं।

पटुआ—जहाँ का पता मालूम हो, बस वहीं पूछिये।

क—सदर जाएँगे। वहाँ मुर्ग़ी-अंडों की आढ़त है।

बड़े लाला रो-पीटके घर आये। वहाँ आदमी से कहा। उसको यक़ीन न आया। लड़के से लाला ने कहा; लड़के को बेहद ही रंज हुआ। तीनों मिलकर फिर उस मुक़ाम पर वापिस गये। लड़के ने पड़ोसियों से दरियाफ़्त करना शुरू किया।

लड़का—अरे यार घनस्याम, तुम्हारी दुकान से तो नुस्खा-वुस्खा बँधवाने आते होंगे। कुछ जानते हो कि यह हमारा गला काटके कहाँ चल दिया!

घनस्याम (पन्सारी)—वह तो यहाँ रहते ही बहुत कम थे। हमने तो दो दफ़ा देखा था; बस। यह कार्रवाई तो खुले-बन्दों हुई।

लड़का—और तुम लोग क्या समझे थे?

प—हम सोचते थे कि तुमको यह हुआ क्या? दिवाला क्यों निकाल दिया!

लड़का—और भला कोई उनके पास आता जाता था?

प—हमने तो कोई नहीं देखा था।

पटुआ—अरे भाई, वह तो निकलता ही कम था। हमने अच्छी तरह सूरत भी नहीं देखी थी। मकान बेचा, ईंटे, कड़ियाँ बिक गई और तुमने कानों-कान नहीं सुना?

लड़का—सदर जाते हैं हम। पता-वता वहाँ ही मिलेगा।

आदमी—हमसे तो कहता था कि मैं उस मकान को दिलकुशा बना दूँगा।

क—बना गया ना? 'दिलकुशा' भी उजाड़ है। इसको भी उजाड़ कर गया। आदमी बड़ा चलित्तरबाज निकला! क्या झप् से बारह टेंट से निकाले और खरा असामी बना! और फिर महीना होने नहीं पाया कि चट से बारह और दिये!

क—हमको बस यह चाट देके मार डाला।

लड़का—कहीं का न रक्खा।

इतने में एक कुवड़िन ने आके कहा कि वह तो जमीन भी बेचे डालता था, मगर जिसने ईंट और लकड़ी मोल ली, उसने जो इधर-उधर तहकीकात की तो मालूम हुआ कि पराया मकान है। बस बेंच-वाच के चलता हुआ। लोगों ने पूछा कहाँ रहता है। कहा—यह तो मुझे नहीं मालूम, मगर एक दिन उसने सालन में चचींडे इसी मकान में पकाए थे, तो उसका नौकर चचींडे मेरी ही दुकान से ले गया था। कोई मुसलमान है।

लाला को न लाला जोती परशाद का पता यहाँ मिला और न ईंट लकड़ी के खरीदार का। यहाँ से इक्का करके सदर चले। सदर में पहुँचे, तो एक कलवार के मकान पर गये। उससे अपनी मुसीबत का हाल कहा और साथ लिया। इधर-उधर ठाकुर चुलबुली सिंह का हाल पूछा। कहीं पता न चला।

और पहले ही दे गया। और फिर बीसवें दिन आके बारह रुपये रख दिये।

मि—कहीं ढूंढ़के निकालना चाहिए।

क—बड़ा धोखा खाया। जो मिले तो चचा ही बनाके छोड़ूं बचाजी को! —और कहता था कि मकान को परिस्तान बनाऊँगा!

मि—भई ऐसी दिल्लगी तो हमने नहीं सुनी थी।

रो-पीटकर यहाँ से भी ये रवाना हुए। अब और भी मायूसी हो गई। राह में दो-चार आदमियों से ज़िक्र किया। सबने इनको उल्लू बनाया कि भई वाह, क्या घोड़े बेचके सोये थे; कि दस क़दम पर मकान और किसी को कानों-कान खबर नहीं; और सिर्फ बिक ही नहीं गया, बल्कि खुद-खुदाके ईंटें और लकड़ी और जोड़ियाँ तक बिक गईं। अब जाके पुलिस में रपट लिखाओ, कि तहकीक़ात हो।

यहाँ से ये हैरान-परेशान पुलिस में गये। वहाँ से एक हेड और दो जवान तहक़ीक़ात को भेजे गये। उन्होंने खंडल को देखकर कहा—मुमकिन नहीं कि किसी का मकान खुद जाय और उसको कानों-कान खबर न हो। यह नई बात है। यह वारदात कभी नहीं हुई थी। ड्योढ़ी का दरवाज़ा खोला तो एक काग़ज़ पर यह शेर और इबारत खुशखत लिखी हुई थी:—

"लाला साहब, मिजाज़ कैसी है?
और हवेली—वह ऐसी-तैसी है!
अंडा क्यों आपका य' ढीला है?
सच कहो—क्या मकाँ पटीला है!
कहीं कुत्ते हैं और कहीं लंगूर;
रमना इक बन गया मकान, हज़ूर:
न है साये का नाम, ना दालान:
जिस तरफ देखिये—खुला मैदान।
आक्शन कर दिया बजा कर ढोल,
बिक गई ईंट कौड़ियों के मोल!
सच कहो! क्या तुम्हें पछाड़ा है!
है मकाँ या कोई अखाड़ा है!
कुश्तियाँ मैं निकालता हूँ नित;
कैसा मारा है चारों शाने चित!
जोड़ियाँ-खिड़कियाँ भी बेचीं सब:
है मेरे बायें हाथ का करतब:
हूँ मैं धोखे-धड़ी में तेरा बाप।
क्या मखादीन बन गये थे आप?

हैं ज़माने में जिस क़दर कलवार
हूँ मैं उन सब के नाम से बेज़ार।
उनका सब माल मैं लुटा दूँगा
मुफ़लिसा-बेग उन्हें बना दूँगा!
कि, ये गीदी पिला के इक चुल्लू
आदमी को बनाते हैं उल्लू
इनकी ख्वारी में है खुशी मेरी
नम्दा बाँधूँगा दुम में—हत्तेरी!

यह पढ़कर पुलिसवालों ने क़हक़हा लगाया; और मोहल्लेवालों ने भी हँसना शुरू किया। और कलवार और उसका आदमी बहुत झल्लाया। शहर भर में इसी का चर्चा था। घर-घर यही ज़िक्र था—यही शोर था! जो सुनता था, लोट जाता था कि वाह, क्या खरी असामी मिला! बारह रुपये पहले ठहराये; बारह बीस दिन के बाद दिये—और मकान का मकान घुमा लिया! बाज़ शौक़ीन खुद उस मुक़ाम पर गये और खुदे हुए मकान और उस पर लिखी हुई नज़्म को देखकर बहुत ही हँसे, लोट-लोट गये, पेट में बल पड़-पड़ गये कि वाह रे उस्ताद! वल्लाह, क्या सूझी है! अब किसी को मकान काहे को बे-समझे-बूझे कोई देगा! क्योंकि शहर भर में डुग्गी पिट गई। कलवार ने बड़ी कोशिश की कि ठाकुर चुलबुली सिंह कहीं मिलें, मगर उनका पता कहाँ! जहाँ कोई शख्स किसी मालिक-मकान के पास गया कि मकान किराये पर दीजिए—तो छूटते ही वह कहता था कि मकान तो हाज़िर है मगर कहीं ठाकुर चुलबुली सिंह के भाई न बन जाइएगा। और जब कभी कोई मालिक-मकान किसी किरायेदार को दिक़ करे—बरसात के दिन हैं और मकान टपक रहा है, या मरम्मत वग़ैरह नहीं करता—तो किरायेदार झल्लाके कहता था कि ठाकुर चुलबुली सिंह की तरह ग़च्चा न दिया हो तो सही! हत्तेरे की! बहुत से जालियों और उठाईगीरों, चोरों-उचक्कों का हाल सुना होगा, मगर लाला जोती परशाद साहब ने सब के कान काटे। और दिल्लगी यह कि यह सब कारवाई इस सबब से नहीं की कि रुपया मिले, या बेइमानी करें; नहीं। मतलब सिर्फ यही था कि शराबी और कलवार दोनों की जिल्लत हो। और कलवार ऐसे मुफ़लिस हो जायें कि टका उनके पल्ले न रहे। इस हुश्शूपने को मुलाहज़ा फरमाइये कि [illegible] पराये बदशगून के लिये अपनी नाक कटाई।

———

पाँचवाँ दौरा

ग़र्क़ाबा

करेंगे प्यारे से प्यार अपने, किसी के बावा का डर नहीं है।
पियेंगे मय मस्जिदों में जाकर किसी की खाला का घर नहीं है!

एक खुशनुमा बाग़ में ठीक दोपहर के वक्त एक रईस बैठे हुए बड़े शौक़ और ज़ौक़ के साथ शराब का शग़ल कर रहे थे। शीशे के कई गिलास क़रीने के साथ चुने हुए थे, और बोतलें तालाब में पैर रही थीं। और थोड़ी दूर पर कई बावर्ची हर तरह के कबाब पका रहे थे और हज़ूर रईस ठाठ के साथ बैठे हुए मज़े-मज़े से खा रहे थे।

इतने में एक खिदमतगार ने अर्ज की कि—हज़ूर, अकेला सो बावला, दुकेला सो तंग; तिकेला सो खटपट, चौकेला सो जंग। और शराब का शग़ल तो तनहाई का शग़ल नहीं है। जब तक दो-चार दोस्त न बैठे हों, तब तक लुत्फ़ इसका क्या?

रईस ने कहा—अच्छा, जाके फलाँ-फलाँ दोस्त को बुलाओ। यह न कहना कि यहाँ क्या हो रहा है। सिर्फ़ इतना कहना कि आपको अभी-अभी बुलाया है। बड़ा ज़रूरी काम है। साथ ही लाओ।

खिदमतगार जहाँ-जहाँ गया, और रईस का नाम लिया कि उन्होंने तलब किया है, वहाँ पहले सुननेवाले को बहुत ही ताज्जुब हुआ कि वहाँ कहाँ!

१—अरे उनका तो पता ही नहीं था कहीं!

२—यह तुमने किसका नाम लिया है?

३—पूछो तो कि क्यों बुलाया है?

खिदमतगार—मुझको मना कर दिया है कि न बताना, कि कहाँ हैं, और न यह कहना कि क्या कर रहे हैं; मगर यह कह देना कि बड़ा ज़रूरी काम है, जल्द चलिये।

१—और किस-किसको बुलाया है?

२—बैठ जाओ और सब हाल बताओ।

३—तुम बताते क्यों नहीं?

खि—अब चलके हज़ूर आप ही देख लें न। आप तीनों साहब चलें, मैं और जगह जाता हूँ। मगर जल्द जाइये।

खिदमतगार तो रवाना हुआ, और ये तीनों आदमी पालकी गाड़ी पर सवार होकर चले। वहाँ पहुँचे तो आदमियों से दरियाफ़्त किया कि कहाँ हैं?

जवाब—जी, वह सामने तालाब पर है।

सवाल—वहां हौज़ पर इस दोपहरिया और गर्मी में क्या हो रहा है?

ज—सरकार जाके देख लें।

स—कब से बैठे हैं?

ज—मालूम नहीं।

स—(दूसरे नौकर से) तुम जानते हो, जी?

ज—हुज़ूर, कोई नहीं जानता। हम नौकर नीच लोग हैं।

स—क्या तुमको मना कर दिया है कि न बताना?

ज—क्या मालूम, सरकार।

इस पर एक दोस्त ने कहा—अरे मियाँ इस हुज्जत से क्या फायदा? सामने ही तो नहर है। चलके देख लो, ना।

सब के सब चलके तालाब के पास पहुँचे, और थक् से रह गये।

१—अरे!! यह हम सपना देख रहे हैं कि सचमुच आप खुद-बदौलत सामने बैठे हैं! या खुदा!

२—(मारे हँसी के) मार डाला!

३—(ताज्जुब के साथ) अजी हज़रत, तसलीम!

१—अरे मियाँ, यह क्या हो रहा है?

रईस—आपका नाम भी अन्धों की फ़ेहरिस्त में लिख लिया। बीरबल ने एक दिन बादशाह से कहा—हुज़ूर, आपके शहर में सब अन्धे ही अन्धे हैं। और सबूत इसका यों दिया कि एक दिन ऐन चौराहे पर बैठ कर मूंज की रस्सी बटने लगे। अब जो आता है, वह पूछता है: राजा बीरबल, यह क्या हो रहा है? बीरबल ने उन सब को अकबर के पास भेज दिया और कहा: जहांपनाह, साफ़ ये लोग देख रहे थे कि मैं रस्सी बट रहा हूं; और जो जाता है वह पूछता है—राजा बीरबल, यह क्या कर रहे हो! इसी तरह आप लोग भी आंखों के अन्धे, नाम नयनसुख हैं!

१—अरे यार, तुम और गज़ब?

२—और यह दोपहरिया और यह गर्मी!!

साक़ी के मैं ज़रूर डराने से डर गया!
जामे-शराब लाये भी!—साक़ी किधर गया?
अरे, यह मौसम तोबा करने का नहीं। बहार जोश पर है!
बग़ल में हूँ तोबा दबाए हुए!
कलेजे से बोतल लगाए हुए!

१—लाला जोती परशाद साहब हज़ूर ही का नाम है?

जो—जनाब, खाकसार ही को कहते हैं।

२—अरे, भई यह क्या काया-पलट हुई!

जो—मिजाज़ ही तो है; तबीअत ही तो है।

३—वल्लाह, अगर हम अपनी आँखों न देखते तो किस मरदूद को यक़ीन आता! अरे, यह तुमको पहले क्या सूझी थी और अब क्या सूझी है?

जो—बादह बिनोश! इन सब बातों को जाने दो! अरे, कबाब लाओ! लो जी, और जाम लो! आज हम आप सब साहबों को रँगेंगे।

इन दोस्तों में से एक की नज़र जो तालाब की तरफ़ पड़ी तो कहा—ओ हो हो हो! अरे यारो, इधर तो देखो! यह तालाब में क्या हो रहा है? भई ये तो कई बोतलें पैर रही हैं।

सब खिलखिलाकर हँस पड़े। एक ने कहा—जो बात की खुदा की क़सम लाजवाब की! पापोश में लगाई किरन आफताब की!

दूसरा बोला—बते-मय‡ इसी का नाम है:

तीसरा—क्या आज पैराकी का मेला है?

१—भई, खूब कही।

२—वल्लाह, यह फबती बे मसल हुई!

३—जो कहता हूँ ऐसी ही कहता हूँ! यह मालूम होता है कि पैराक लोग मल्लाही चीर रहे हैं; खड़ी लगा रहे हैं। यह ग़ोता लगाया, वो उभरे! कभी उभरे, कभी डूबे महे-नौ की किश्ती!

जो—मैं ग़ौर करता हूँ, वल्लाह, यह क्या पागलपन था! लाहौल बिला क़ुव्वत! यह दिमाग़ को बैठे-बैठे क्या हो गया था! बोतलवाले की बोतलें तोड़ डालीं, कलवार की दुकान की दुकान को ग़ारत कर डाला। मठूरें, बोतलें, पीपे, तोड़ डाले, औंधा दिये। उसके आदमी को हिरनवाली सरा दौड़ा दिया। एक मकान की ईंटें बेच डालीं, कड़ियाँ खुदवाके पटेल लीं। एक जुर्म थोड़ा ही किया।

गुलचीं ने दो गुनाह किये एक छोड़ के
बुलबुल का दिल शिकस्ता किया गुल को तोड़के!

१—यह हमने नहीं सुना था? क्या किया? कलवार की दूकान लुटा दीं?

‡ दारू की बत्तख।

जो—एक दूकान लुटाना क्या मानी? अरे, मकान किराये पर लिया, और ईंटें, कड़ियां और शहतीर और जोड़ियां—सब के कौड़े कर डाले!

१—वल्लाह, सच कहते हो?

जो—क़सम ख़ुदा की, सच कहता हूँ।

२—और मालिक-मकान से क्या कहा?

जो—उस सुसरे को अब ख़बर हुई होगी। आग हो गया होगा। सर पीट लिया होगा।

२—जिसका मकान, सुदवा के बेच लोगे, वह क्या कहेगा?

३—ग़ज़ब किया, वल्लाह! आप क़ैद हो जायेंगे एक रोज़! लाहौल विला क़ुव्वत!

१—वह तुमको जानता है?

जो—हां जानता है कि हमारा नाम चुलबुली सिंह है और जात के हम ठाकुर हैं। और मुल्तान में मकान है।

जिसने सुना वह लोट गया।

१—मालिक-मकान को इन सब बातों का यक़ीन हो गया?

२—बड़ा पागल है, भई!

३—अब आख़िर उसको कुछ हुनर मालूम हुआ कि तुम्हारी तहक़ीक़ात कर रहा है, तलाश कर रहा है। जिसके हाथ तुमने बेचा वह क्या कहेगा?

जो—न तो वह हमारा नाम जानता है, न शकल पहचानता है। हम जब दुकान पर गये तो सर पर मुंडासा, पांव में पंजाबी जूता, एक चुस्त घुटन्ना और हाथों में मोटे-मोटे कड़े। पूरे सिंह बने हुए।

१—अच्छा गप्पा दिया! जनून की हरकत थी।

२—अच्छा अब तुम कुछ दिन छिपे रहो!

३—गुरु फ़ौजदारी का मुक़दमा है। कहीं वरन को भेज दिये जाओ! क्या ग़ज़ब किया!

जो—भई, अब ज़्यादा न ग़ज़ब करो! जो बीत गई उसको छोड़ो! और इसमें आपको या किसी को [illegible] का कौन-सा मौका है? [illegible] तो ये ही। [illegible] की बात न फ़रियाद: [illegible] बैठेगा। हमने कुछ [illegible] में थोड़ा ही ऐसा किया!

१—अच्छा जी, आप चले। भई ये जवान बड़े मज़ेदार हैं।

२—ऐसी [illegible] है कि [illegible]!

३—जी हां, हां! अच्छा, अब यह बताओ कि वह [illegible] कौन था जिसकी दुकान [illegible] थी?

जो—[illegible] फिर कहेंगे। [illegible] तो सुनिये कि हमने उसे [illegible] कि हम कौन हैं: [illegible] हैं। मुर्गी और अंडों का ठेका।

इस पर बड़ा फ़रमाइशी क़हक़हा पड़ा। कि इतने में वह दोस्त भी आये, जिनको खितमतगार बुलाने गया था—एक वकील, दूसरे डाक्टर। देखते हैं तो लाला जोती परशाद जो इस क़दर परहेज़गार और शराब के दुश्मन हो गये थे, वह हौज़ पर बैठे पी रहे हैं। डाक्टर ने कहा—

पीते देर, न तोबा करते : अच्छे हम हैं, अच्छी तोबा!

वकील ने हँस कर कहा—मिजाज़ शरीफ!—आखिर यह काया-पलट कैसी हो गई, यार?

जो—यह हमको डाक्टर साहब से दरयाफ़्त करना चाहिये!

डाक्टर—जब आपके दिमाग़ का इम्तहान लिया जाय तो मालूम हो।

जो—मगर आपलोगों ने बड़ी देर की।

वकील—हमारे पास एक कलवार आ गया। रोता था बेचारा। उसको कोई शरीफज़ादे ग़प्पा दे गये। और गहरा चरका दिया है। ऐसा, कि न कभी देखा, न सुना। वाह रे हमारे शहर! भई, अजब मुक़ाम है? अरे मियाँ, किराये पर मकान लिया, मकान को खुदवा के लकड़ी-ईंट सब पटेल डालीं। और अब पता नहीं।

१—कौन शख्स था भई?

२—(जो० की तरफ खुफ़िया इशारा करके) अजी कोई होगा! लो डाक्टर जाम पियो। जो जैसा करेगा वह वैसा पायेगा। मकान पटेल लिया, पटेल लिया। इन्सान की तबीअत का भी कोई ठिकाना नहीं। कभी कुछ, कभी कुछ।

मगर लाला जोतीपरशाद साहब की तबीअत का भी रंग देखिये। इनकी तबीअत ने गिरगिट को भी मात कर दिया। धूप-छाँव की भी कोई हक़ीक़त नहीं रही। घड़ी में कुछ है, घड़ी में कुछ है! ज़माने की तरह रंग बदलने वाले ऐसे ही होते हैं। या तो शराब के नाम से नफ़रत थी; बोतल की सूरत के दुश्मन। यहाँ तक कि घर में पेशाब की शीशी तक तोड़ डाली, कलवारीखाने में जाके दाँद मचाई। और अब यह कैफ़ियत है कि रिन्द बदमस्त जमा हैं, और दिल्लगी हो रही है, और चुहल हो रही है, और दौर चल रहा है। मज़ाक़ हो ही रहा था कि एक दोस्त ने कहा—

भाई साहब,

गुल बेरुखे-यार खुश न बाशद;
ब–बादह् बहार खुश न बाशद।*

दूसरा बोला—हमारा भी साद है।

तीसरे ने कहा—हम भी रेज़ोल्यूशन को सेकेन्ड करते हैं।

लाला जोती परशाद ने फ़ौरन लाला रुख नाम की एक औरत को, जो जवान

*मतलब यह कि यार के बिना सब बहार फीकी।

और ख़ूबसूरत थी और अच्छा गाती थी, बुलवाया। दोस्तों ने पूछा—यार, यह पीती है? उन्होंने कहा—हाँ, ख़ूब पीती है। एक बोला—वे इसके सोहबत का लुत्फ़ कहाँ? दूसरे ने कहा—वाह, वह माशूक़ क्या, जो इसका शग़ल न करे। गूँगी सोहबत किस काम की!

एक दोस्त ने नशे की हालत में यों उपच की ली:—

क्या ही समाँ है जाँफ़िज़ाँ : रिन्द हैं जमा जा-ब-जा
बाग़ है एक दिलकशा : सौते-हज़ार† दिलरुबा
बज़्म में है, अजीब रंग : बजती कहीं है जलतरंग
गाती है कोई शोख़-शंग : तन-तनतन तनन-तना!
बन के चली कोई दुल्हन : तन के चला कोई सजन
है कोई नल, कोई दमन : बुलबुलो-गुल हैं एकजा
मर्द हैं मस्त और ग़नी : औरतें सब बनी-ठनी
कोई बना, कोई बनी : रंगे-शराब है जमा
साक़ीए-लाला फ़ाम** है : लाला-रुख़ उसका नाम है
हाथ में सब के जाम है : उसपे गजक का है मज़ा

१—भई पोचगोई‡ में तुम सब से बढ़ गये।

२—क्या दाद दी है, माशेअल्लाह।

३—पागल हैं ये। वल्लाह, यह तर्ज़ हमको बहुत पसन्द है।

२—मज़ाक तो है ही, मगर उम्दा मज़ाक है। भोंडा मज़ाक नहीं है।

बन के चली कोई दुल्हन : तन के चला कोई सजन
है कोई नल, कोई दमन : बुलबुलो-गुल है एकजा

१—इसमें क्या लुत्फ़ है?

२—आख़िर, ऐसी-तैसी! हाँ, दिल्लगी के दो-चार लफ़्ज़ अगर निकाल दिये जायें, और उनकी जगह पर मुनासिब लफ़्ज़ लाये जायें तो फिर देखिये कि कैसी फड़कती हुई ग़ज़ल, चोटी की, हो जाती है।

१—अरे जा! फड़कती हुई ग़ज़ल तूने सुनी भी नहीं है—

जिसे उस शोख़ ने [illegible]

४—पहले मिसरे में तो उस शोख है, और दूसरे में तेरे बाज़ू पर, छी! शायरी है!!

जोती—मोहमल* शेर है। भोंडा मज़ाक है।

३—भोंडा सा भोंडा।

इतने में एक साहब जो ज़ीने पर बैठे थे, हौज़ में लुढ़क गये : जल्ले-जलाल हू! एक ग़ोता खाया—मुबारक! दूसरा खाया—मुबारक शुद! किसी तरह दो ग़ोते खाके उभरे! खुद भी हँसे और हाज़रीन ने भी क़हक़हा लगाया। जितने आदमी बैठे थे, मारे हँसी के लोटने लगे। और लालारुख ने तालियाँ बजाकर खूब ज़ोर से क़हक़हा लगाया, और वह बहुत ही झेंपे। एक ने कहा—भई, खूब शुद! दूसरा बोला—

कश्तिये-जाफ़र ज़टल्ली दर-भँवर उफ़्तादा अस्त
डुबका-डुबका मी कुनद, ए अज-तवज्जह पारकुन!

तीसरे ने कहा—मालूम होता है कि हौज़ के पैराकुओं से मुक़ाबला करने गये थे। ज़रा डाक्टर को दिखा तो लो। हड्डी-पसली तो बच गई, या मरम्मत-बरम्मत की ज़रूरत है। हाथ शिकस्ता बह्र‡, और पाँव तैमूरलंग, और टाँग से लंगड़दीन, घोड़े का ज़ीन!

ये बातें हो ही रही थीं कि लाला जोती परशाद साहब बहादुर के चचाजान इधर आ निकले। अब फ़रमाइये। उनको कौन रोके, सीधे दर्राये हुए घुस गये। देखते क्या हैं कि हौज़ पर जश्न हो रहा है। शराब की बोतलें भी पैर रही हैं और लोग भी धुत और ग़ैन बैठे हुए हैं, और शेरो-शायरी भी हो रही है। और एक चमक्को भी बनी-ठनी बैठी है। उनको देखकर लालारुख भागने लगी, मगर चचाजान ने कहा—

यह क्यों? ये भागती क्यों हैं? बुला लो!

डाक्टर साहब ने कहा—क़िबला-ओ-काबा, ये गाने के लिये बुलवाई गई हैं।

चचा—क्या मुज़ायका है।....जोती परशाद मिजाज़ कैसा है?

जो—क़िबला-ओ-काबा! एक जाम हज़ूर मेरे हाथ से पी लें!

चचा—लाओ बेटा। बड़ी खुशी से!

च—(पीकर) अब यह कहिये डाक्टर साहब, इनका मिजाज़ कैसा है?

डाक्टर—यक़ीन तो है, मिजाज़ रास्ते पर आ रहा है।

१—अब इत्मीमान रखिये।

२—मैं हज़ूर को मुबारकबाद देना चाहता हूँ।

चचा—है तो ऐसी ही बात।

जो—घर में इत्तला कर दीजिए कि अब दिमाग़ सही हो गया।

---

*निरर्थक। ‡शिकस्ता बह्र : उखड़ा-उखड़ा छन्द।

चचा—शुक्र है ख़ुदा का।

एक साहब जो हौज़ में ग़ोते खा चुके थे, उसके बाद कमरे में जाके लेटे थे, अब चौंक पड़े और एक बेतुकी हाँक लगाई—ग़रग़राग़र! फ़रफ़राफ़र! टांय टांय ग़रफ़िश्श्! टल्लेनवीसी भई टल्लेनवीसी!

जोती परशाद के चचा ने हँसकर कहा—जंगबाज खाँ है!

'जंगबाज़ खाँ' इन्होंने शराब का नाम रख दिया था—बल्कि शराब की उस हालत को, जिसमें इन्सान अपने आपे में नहीं रहता है, और बेवक़ूफ़ हो जाता है। यह बेतुकी हाँक जो इन्होंने लगाई, तो चचा समझ गये कि जंगबाज़ खानी हालत है।

यह हज़रत अब कमरे से बाहर आये और लालारुख को देखकर कहा—लो जाने-जाँ, एक बोसा हमको दे डालो—बस एक! ज्यादा चूमाचाटी नहीं।

उस पर वकील साहब ने उठकर कान में कहा—अरे भाई, यह क्या अन्धेर करते हो! जोती परशाद के चचा आये हैं!

जवाब—जोतीपरशाद की ऐसी-तैसी!

—अरे मियाँ उनके चचा आये हैं।

जवाब—चचा की भी ऐसी तैसी।

—हाय!! क्या जनून हो गया है!

जवाब—जनून और चचा दोनों की!

—(मुँह हाथों से बन्द करके) अरे चुप!

चचा ने कहा—रहने दीजिए। इस वक़्त इनको माफ़ है! अन्धे की दाद न फ़रियाद! अन्धा मार बैठेगा!

उन्होंने फ़रमाया—फ़रियाद की भी ऐसी-तैसी। अन्धे की भी ऐसी-तैसी।

चचा ने जो यह कैफ़ियत देखी तो समझे कि लफ़ंगों की सोहबत में बैठना अच्छा नहीं होता। यहाँ से चलना चाहिए; और उठके चले गये। जोती परशाद ने अपनी सरगत का पूरा-पूरा हाल दोस्तों से बयान कर दिया कि बोतलवाले की दावतें कीं और उसको लाठियों के फूल दोहराया और कलवार की दुकान की सही [illegible] पर सुनाई, कि वो मशहूर [illegible] और बोतलों के आने-जाने

३—सैयाँ भये कुतवाल; अब डर काहे का !

४—यार शराव अब नहीं है !

५—बस अब फ़िज़ूल है। बहुत हो गई।

जो—भाई साहब, आज तो रात भर उड़ेगी।

१—कुछ मरना थोड़े ही है। हाँ खाना मगवाइए !

२—खाने के साथ कुछ तो होना चाहिए !

३—सैयाँ भए कोतवाल !

४—इनको सबसे ज़्यादा तेज़ है। इनको अब न मिले !

इतने में कबाब और पूरियाँ आईं।

डाक्टर—मैं इन हिन्दुओं की पूरियों से जलता हूँ।

लालारुख—और हमको कबाबों के साथ पूरी ही अच्छी मालूम होती है। गर्मागम कबाब और गर्मागम पूरी और चटनी !

वकील—भजिया तो जैसी हिन्दू हलवाइयों के हाँ होती है, वैसी कहीं नहीं होती। लाख तदबीर करो वह ज़ायक़ा नहीं आता।

१—अब इस वक़्त सब ग़ैन हैं। मगर इतने हवास हैं कि बातें कर रहे हैं। अगर एक दौर कड़क के और चला, तो बस :—

सागर को मेरे हाथ से लेना कि चला मैं !

३—सैयाँ भये कोतवाल, अब डर काहे का ! अरे सैयाँ—ओ सैयाँ !

जो—(हँसकर)—इनकी तो रसीद आ गई।

१—जी हाँ, पहुँच गई।

२—अभी नहीं। अभी खजूर में हैं। एक जाम की कसर है।

३—(बहुत खिलखिलाकर हँसे)— सैयाँ भये कोतवाल रे !

इतने में लालारुख कमरे के अन्दर गई और इधर-उधर से ढूँढ़कर बरांडी की बोतल ले ही आई !

१—अरे यार मार डाला ! अब सब डूबे !

२—डूबे तो हैं ही। यह कहो कि अब पता भी न मिलेगा ! अब तक तो ख़ैर सहारे से उभर भी सकते थे। मगर अब ऐसे डूबेंगे कि—ग़र्क़ाब ! बल्के : गड़काब !

जो—हाँ सामान तो ऐसे ही नज़र आते हैं। ये पा कहाँ से गईं ?

लालारुख—हम तो पाताल की खबर लानेवाले हैं।

जो—मगर तुम्हारी थाह किसी ने न पाई !

३—सैयाँ भये कोतवाल !' अरे, हाँ।

१—इनको न देना, नहीं ये कोतवाली ही जायेंगे !

इस फ़िक़रे पर सब ने क़हक़हा लगाया। मगर वह गाया ही किये—'सैयाँ भये कोतवाल, अब डर काहे का !' लालारुख ने सबसे पहले इन्हीं को

जाम दिया। बाद में खुद लिया। और यों ही एक के बाद एक दौर चलने लगा। और जिन-जिनको बहुत तेज नहीं हुई थी उन्होंने खाना भी खाया। जो किसी क़दर चूर थे, उन्होंने कुछ यों ही से दो-चार निवाले खाये; और जो सैंयां भये कोतवाल की तरह सातवें आसमान की सैर कर रहे थे, उनके यहाँ रमजान-शरीफ़ ने डेरे डाल दिये! सैंयां तो लोट गये। उनका पता नहीं। बहुत दूर निकल गये। और छकड़े पर लादे नहीं गये, रेल पर गये। स्पेशल ट्रेन पर। मारामार। इनके बाद दूसरे साहब भी रवाना वारद। मगर ये भटियारे के टट्टू पर गये। उस तेजी और फ़र्राटे के साथ नहीं गये। दो बजे तक जमी। उसके बाद दो के सिवाय किसी को उठने-सरकने की ताक़त न रही। जिन दो के हवास बाक़ी थे उनमें एक लालरुख और एक डाक्टर नूर खाँ थे।

लालरुख—आज बड़ी पिलाई हुई।

डा—मगर तुम भी कितनी चंचल हो!

ला—चंचल सी चंचल! फूफी-अम्मा कहती हैं, लालरुख! क्या जाने तू माँ के पेट में नौ महीने तक क्योंकर रही: बोटी-बोटी फड़कती है। मैंने कहा—शोख़ी तो मेरी घुट्टी में पड़ी है:

> मासूर हूँ शोख़ी से शरारत से भरी हूँ!
> धानी मेरी पोशाक है, मैं सब्जपरी हूँ!

डा—सच कहते हैं कि बड़ी चंचल छोकरी है!

ला—छोकरी! च-चुग!! अच्छे-अच्छों को छोकरा बनाके छोड़ दूँ!

डा—(हँसकर) है तो ऐसा ही!

इतने में आवाज़ आई—'सैंयां भये कोतवाल!' और लालरुख के मुँह से फ़ौरन निकला—'अरे, ये फिर जीते हो गये!' इस पर डाक्टर ज़ोर से हँस पड़े और कहा—[illegible] मुर्दा तो ज़िन्दा हुआ!

बस पुकार सुनना फिर तो सोए तो जागना सुबह तक क़सम है! सोये, तो उठना मालूम!—मुर्दों से शर्त बांधकर सोये! डाक्टर और लालरुख ने फिर थोड़ी-थोड़ी पी, और [illegible] लेटे।

और खिड़े, और बहुत-सी ठंडी चीजें हैं। और रंग सुनहरी; और बू का नाम नहीं। बल्कि खुशबू। डकार ऐसी उम्दा कि वाह!

थोड़ी देर में आदमी बोतल लेकर आया।

ला—अरे, अब तड़के-तड़के न पी!

जो—आज की माफ़ है। लाओ जी!

डा—बड़े दहादस्त पीनेवाले हो, भई!

ला—सब न पियो। कहा मानो! नहीं, मर जाओगे।

डा—कैसी पागलपने की बातें करती हो!

ला—अब ये माननेवाले हैं भला!—तुम न पियो!

जो—वाह, ये न पियें, तो छाती पे चढ़के पिलाऊँ। हम तो डूबें, आप लोग मज़े में हैं। यह कौन बात है! सब के पहले तो मैं लालारुख ही को दूँगा। लीजिए; इनकार किया और मैं आग हो गया, बस!

ला—(जाम लेकर) इनकार इस चीज़ से नौसिखिये करते हैं। यहाँ हरदम वर्क़। वर्क़दम। (पीकर) वाह, क्या चीज़ है, वल्लाह!

जो—अब इन मुर्दों को तो जगाओ, डाक्टर!

डा—इस काम में लालारुख ही वर्क़ हैं!

ला—ए हम तो जगा दें इनके गड़े मुर्दों को!

सब के पहले सैंयाँ को जगाया। वही, जो बार-बार चौंक-चौंक उठते थे और गाते थे, सैंयाँ भये कोतवाल, अब डर काहे का! दो-चार बार जगाया, न जागे तो लालारुख ने कहा—यह मुआ मुर्दों से शर्त बाँधके सोया है! (पानी लोटे से सर पर डाल कर) हत्तेरे की!

वह कुलबुला के उठ बैठे।

ला—बन्दगी, बड़े मियाँ! मिजाज अच्छे?

जवाब—(मुस्कराकर) सोने दो, तबीअत सुस्त है। तोबा ही भली!

ला—अरे, इससे तो सुस्ती जाती रहती है।

जो—हाँ, हाँ; आग का जला, आग ही से अच्छा होता है।

जवाब—और साँप का काटा रस्सी से डरता है।

डा—नहीं, इस वक़्त थोड़ी-सी ज़रूर लेनी चाहिए।

ला—लो डाक्टर ने भी कह दिया, अब क्या है!

जवाब—अच्छा लाओ। पंच कहें बिल्ली तो बिल्ली ही सही। (पीकर) खुदा की क़सम, आँखें खुल गईं। आबे-हयात है! यह कहाँ से आई, भई? यह तो नई चीज़ है। वल्लाह, क्या जायका है!

जो—अब औरों को भी ज़िन्दा करो!

ला—पहले डाक्टर को तो दो!

डाक्टर ने बग़ैर पानी मिलाये पी, और बड़ी तारीफ़ की। कहा—वाह-वाह इसी का नाम है। अव्वल तो खुशबूदार, दूसरे बढ़िया जायक़ा। तीसरे फ़ायदा करनेवाली जरूर होगी। अल्कोहल इसमें कम है। और चौथे, यह साफ़ किया हुआ! बहुत ही साफ़ किया हुआ! अब इसके मुक़ाबले में न तो बरांडी की कोई हक़ीक़त है, न आपकी व्हिस्की की! भई, एक जाम पानी मिलाके भी दो!

एक जाम पानी मिलाके भी पिया; और डाक्टर ने बड़ी तारीफ़ की। और लालारुख़ ने भी कहा कि—मैं तो सूरत के देखते ही खुश हो गई थी। इसके बाद सब एक सिरे से जमाये गये, और वही शराब उड़ने लगी। उस रोज भी रात-दिन यही शग़ल रहा। बराबर दौर पर दौर। और वही उसी दिन की हालत, कि किसी ने गाना गाया, और किसी ने कुछ नहीं। और कोई किसी रंग और कोई किसी तरंग में। सब मस्त। उस रोज यह तुर्रा अलबत्ता हुआ कि एक लालारुख़ के अलावा दो और आयीं। एक गोरी साक़िन और दूसरी जलाई देहातिन। वही हू-हक़! वही चहल-पहल।

तीसरे दिन सलाह हुई कि शहर में पूरा-पूरा सोहबत का लुत्फ़ नहीं। कहीं देहात में इन सबको लेकर चलना चाहिए। ताकि बिल्कुल आज़ादी हो! सबने इस पर साद कर दिया।

डाक्टर और वकील तो शरीक न हो सके; उनको अपना-अपना काम था। और सब दोस्त, सब तीनों रंडियों साथों-संग के, एक बाग़ में गये, जो शहर से कोई तीन कोस पर था। वहाँ डेरे पड़े। मियाँ हुस्नू एक झूले पर लालारुख़ को लिये झूल रहे हैं। कोई दोस्त [illegible] से पेंग बढ़ा रहे हैं। कोई गोरी साक़िन को दम दे रहा है, राह पर ला रहा है। गाने-बजाने की इफ़रात। चीज़ हर किस्म की मौजूद। तमाम दुनिया के मज़े और ऐश! चाहे नाचें गायें, चाहें खायें-पियें—और बजायें। सब [illegible] मस्त। मियाँ हुस्नू दो दिन तक

३—सैयाँ भये कोतवाल, अब डर काहे का!

वाह वा! इनकी तो जान पर बनी हुई है और एक साहब सलाह देते हैं कि सोने का ध्यान करो! क्या अच्छा वक़्त आराम का निकाला है!—कि वह दूसरे साहब फ़रमाते हैं: सैयाँ भये कोतवाल, अब डर काहे का! क्या ख़ूब मौक़ा गाने का मिला है!

लाला जोती परशाद का बुरा हाल था। खिदमतगार उनकी इजाज़त के बग़ैर गाड़ी पर सवार होकर शहर से डाक्टर को बुला लाया। डाक्टर ने आके देखा तो बुरा हाल था।

डाक्टर—क्या हाल है?

हुश्शू—(आहिस्ता से) बुरा हाल है।

डाक्टर—हद हो गई होगी? यह बड़ा ऐब है...

हुश्शू—जान पर बनी हुई है। उफ्!

डा—(माथे पर हाथ रख कर) गर्म है। (नब्ज़ देखकर) तेज़ बुख़ार है। ज़बान देखूँ! अच्छा। बस, अभी कसेरू का शरबत बनवाओ। उम्दा चीनी और केवड़े और बर्फ़ के साथ पी लो। देखो अभी तस्कीन हुई जाती है। इस चीज़ के लिये कसेरू अक्सीर है।

डाक्टर साहब के हुक्म के मुताबिक खिदमतगार शरबत तैयार करने चला, तो कई आदमियों ने उसको बुलाया और टोंका; क्योंकि सबके सब गोली खाये हुए थे, और सबको दवा की ज़रूरत थी; दो दिन तक शराब उड़ती रही।

१—अरे भई, इधर आना। कसेरू का शरबत ज़रा ज़्यादा लाना।

२—हम भी पियेंगे।

३—और पियेगा कौन नहीं?

ख़िदमतगार—मैं एक घड़ा भर लिये आता हूँ। सब साहब पियें।

डाक्टर—हाँ, इससे कम में कुछ भी न होगा। सब के सब कलेजे फूंक के आये हैं।

हुश्शू—मौत का सामना है।

यह कहकर हुश्शू उठे ही थे कि चक्कर आ गया, और गिरे तो बेहोश हो गये। दो-चार मिनट में जब ग़शी की हालत रफ़ा हो गई तो आँख खोली और पानी माँगा। डाक्टर ने कहा—अब कसेरू का शरबत ही पीजिए। बर्फ़ और केवड़ा डाल के लुत्फ़ देगा। और कसेरू से ठंडक पहुँचेगी। जिन लोगों को इसका शौक़ है और इसकी हद कर देते हैं उनका यही हाल होता है। और जोती परशाद तो हुश्शू ही हैं। छोड़ दी तो इस गधेपन के साथ कि बोतलें और मठूरें चकनाचूर करने लगे। इसको तोड़ उसको फोड़, दहम-धँस! हम हुश्शू लिखते हैं तो पीते नहीं, और पीने पर आये तो भलमनसी के खिलाफ़, अक़्ल से दुश्मनी।

डाक्टर ने बग़ैर पानी मिलाये पी, और बड़ी तारीफ़ की। कहा—राह-रूह इसी का नाम है। अव्वल तो खुशबूदार, दूसरे बढ़िया जायक़ा। तीसरे फ़ायदा करनेवाली जरूर होगी। अल्कोहल इसमें कम है। और चौथे, वह साफ़ किया हुआ! बहुत ही साफ़ किया हुआ! अब इसके मुक़ाबले में न तो बरांडी की कोई हक़ीक़त है, न आपकी व्हिस्की की! भई, एक जाम पानी मिलाके भी दो!

एक जाम पानी मिलाके भी पिया; और डाक्टर ने बड़ी तारीफ़ की। और लालारुख ने भी कहा कि—मैं तो सूरत के देखते ही खुश हो गई थी। इसके बाद सब एक सिरे से जगाये गये, और वही शराब उड़ने लगी। उस रोज भी रात-दिन यही शग़ल रहा। बराबर दौर पर दौर। और वही उसी दिन की हालत, कि किसी ने खाना खाया, और किसी ने कुछ नही। और कोई किसी रंग औई कोई किसी तरंग में। सब मस्त। उस रोज़ यह तुर्रा अलबत्ता हुआ कि एक लालारुख के अलावा दो और आयीं। एक गोरी साक़िन और दूसरी जलाई देहातिन। वही हू-हक़! वही चहलपहल।

तीसरे दिन सलाह हुई कि शहर में पूरा-पूरा सोहबत का लुत्फ़ नही। कही देहात में उन सबको लेकर चलना चाहिए। ताकि बिलकुल आजादी हो! सबने इस पर साद कर दिया।

डाक्टर और वकील तो शरीक न हो सके; उनको अपना-अपना काम था। और सब दोस्त, मय तीनों रंडियाँ शोखो-शंग के, एक बाग़ में गये, जो शहर से कोई तीन कोस पर था। वहाँ झोटे पड़े। मियाँ हुश्शू एक झूले पर लालारुख को लिये झूल रहे हैं। कोई दोस्त जोलाई से पेंग बढ़ा रहे है। कोई गोरी साक़न को दम दे रहा है, राह पर ला रहा है। खाने-पीने की इफ़रात। मेवे हर क़िस्म के मौजूद। तमाम दुनिया के मजे और ऐश! चाहे नगे नाचें, चाहे गाएँ-बजाएँ—ढोल बजाएँ। खूब धमाचौकड़ी मची। मियाँ हुश्शू दो दिन तक बेहोश: किसी वक्त होश आने ही नहीं देते है।

सर पटकता हूँ—पिला दे मये-सरजोश मुझे!
साकिया दौड़ कि फिर आने लगा होश मुझे!

सब से ज्यादा बेकैफ़ हुश्शू थे। यहाँ तक कि दिल धड़कने लगा; और मारे प्यास के दम निकलने लगा। होंट हरदम खुश्क। पानी की सुराहियों पर सुराहियाँ खाली कर दी मगर होंट और हल्क़ तर न हुए। और हों कहाँ से? दिन-रात बोतल मुँह मे लगी हुई। कोई दम उससे खाली ही नहीं।

हुश्शू—अरे यार, कोई तो हमको ऐसी शय पिलाओ कि ज़रा हल्क़ तर हो: होंट काँटा हो गये!

१—बर्फ़ बराबर निगलते जाओ!

२—अब तुम सोने का ध्यान करो!

साहब कमिश्नर ने इस राय को मुनासिब समझा, और दूसरे रोज़ मियाँ हुश्शू को किसी बहाने से मजिस्ट्रेटी ले गये। मजिस्ट्रेट ने इनका नाम दरियाफ़्त किया। इन्होंने अपना कार्ड दिया। उन्होंने कई सवाल किये, सब का जवाब दो। फ़िलासफ़ी के मसले पूछे। ये बक़दम: हर सवाल का जवाब मौजूद। हिस्ट्री में बहस की। ये पूरे उतरे। तब उन्होंने झल्लाके कहा—वेल, इसको कौन पागल कहता है?

लोग आगे बढ़के कहने ही को थे कि इत्तफ़ाक से दफ़्तरी साहब के इजलास पर दवात में रोशनाई डालने को लाया। बोतल का देखना था कि ये जनू से इजलास पर थे; और जाते ही दफ़्तरी के हाथ से छीनी, और फेंकी—तो सौ टुकड़े। साहब के कपड़ों पर रोशनाई ही रोशनाई! सरिश्तेदार पर रेल के वर्कशाप के खलासी की फ़बती होती थी। एक वकील साहब दाढ़ी सुर्ख-सुर्ख रँगाकर बहस कर रहे थे। रोशनाई कुछ 'रेशे-मुबारक'* पर, कुछ हलक़ से उतर गई! कोर्ट-मोहर्रिर, कान्स्टेबिल, चपरासी सब इजलास पर पहुँचे, और इनको ले आये। और साहब ने सरिश्तेदार को इशारा कर दिया कि हुक्म लिख दो कि जंजीर पाँव में पिन्हाने की इजाज़त है।

दूसरे दिन चचा जो उनको ढूंढ़ते हैं तो इनका कहीं पता नहीं। समझे, कि हमारा वहशी निकल गया।

उस दिन तो अच्छी तरह आये, खाना खाया और कोई बात अक़्ल के खिलाफ नहीं की। चचा ने दोस्तों और घरवालों की राय से यह तय किया कि आज इनको यों ही आराम करने दो, कल से कार्रवाई की जायगी। ये आधी रात को वहाँ से अपनी गाड़ी पर सवार होकर एक होटल में जाके रहे। और सुबह को वहाँ से सौदागरों की दूकान पर तशरीफ़ ले गये। और वहाँ इधर-उधर बहुत-कुछ खरीदारी की। रईस आदमी समझकर सबने इनकी इज्ज़त-आबरू की। किसी को दस के सात दिये और तीन का रुक्का लिख दिया, किसी को हुक्म दिया कि फलाँ मुक़ाम पर आदमी को बिल लेकर भेज दो। किसी से कहा—बिल और सामान आज शाम को हमारे पास भेज दो! कोई कहीं गया, कोई कहीं; और ये जो लम्बे हुए तो सीधे उसी होटल पहुँचे। लेता मरे कि देता। दूसरे दिन इनकी पागलपने की खबर शहर भर में मशहूर हो गई। लोग पहले ही से जानते थे कि सिड़ी है।

* दाढ़ी।

भला यह भी कोई अक़्लमन्दी है कि दो-दो तीन-तीन दिन, आठों पहर वही एक हालत। सुवह, शाम, दोपहर, तीसरा पहर जब देखो चढ़ी रहती है। अफ़रा-तफ़री इसी का नाम है।

एक हफ़्ते तक लाला जोती परशाद साहव हुश्शू खटिया से न उठ सके। यार-दोस्त और घर के सबों को उनकी तरफ़ से फ़िक्र हो गई, कि ख़ुदा ही खैर करे। रोज़ दो वक्त डाक्टर आते थे। और आपस में सलाह लिखते थे, और एक कम्पान्डर हरदम पास रहता था। आठवें रोज़ उनकी तबीअत ज़रा सँभली। डाक्टर ने सलाह दी कि एकदम से शराव न छोड़ दो। एकदम से तर्क कर देना नुक़सान पहुँचाता है। मगर उन्होंने एक न सुनी, और एकदम से तर्क कर दी। नतीजा यह हुआ कि हाथ-पाँव टूटने लगे। भूख वहुत कम हो गई। रात को नींद नहीं आती थी। दो महीने पूरे वेहद कमज़ोर रहे, और बाग़ से वाहर न निकले। दिन-रात बाग़ में रहते थे। अगर कोई मिलने गया तो ज़रा देर के लिये मिल लिये, वर्ना किसी से सरोकार नहीं। लेकिन ख़िदमतगारों और नौकरों को ताकीद थी कि खबरदार शराव पीके हमारे सामने न आना। बोतल किसी क़िस्म की न हो! तेल तक कुप्पी में आये: हमको इसके नाम और जाम और वर्तनों तक से नफ़रत है!

एक इनके दोस्त शैतान ने मिजाज़पुरसी की तो ऐसे वेतहाशे बाग़ से भागे कि मंज़िलों पता ही नहीं। जाते-जाते एक पार्क में पहुँचे। शाम का वक़्त था, कोई साढ़े सात वजे। हरी-हरी दूव पर तकल्लुफ़ के साथ खाने की मेज़ और कुर्सियाँ चुनी हुई थीं और साहव लोग और मिसें और मेमें खाना खा रहे थे, और सार्जन्ट का पहरा था। कोई उधर जाने नहीं पाता था। मगर आप उसकी आँख में खाक-धूल झोंककर धँस ही तो पड़े, और एक सिरे से टम्वलर और गिलास तोड़ने शुरू किये। सव अचम्भे में—कि या इलाही, यह कैसी वला सर पर आन टूटी! गिरफ़्तार हुए। लोगों ने पहचाना। कहा—हज़ूर, यह फलाँ रईस के भतीजे हैं। साहव कमिश्नर इनके चचा को जानते थे। उनको फ़ौरन वुलवाया, और कहा—आप कल भतीजे को फौरन पागलखाने भेजिए। इस वक़्त इन्होंने वड़ी वेजा हरकत की। दो मेम साहव को ग़श आ गया; और एक खानसामा के सर पर वोतल तोड़ी। वह वेचैन है। आप इनका इलाज अपने आप न कर सकेंगे। वेहतर, कुछ दिन पागलखाने में रहने दीजिए, और वहाँ इलाज कीजिए।

चचा ने साहव मजिस्ट्रेट से कहा कि मुझे आपके हुक्म की तामील में कोई उज्र नहीं। लेकिन फ़िक्र यह है कि पागलखाने गया तो औरतें कुढ़-कुढ़के मर जायँगी। वस इनका ख़याल है। मैं कल मजिस्ट्रेटी में दरख्वास्त दे दूँगा कि मुझे इजाज़त दी जाय कि पागल के पाँवों में जंजीर डाल कर के हिरासत में रखूँ।

था। बेग गले में डाला और हँसकर कहा—अच्छे पागलों से लेन-देन रखते हो! और चला गया।

लाला और उसका भाई और दूकानदार सब हैरान कि या अल्ला यह किसका काम है। जोती परशाद के सिवा और कोई यहाँ आया नहीं। और वह एक वज़ेदार और रईस आदमी हैं।

अब सुनिये कि लाला जोती परशाद साहब यहाँ से दुकानों की दूसरी लैन में गये और एक बिसाती की दुकान में उतर पड़े। दुकान बड़ी थी। बिसाती उठकर असबाब दिखाने लगा। उससे आपने धूप की ऐनक माँगी। वह कोठरी में गया, कि इतने में मौक़ा-वक़्त ग़नीमत जानकर आपने जल्दी-जल्दी दो कार्क-स्क्रू यानी काग-पेच पाकट में रख ही तो लिये। और उधर बिसाती का सिख मुलाज़िम जो इत्तफ़ाक़ से इनकी तरफ़ देख रहा था—और इनको खबर न थी कि कोई हमारी ताक में है—वह झपटा। बिसाती ऐनकें निकालकर आया ही था कि सिक्ख ने मियाँ हुश्शू का हाथ पकड़ लिया।

हुश्शू—हिस्ट! क्या बात है?।

बिसाती—हायँ! कुछ पागल हो गया है। अरे, एक रईस का हाथ पकड़ता है! छोड़ दे! सिड़ी है, कौन!

सिक्ख—रईस इसको कौन कहता है? यह चोर, इसका बाप चोर!

हुश्शू—देखो, इसको समझाओ।

बिसाती—कपूर सिंह, तुमको आज जनून हो गया है? तुम हमारी दूकान से निकल जाओ।

सिक्ख—अरे सरकार, ये तुम्हारे देस दी सरदार, और चोरी-चकारी करे! पाकट में हाथ डालकर देखिये: यह चोर, इसका बाप-दादा चोर!

बिसाती—लाहौल विला क़ुव्वत! ले, बस जाइये। कोई दूसरा होता तो मारके उधेड़ डालता।

सिपाही—वह तो कपूर सिंह न देखते तो मार ही ले गया था। अब चलो थाने! काग-पेच चुराने चले थे! चलो थाने! बीस बेंत से कम न पड़ेंगे।

बिसाती—ले जाओ थाने पर।

इतने में इनका खिदमतगार आया। और कोचमैन घोड़ों को साईसों के सुपुर्द करके कूद पड़ा। अब ये भी तीन आदमी हो गये; और आपस में दंगा होने लगा।

कोचमैन—किसी रईस की इज्ज़त लेते हो?

खिदमतगार—ये काग-पेच चुराने वाले लोग हैं, जिनके नौकर चाँदी के कड़े पहने हैं।

सिक्ख—अरे, आँखों में खाक झोंकता है! पूछ तो, यह पेच कहाँ से निकला। हिन्दू धरम—इससे गंगाजली उठवा! चौड़ी-गाड़ी पर सवार और चोरी!

कोचमैन—बस, ज़बान सँभालके बोल! बड़ा वह बनके आया है!

छठा दौरा

वहशत ! वहशत ! वहशत !

एक रईस एक जोड़ी गाड़ी पर सवार होकर सदर वाज़ार गये, और एक मालदार वजाज़ की दूकान पर जाकर दो उम्दा सूट वनवाए—एक रेशमी और दूसरा सूती। इसके वाद टहलते-टहलते—वज़ाज़ की आँख ज़रा चूकी ही थी कि—आपने एक चमड़े का वेग, जिसमें वोतल और गिलास सफ़र के लिये रक्खा जाता है, झप से गले में पहन लिया और दूकान से वाहर निकल आये। थोड़ी देर में एक सार्जेन्ट आया। अंग्रेज़ी में लाला से कहा—हम अपना वेग यहाँ भूल गये हैं। उसमें एक वोतल है और गिलास। वज़ाज़ के आदमी ने कहा—जी हाँ, रक्खा है। लाला ने टूटी-फूटी अंग्रेज़ी में कहा—आप वैठें, मेरा आदमी लिये आता है।

आदमी ने इधर-उधर देखा, तो वेग मय वोतल और गिलास के ग़ायव—और उसके साथ ही आदमी के होश! इधर ढूँढ़ा, उधर ढूँढ़ा, मगर वह भला कहाँ मिलनेवाले हैं। हुस्सू तो थे ही; दुनिया भर में उनका कहीं पता नहीं। चौतर्फ़ा ढूँढ़ मारा, कहीं हों तव तो मिलें। दूकान भर परेशान। वज़ाज़ अपने आदमी को ललकार रहा है—कि तूने झूठ-मूट वक दिया; अव तुझको दाम देने पड़ेंगे। और वह सैकड़ों क़स्में खाता है कि राम-दुहाई, अभी-अभी यहाँ पर रक्खा था!

वज़ाज़ और नौकर में यह जंग हो ही रही थी कि एक आदमी वही वेग लेकर आया और वज़ाज़ को एक चिट्ठी मय वेग के दी। वहुत उम्दा अंग्रेज़ी में लिखा था—

> 'लाला साहव, हम शराव और शरावी दोनों के दुश्मन हैं। तुम्हारी दूकान पर शराव की वोतल का वेग देखा। आग ही तो लग गई। सर से पाँव तक फुँक गया। गले में वेग डाला और लम्वा हुआ। वोतल रास्ते में तोड़ डाली। गिलास के चार टुकड़े किये। चमड़े का वेग भेजता हूँ। इस आदमी को दो आने दे दो। मा व-ख़ैर व शुमा व-सलामत।
>
> राक़िम—
>
> हुस्सू'

वज़ाज़ ने यह ख़त वड़े अचम्भे के साथ पढ़कर सार्जेन्ट को दिया। पहले तो उसकी समझ में नहीं आया। मगर जव लाला साहव ने समझाया तो वहुत हँसा। वज़ाज़ ने आदमी को, लाला जोती परशाद साहव के हुक्म के मुताविक़, दो आने दिये, और सार्जेन्ट से वोतल और गिलास के दाम पूछे। वह नेक आदमी

था। वेग गले में डाला और हँसकर कहा—अच्छे पागलों से लेन-देन रखते हो! और चला गया।

लाला और उसका भाई और दूकानदार सव हैरान कि या अल्ला यह किसका काम है। जोती परशाद के सिवा और कोई यहाँ आया नहीं। और वह एक वज़ेदार और रईस आदमी हैं।

अव सुनिये कि लाला जोती परशाद साहव यहाँ से दुकानों की दूसरी लैन में गये और एक विसाती की दुकान में उतर पड़े। दुकान वड़ी थी। विसाती उठकर असवाव दिखाने लगा। उससे आपने धूप की ऐनक माँगी। वह कोठरी में गया, कि इतने में मौक़ा-वक़्त ग़नीमत जानकर आपने जल्दी-जल्दी दो कार्क-स्क्रू यानी काग-पेच पाकट में रख ही तो लिये। और उधर विसाती का सिख मुलाज़िम जो इत्तफ़ाक़ से इनकी तरफ़ देख रहा था—और इनको खवर न थी कि कोई हमारी ताक में है—वह झपटा। विसाती ऐनकें निकालकर आया ही था कि सिक्ख ने मियाँ हुश्शू का हाथ पकड़ लिया।

हुश्शू—हिस्ट! क्या वात है?।

विसाती—हायें! कुछ पागल हो गया है। अरे, एक रईस का हाथ पकड़ता है! छोड़ दे! सिड़ी है, कौन!

सिक्ख—रईस इसको कौन कहता है? यह चोर, इसका वाप चोर!

हुश्शू—देखो, इसको समझाओ।

विसाती—कपूर सिंह, तुमको आज जनून हो गया है? तुम हमारी दूकान से निकल जाओ।

सिक्ख—अरे सरकार, ये तुम्हारे देस दी सरदार, और चोरी-चकारी करे! पाकट में हाथ डालकर देखिये: यह चोर, इसका वाप-दादा चोर!

विसाती—लाहौल विला क़ुव्वत! ले, वस जाइये। कोई दूसरा होता तो मारके उधेड़ डालता।

सिपाही—वह तो कपूर सिंह न देखते तो मार ही ले गया था। अव चलो थाने! काग-पेच चुराने चले थे! चलो थाने! वीस वेंत से कम न पड़ेंगे।

विसाती—ले जाओ थाने पर।

इतने में इनका खिदमतगार आया। और कोचमैन घोड़ों को साईसों के सुपुर्द करके कूद पड़ा। अव ये भी तीन आदमी हो गये; और आपस में दंगा होने लगा।

कोचमैन—किसी रईस की इज्ज़त लेते हो?

खिदमतगार—ये काग-पेच चुराने वाले लोग हैं, जिनके नौकर चाँदी के कड़े पहने हैं।

सिक्ख—अरे, आँखों में खाक झोंकता है! पूछ तो, यह पेच कहाँ से निकला। हिन्दू धरम—इससे गंगाजली उठवा! चौड़ी-गाड़ी पर सवार और चोरी!

कोचमैन—वस, जवान सँभालके वोल! वड़ा वह वनके आया है!

यह हंगामा हो ही रहा था कि एक दूकानदार ने चुपके से कोचमैन के कान में कहा—अरे भई, इस तू-तू मैं-मैं से क्या होगा! दूकानदार को कुछ ले-दे के वैस्ट कर दो! माला (मामला) रईस आदमी हैं; बड़े वदनाम होंगे!

कोचमैन ने कहा—अगर यों ही सब रईस डरने लगें, तो जिसका जी चाहे धमका ले। विसाती ने आदमियों से कहा कि कान्स्टेवुल को बुलाओ। इनको चचा ही बना के छोड़ूँगा। जाते कहाँ हैं चिड़ा-गुलखैरू!

अब दस-पाँच आदमी और जमा हो गये।

१—अरे मियाँ, चौड़ी गाड़ी पर सवार हैं, चोरी क्या करते? हजूर गाड़ी पर सवार हों! यह विसाती बड़ा बदज़ात है।

२—किसी रईस को बेइज्जत करना कौन भलमन्सी है?

३—अरे, तो क्या दुकानदार को कुत्ते ने काटा था?

१—कोई किसी को झूठ नहीं ले मरता।

ग़र्ज़े कि बड़ी ले-दे के बाद खिदमतगार ने विसाती के मुलाज़िम को बीस रुपये दिये और उसने अपने मालिक के हवाले किये। तब जाके कहीं लाला जोती परशाद की आबरू बची। और सोचा कि बहुतों को ग़प्पे दिये थे मगर ये एक गुरू मिले! कोशिश तो यह की थी कि बोतल के खोलने के पेच घुमाके खारी कुएँ में फेंक दें; मगर लेने के देने पड़े—हात्तेरे की! धर लिया गया ना, ओ गीदी!

यहाँ से मियाँ हुश्शू साहब बहुत ही रंजीदा और दुखी और मरी हुई-सी तबीअत लेकर गाड़ी पर सवार हुए। सैकड़ों जूते पड़े। चोर बने; बाप को मलवातें सुनवाईं। हाथ पकड़ा गया। जेब से कार्क-स्क्रू निकले; सिक्ख बिगड़ा। दूसरे आदमी ने औंधी-सीधी सुनाई। लोग जमा हुए। सब के सामने चोर बने; आदमियों के सामने ज़लील हुए। कान्स्टेबुल बुलवाए जाते थे। बीस ज़रब बेंत का फ़तवा जमाया गया।

उस रोज मारे रंज के खाना नहीं खाया। घर में जाके सो रहे। दूसरे रोज बुखार आ गया। एक हफ्ते तक बीमार रहे। जब आराम हुआ, तो सदर बाजारवाले बिसाती की कुल कारंवाई भूल गये, और फिर सदर बाजार चले। इस मर्तबा वैगनेट पर सवार थे। न वह खिदमतगार, न कोचमैन, न वह साईस। वर्ना वह लोग जरूर समझाते कि हुजूर सदर बाजार की तरफ़ से न चलें। अभी अठवारा ही हुआ है कि वहां फ़जीता हो चुका है। सदर बाजार में जाके तब उँगलियां उठने लगीं:

१—यही साहब हैं, यही, जिन्होंने कार्कस्क्रू की चोरी की थी।

२—इतने बड़े रईस और कौड़ियों के माल की चोरी, वाह!

३—इनका इसमें कोई कसूर नहीं। इनके दिमाग में खलल है।

४—मियाँ, वह जिन्होंने वोतलें चुराई थीं; और काग-पेच पाकेट में रख कर भागे थे, वह आज फिर आये हैं।

इनको क्या ख़वर कि यहाँ क्या हँडिया पक रही है। एक सौदागर की दूकान में घँसने ही को थे कि उसने ललकारा—यहाँ नहीं, यहाँ नहीं। और दूकान देखिये! जैसे कोई किसी फ़क़ीर से कहता है।

एक और दूकान पर क़दम रक्खा ही था कि दुकानदार ने कहा—हजूर हमने दुकान वढ़ा दी। जो लेना हो वह और दुकान से लीजिए।

यहाँ से चलते-चलते एक और दुकान में घुसे। दुकानदार वाक़िफ़ था कि हुश्शू यही हैं, मगर तहज़ीव से पेश आनेवाला आदमी था; ज़वान से कुछ न कहा। ख़ुद भी साथ हो लिया और उनको मौक़ा चोरी करने का न दिया।

हुश्शू—कोई वढ़िया मनीवेग है?

जवाव—जी नहीं।

हुश्शू—कोई क़ीमती पेंसिल है?

जवाव—मैं तो एक टुटपुंजिया विसाती हूँ। हजूर किसी वड़ी दुकान में जायँ!

हुश्शू—अच्छा, हम यहाँ टहल रहे हैं; तुम किसी वड़ी दुकान से जाके ला दो!

जवाव—ह हँ। वस, अव तशरीफ़ ले जाइए। मैं इस धोखाधड़ी में न आने का। तसलीमात।

हुश्शू कुछ-कुछ अव समझे कि लोग उनके आने के रवादार नहीं हैं। अव किसी दुकान में जाने की जुर्रत न हुई; और गाड़ी में सवार होकर रवाना शुद। सवार होकर चले ही थे कि आवाज़ आई—लदा है! लदा है!

हुश्शू समझ गये कि यह आवाज़ा हमीं पर कसा गया। मगर करते क्या! किसी ने नाम तो लिया ही न था। और नाम लिया भी होता, तो वाज़ार भर एक तरफ़ और ये टुटरूँ-टूँ, काना टट्टू, वुद्धू नफ़र। एक की दवा दो—मसल मशहूर है।

यहाँ से ज़लील होकर चले तो सीधे घर आये; और दो दिन तक घर ही में रहे। वाहर नहीं निकले।

घर में लेक्चरवाज़ी यों शुरू कर दी:—

साहवो, यह शराव वह चीज़ है कि वस तोवा ही तोवा! ख़ुदा वचाये! अल्लाह न करे कि इसके पास कोई कभी फटके! वचो—इससे जहाँ तक हो सके, वचो! यह वह नागन है, जिसका काटा पानी तक नहीं माँगता. . . .

तीसरे दिन फिर शैतान ने उँगली दिखाई, और हुश्शू साहव ने वहशत की ली, और ये चन्द शेर वरजस्ता फरमाए:—

परसों गये हम सदर वाज़ार : आये वहाँ से ज़लील-ओ-ख्वार।
दुवक-दुवका कर भागे हम : पीछे जूती, आगे हम।

आवाज़े सबने कसे हम पर : भागे! लूलू है! गीदी खर!
इक्का-दुक्का हम, वह लाख : हम हुश्शू औ' उनकी साख!
कोई दोस्त न कोई यार; दुश्मन सारा सदर बाज़ार,
बोला कोई—सुन लो भाई! हुश्शू की जब शामत आई।
मारामार गया दर-दर—फिरने लगा दुकानों पर,
बम्बूक़ बड़ा यह हुश्शू है! हुश्शू है, भई हुश्शू है!
नज़्म है, या हुश्शू की नानी—चूरन वालों की है बानी,
चूरन खा लो हुश्शू यार—तोड़ के ला-दो एक अनार।
खाये अनार अब जायेंगे—खबर जहाँ की लायेंगे।
जाम है क्या और मय है कैसी! पीने वाले की ऐसी-तैसी!
साक़ी की दुम में नम्दा है—जभी य' बूढ़ा ग़म्ज़ा है।
भट्टी चाहे जैसी है—कलवार की ऐसी-तैसी है।
काग-चोर ए, एजी, वाह! तोड़ी बोतल इल्लिल्लाह!

इनके कुछ दोस्त एक रोज़ मिलने गये तो यों बातें हुईं—

जो—'शीन' 'रे' 'अलिफ़' 'बे'*—ये चार हरफ़ आज से हम कभी इस्तैमाल न करेंगे।

च—यह तो हो नहीं सकता। ऐसा कोई जुमला लिखो तो सही!

ब—ग़ैर मुमकिन है, जनाब।

जो—(क़लम दवात काग़ज़ लेकर) अम्मे-मन तसलीम! हम कल तप में दिक़ थे। हकीम-बैद किसी को हुक्म दीजिए कि नुस्खा लिख दें। कुनैन मुझे मुफ़ीद होती है। वह दो तोले दीजिए, कि पी लूँ। दो शीशी कुनैन की।

मेंड मी सून। फेथफुल नेव्यू।

ब—वल्लाह खूब लिखा है!

च—बेशक खूब लिखा है। अंग्रेजी में क्या लिखा है?

ब—'मेंड' के मानी ठीक करना; 'मी' के मानी, मुझे; 'सून' के मानी जल्द, 'फेथफुल' के मानी, खैरख्वाह; 'नेव्यू' के मानी, भतीजा।

च—(आहिस्ता से) अब इसको पागलपन कौन कहे!

मौलवी—क्या अच्छा खत लिखा है!

जो—मय उम्दः चीज़ नहीं है।

स—क्या खूब! इस फ़िक़रे में भी कोई 'शराब' का हरफ़ नहीं है। न 'शीन' 'रे', न 'अलिफ़', न, 'बे,'

च—हां, बेशक नहीं है।

जो—अलहम्दुलिल्लाह‡, मैं गिरा नहीं हूँ।

---

* श, र, आ, ब।

‡ 'शुक्र'।

ब—क्या खूब! इस वक़्त तो जेहन तरक़्क़ियों पर है।

जो—शेर-शायरी बहुत अच्छा शग़ल चार रोज़ तबीअत बहलाने का क़यास किया गया।

ब—इसके क्या मानी?

म—यह बेतुकी हुई, बन्दानेवाज़।

च—बेतुकी नहीं हुई। यह खूब हुई। इसके यह मानी, कि कोई लफ़्ज़ इस जुमले में ऐसा नहीं जिसमें 'शीन' या 'रे' या 'अलिफ़' या 'बे' न हो।

म—बड़ा तबीअतदार आदमी है।

च—बस इसी तरह, होश की बातें करो।

ब—ऐसा हो तो हम अपने आपको बड़ा खुशनसीब न समझें?

दस दिन के बाद तबीअत ने फिर पलटा खाया और छै रोज़ तक इतनी पी, इतनी पी, कि होश-हवास ग़ायब-गुल्ला। सातवें दिन शराब के नशे में खुद-बदौलत बाज़ार में आए और दूकानों पर इतनी अनोखी बेहूदगियाँ कीं कि पुलिस को दस्तअन्दाज़ी करनी पड़ी। चूँकि इनके चचा एक मशहूर आदमी और रईस और आनरेरी मजिस्ट्रेट थे, इनके साथ रिआयत की; और खुद पुलिस-वालों ने इनको इनके घर पहुँचाकर इनके चचा के सुपुर्द कर दिया। इन्होंने घर पर भी आसमान सर पर उठा लिया, और एक हफ़्ते तक सिवाय गाली-गलौज, मार-धाड़, जूती-पैज़ार, धर-पकड़ के और कोई काम न था। चचा और दोस्त और भाई और मोहल्लेवाले आजिज़ आ गये, और साहब मजिस्ट्रेट से पागलखाने के सुपरिन्टेंडेंट के नाम चिट्ठी लिखवाई, और सलाह हुई कि मौलवी साहब के साथ गाड़ी पर बैठकर पागलखाने जायें और इनसे ज़िक्र भी न किया जाय। एक खिदमतगार ने इनको समझा दिया कि मौलवी साहब के साथ आप कल सुबह को पागलखाने भेजे जायेंगे। चिट्ठी वहाँ के साहब के नाम ले आये हैं।

—:o:—

सातवाँ दौरा

मुल्ला पागल।

मौलवी साहब गाड़ी पर सवार जोती परशाद को अपने जान बेवक़ूफ़ बनाते चले जाते थे और सोचते जाते थे कि लाला को यह खबर ही नहीं कि घड़ी-दो में मुरलिया बाजेगी; पागलखाने की सैर करते होंगे। दिल में रंज था,

मगर करते भी क्या; अपने सर पड़ी आप ही झेलनी पड़ती है। पागलखाने की आलीशान कोठी के पास पहुँचकर मौलवी साहब ने गाड़ी रुकवाई और लाला जोती परसाद के बनाने और दिल बहलाने के लिये, कि पागलखाना देख के भड़कें नहीं, यों मजे-मजे की बातें करने लगे —

मौलवी—भई इस चारदीवारी के अन्दर एक बाग़ है–कश्मीर के शालामार की नक़ल ; इलाहाबाद के खुसरो बाग़ से बड़ा। अजब मुज़हतबार* बाग है! जा-ब-जा चमन और फुलवारियाँ, और उम्दा-उम्दा पौदे, और आसमान से बातें करनेवाले ऊँचे-ऊचे दरख्त, मेवे और फल से लदे हुए। और बीचो-बीच में एक परी-मंज़िल कोठी है। कोठी क्या, नमूनए-जन्नत है। 'छतर-मंज़िल और 'दिल्कुशा' और 'फ़रह-बख्श' जैसी नामी इमारतों की कोई हक़ीक़त नही। ताज बीबी के रोज़े की भी कोई हक़ीक़त नही। चार कोनों में चार परियाँ बनी हैं। इस क़ाबिल है कि यहाँ दो घड़ी इन्सान दिल बहलाए। इसमें हूर-खराम मल्कए-मल्काते-आलम हज़ूर शहंशाह बेगम अपनी तफ़रीह के लिये आती थीं। इस लायक है कि रऊसा‡ कभी-कभी आया करें; बहार का लुत्फ़ उठाया करें।

जोती—बाहर ही से देखने से जी खुश हो गया।

मौल्वी—(दिल में खुश होकर) अन्दर और भी खुश हूजिएगा।

जो—हम तो बाहर ही से देख के फड़क गये।

मौ—शुक्र है कि आपने भी पसन्द किया। रूह को बालीदगी† होती है।

जो—हमको तो यह मालूम होता है कि जैसे हम अट्ठारह बरस के हो गये।

मौ—अजी बूढ़ा आवे तो जवान हो जाय और जवान कभी बूढ़ा न होने पावे। इसकी सैर से इन्सान कुल रूहानी आरज़ों और जिस्मानी मरज़ों से बचा रहता है।

जो—क्यों नहीं? आप तो कभी-कभी यहाँ आते होंगे।

मौ—जी हाँ! सैर-[illegible]!

जो—आज यहीं रहिये।

मौ—(दिल में)—खुदा न करे, अल्लाह बचाए! (जाहिरदारी में) आप यहाँ रह जाते हैं।

इतने में लाला जोती परसाद गाड़ी से उतरे।

जो—मैं अभी आता हूँ। जरा इसके अन्दर चलकर सैर करेंगे।

मौ—(खुश होकर) जरूर। आप जिस काम को जाते हैं वहाँ से हो आइये।

---

*नज़र को खिंचा लिये हुए।

‡ रईस लोग। † (हिंदी मुहावरे में) आत्मा को पूर्ण सुख प्राप्त होता है।

जो—अभी-अभी आता हूँ।

दस मिनट गुज़र गये, पन्द्रह मिनट गुज़र गये, बीस मिनट गुज़र गये; जोती परशाद का पता नहीं। अब सुनिये कि लाला जोती परशाद साहब गाड़ी से उतरकर, घनी और लम्बी-लम्बी पतावर से होकर पागलखाने के फाटक पर पहुँचे।

जोती—(पहरेवाले सिपाही से) सुपरिन्टेंडेंट साहब हैं?

सिपाही—(जंगी सलाम करके) हाँ, हजूर हैं।

जो—हमारा कार्ड भेज दो। उस पर छपा था—लाला जोती परशाद, एम. ए., फ़ेलो आफ़ दि कलकत्ता युनिवर्सिटी।

सिपाही ने एक चपरासी के हाथ कार्ड भेजा। उसने आनके कहा—हुजूर को साहब ने सलाम दिया है।

जोती परशाद ने टोपी उतारकर अंग्रेजी में सलाम किया। और साहब ने खड़े होकर हाथ मिलाया।

साहब—वेल, हम आपके लिये क्या कर सकते हैं?

जो—मैं एक पागल को लेकर आया हूँ। साहब मैजिस्ट्रेट का यह खत आपके नाम है।

सा—अभी हाल में पागल हो गया है?

जो—जी, हाँ। बोतलें, बर्तन, घड़े और गगरे और चिलमचियाँ और लोटे तोड़ता फिरता है, और जो शख्स उसके साथ रहता है उसको सिड़ी समझता है, और सबसे चुपके से कहता है कि यह आदमी पागल हो गया है।

सा—अभी शुरूआत है, शायद अच्छा हो जाय। उसको बुलवाइये।

जोती परशाद ने चपरासी से कहा कि गाड़ी पर बाहर जो साहब बैठे हैं उनसे कहना कि सुपरिन्टेंडेंट साहब बुलाते हैं। मेरा ज़िक्र न करना। वह बेचारे पागल हो गये हैं; और जो उनके पास जाता है, उसको पागल कहते हैं। तत्तो-तम्बो करके चीते यार बनाके ले आओ।

चपरासी ने जाकर कहा—चलिये, आपको साहब बुलाते हैं।

मौलवी साहब ने कोचमैन और साईस और ख़िदमतगार से कहा कि लाला अगर आयें तो फ़ौरन् वहाँ भेज देना। यह कहकर अन्दर तशरीफ़ लाये। जोती परशाद को साहब के पास बैठा देखकर मुस्कराये। कहा—पहले ही से यहाँ आनके डट गये!

साहब ने अंग्रेजी में जोती परशाद से पूछा—ये अंग्रेजी जानते हैं?

जोती—जी नहीं।

सा—चेहरे ही से दीवानापन बरसता है।

जो—जी हाँ, जनून कहीं छिपा रहता है?

सा—और फिर ख़ासकर हम लोगों से?

जो—जी हाँ—जिन्होंने हज़ारों पागल चंगे किये हैं।

सा—मुद्दत से यही काम है।

जो—आप तो स्पेशलिस्ट हो गये हैं ना?

मौ—(साहब से) मुझे आप से कुछ अर्ज़ करना है।

सा—(मुस्कराकर) मतलब की बात पर आ रहे हैं।—कहिये।

मौ—(अलैहदा ले जाकर) हज़ूर ये रईस के लड़के हैं, मगर दिमाग़ में ख़लल हो गया है। आप इनको पागलख़ाने में रखिये।

सा—बेहतर।

मौ—इनका क़ायदा है कि बोतलें...

सा—(मुस्कराकर) हम समझ गये।

मौ—हज़ूर साहब मजिस्ट्रेट का ख़त भी हज़ूर के नाम है।

जेब टटोली, मगर ख़त कहाँ! ख़त तो जोती परशाद ने जेब से निकाल लिया था। उस्तादी कर गये थे—और साहब ने पढ़कर अपनी मेज़ पर रख लिया था।

सा—उस ख़त की कोई ज़रूरत नहीं है।

जोती परशाद को बुलवाया।

साहब और मौलवी साहब और लाला जोती परशाद और जमादार और चपरासी जाने लगे। जमादार से साहब ने कह दिया था कि कोई अच्छा कमरा ख़ाली कर दो। रईस आदमी है। एक मुक़ाम पर जमादार ने इशारे से कहा कि यही कमरा तजवीज़ा है। साहब ने मौलवी साहब से कहा—हम और आप इस कमरे में चलकर बैठें, जिसमें यह पागल भड़क न जाय, और ख़ुद ही चला आवे। और उधर जोती परशाद से अंग्रेज़ी में कहा कि इस कमरे से हम जल्द भाग आवेंगे, तुम बाहर रहना। मौलवी साहब सीधे-सादे मुसल्मान, साहब के साथ चले गये; और दिल में बहुत ही ख़ुश थे कि आज बड़ा काम मारा। जोती परशाद के चचा और दोस्त सब ख़ुश होंगे, कि किस ख़ूबसूरती से इनको पागलख़ाने में ले गया। किसी की जुरअत नहीं होती थी। भारी पत्थर हमीं ने उठाया।

साहब आराम कुर्सी पर बैठे, और मौलवी साहब चारपाई पर बैठने ही को थे कि साहब उठ के बाहर; और जमादार ने दरवाज़ा बन्द करके ताला डाल दिया। अब लाख मौलवी साहब उठें और यहाँ जावें और गुल मचावें, ताला पड़ गया; और हज़रत मौलवी साहब पागलों की कोठरी में बन्द—उल्टे [illegible]!

मौलवी—हुज़ूर, क्या उस कमज़ोर ग़रीब को ही पागल बना दिया?

साहब—आप इनमें आराम करें, मौलवी साहब!

मौ—[illegible]! हुज़ूर मैं मौलवी आदमी, [illegible]

साहव सब्जवारी क़ुद्स सिर्रहुलशरीज का जिलःरुवा—और ग़ुलाम को जनून क्या मानी ? कभी कुतरुव भी जो अव्वल मुक़द्दमा दफ़्तर मालेखोलिया का है, नहीं हुआ ! †

सा—(जोती परशाद से)—उर्दू में क्या कहता है ?

जो—मैं जानता हूँ, अरवी पढ़ रहा है।

सा—अच्छी वात है। मौलवी साहव, आप आराम से पढ़िये।

जमादार—मौलवी साहव, पागलखाना तो है ही। यहाँ दाद न फ़रियाद।

मौ—वावा, यह अजव पागलखान एस्त, कि हर कोई यहाँ पागल है।

सा—मौलवी साहव, यह जमादार लोग हम तक को कभी-कभी पागलों के साथ वन्द कर देता है।

मौ—(वहुत ग़ुस्से में भरकर) व-खुदाए लम-यजलं, हजूर इसी क़ाविल हैं कि पागलखाने में रहें। जाय-शुमा दरीं पागलखानए-सब्ज अस्त । ‡

सा—यह क्या वोला ?

जोती—हजूर फ़ारसी जवान में अपने वाप के वारे में कहता है कि वह भी पागल था।

साहव और जमादार वहुत हँसे। और मौलवी साहव और भी ग़ुस्से में भर गये, और कहा—सौगन्द मी खुरम व-तंगरीए-तआला, कि कलमए-सख्त खिलाफ़े-शाने-जनावे-वालिद मेरे—वुर्द अल्लाह मज़हजअ विन्नार अल्लाह वुर- हानहू ! ! कलेजे पर कार तीर मीकुनद ! *

सा—क्या वोला ?

जो—अपने नाना के वारे में कहते हैं कि वह भी उसी पागलखाने में मरे थे।

इतना सुनना था कि मौलवी साहव आग ही तो हो गये, और मारे ग़ुस्से के लोहे की सलाखों को जोर से हिलाने लगे। मालूम होता था कि सीखचों को तोड़के वाहर आके दो-एक को खा जायगा। मौलवी साहव ने वड़े जोर से दाँत किटकिटाए और ऐसी भयानक सूरत वनाई, कि खुदा की पनाह ! अव्वल तो आपका चेहरा-मोहरा वस क्या कहिये, यों दीद के क़ाविल था—सर घुटा, भवों का सफ़ाया; क़द सात फ़िट का ; दुवले-पतले। और अव और भी शक्ल निकल आई। साहव को पहले ही इनके पागल होने का यक़ीन था; अव और भी पूरा-पूरा यक़ीन हो गया। जमादार ने कहा—हजूर रात को इसकी वड़ी चौकसी करनी होगी।

---

† मैं जो कि सब्जवारी क़ुदस का मुजाविर हूँ, और कहाँ पागलपन की वीमारी। मुझे तो कभी मिरगी भी नहीं हुई, जो कि इस रोग की भूमिका होती है।

‡ आपकी जगह इसी पागलखाने के अन्दर है।

* अल्लाह की सौगन्द ! तूने मेरे पिता को अपशब्द कहे। अल्लाह तुझे आग में डालेगा। तूने मेरा कलेजा छलनी कर दिया है।

साहब ने कहा—बेशक।

जोती परसाद ने सीख़चों के पास जाकर कहा—जनाब मौलवी साहब, क़िबला ! कोर्निश अर्ज करता हूँ ! कहिये कश्मीर के शालामार की नक़ल है या इलाहाबाद के खुसरोबाग़ की !

मौलवी—आपके वालिद और पिदर-ज़न की ख़ाहिश यही है कि आप कुछ दिन इस जनूंसरा में जिसको अवाम पागलखाना कहते हैं, क़याम करें।

वक़ुज़ी रब्बुक अल्ला तसब्दु वा इल्ला अमा वह बिलवालदैन इहसानन। अमा लबल्ग़न उनिदक इलकब्र अहदहुमा वकलुलहमा क़ौलन करीमा व हिफ़्ज़ि लहमा जनाह अल्ज़्ले मिन उर्रहमतः वक़ुल रब्बे अरहमहा रब्बयानी सग़ीरा। कहते हैं मां के पांव के नीचे बहिश्त है।

गा—अब क्या बोलता है।

जो—अब ऊल-जलूल बकने लगा।

गा—हम इलाज करेंगे।

जो—आप सही फरमाते हैं, जनाब मौलवी साहब, कि यह मुक़ाम इस काबिल है कि इन्सान यहां दो घड़ी दिल बहलाए।

मौ—(झल्लाकर) इस वक्त आपके वालिद होते तो आप का सर काटके फेंक देते। अफ़सोस कि वह हमसे दूर हैं।

जो—कहिये, वह परी-मंज़िल कोठी कहां है ?

मौ—(सर पटककर) अगर बस चले तो खा जाऊं!

जो—शालामार बाग की नक़ल है ना ?

मौ—खुदा समझेगा तुझ मरदूद से।

जो—अब यह तो फरमाइये कि वह हूर-सराम मल्काए-मल्काते-आलम हज़रत महंगाह बेगम कहाँ हैं ?

मौ—अल्लाह मसाहूल करे।

जो—अन्दर से तो यह कोठी और भी अच्छी होगी !

जों-जों फिकरे मौलवी साहब ने पागलखाने के बाहर कहे थे, वह जोती परसाद ने दोहराये।

मौ—मैं तुझको तो मार डालूंगा।

गा—हाँ जमादार, बहुत होशियार।

जमादार—हुजूर, बहुत होशियार रहेगा।

गा—सिपाही लोग सब होशियार।

जमादार—हुजूर, [illegible]।

मौ—[illegible]।

जो—[illegible]।

मौ—क़ज़ा का सामना।

जो—आप तो फ़रमाते थे कि अजब नुज़्हतबार बाग़ है!

मौ—ख़ैर, हमारी अक़्ल हमसे इस पागलख़ाने ही में दोचार हुई।

जो—अपने खोदे गड्ढे में आप ही गिर पड़े। हमको पागलख़ाने भेजने आये थे। हात्तेरे मौलवी की दुम में हुसैनाबाद का घंटाघर!

लाला जोती परशाद साहब ने जमादार को दो रुपये इनाम के दिये और हसन ख़ाँ को एक रुपया; और मौलवी साहब से रुख़सत होते कहा—जनाब मौलवी साहब, आप न घबरायें, कल हुज़ूर की फ़स्द खोली जायगी और इन्शा अल्लाह जल्द आपका दिमाग़ सही हो जायगा। अब शैतान को सौंपा आपको। जमादार साहब, ज़रा इनकी देख-भाल करना! मियाँ हसन ख़ाँ, भाई हमारे पागल मौलवी को तकलीफ़ न होने पाये।

यह कहकर जोती परशाद बाहर आये। गाड़ी पर बैठे। ख़िदमतगार को कोचबक्स पर बिठाया। जमादार और हसन ख़ाँ ने सलाम किया और गाड़ी चली। कोचबक्स से ख़िदमतगार ने पूछा—हुज़ूर घर चलें ना? फ़रमाया—सीधे अमीनाबाद चलो। अमीनाबाद में एक दोस्त को साथ लिया और उनसे कुल कार्रवाई बयान की। हँसते-हँसते पेट में बल पड़-पड़ गये। कहा—भई, वल्लाह, कमाल किया। मानता हूँ, उस्ताद! मौलवी बेचारे झक मार रहे होंगे। लाहौल-विला क़ुव्वत! जोती परशाद ने कहा—मुझे सैकड़ों गालियाँ दीं, और अरबी में ख़ुदा जाने क्या-क्या पढ़ा। मगर कौन पूछता है! अब एक काम करो। बिलोचपुरे की गढ़ैया है ना? हम मौलवी साहब का मकान बता देंगे।

तुम वहाँ जाकर छोटे मौलवी साहब से सारा माजरा बयान करो। उन दोस्त ने ऐसा ही किया और मौलवी साहब के फ़र्जन्द पर जो गुजरी वह बयान से बाहर है।

अब लाला जोती परशाद साहब का हाल सुनिये, कि ये मौलवी के लड़के को उल्लू बनाकर और ख़ुद अलग रहकर रवाना बाशद, तो घर पर आके दम लिया और दोस्त को रास्ते में छोड़ा। घर पर पहुँचे तो गाड़ीवाले को किराया दिया और मकान में गये। वहाँ इनके भाई और यार दोस्त शतरंज खेल रहे थे। जाते ही इन्होंने कहा—अस्सलाम आलेकुम!

एँ!

क्या ख़ूब!

एक-दूसरे को ताज्जुब की नज़र से देखने लगा।

भाई—अरे भाई, कहाँ गये थे?

जोती—मौलवी साहब को एक 'बाग़ो-नुज़्हतबार' की सैर कराने।

भाई—मौलवी साहब कहाँ हैं?

जो—(मुस्कराकर) आपने सुना नहीं?

शुद गुलामे कि आवेजू आरद,
आवेजू आमद-ओ-गुलाम बबुर्द ! *

भाई—इसके क्या मानी?—कोई है? जरा कोचमैन को बुला लाओ!... कोचमैन! अरे मियां तुम गाड़ी कब लाये?

को—सरकार, अभी आया।

भाई—और वह लोग सब कहां हे?

को—हुजूर, मौलवी साहब तो पागलखाने में बारह रुपये महीने के जमादार हो गये।

भाई—क्या बकता है, सूअर!

को—हां सरकार। छोटे सरकार वहीं रहे।

भाई—छोटे सरकार वहीं रहे! और ये कौन खड़े हैं?

को—(ताज्जुब से) ये हजूर कब आये?

भाई—अच्छा, दूर हो यहां से! मौलवी साहब कहां हैं, जी?

जो—जनाब कहता तो हूँ कि वह उसी बाग़ में रह गये।

भाई—बाग़ कौन?

जो—एक कोठी के बाहर जाके ठहरे, और मुझसे कहा—इसमें बड़ा नुजहतदार बाग है। और इन्सान यहां आकर दो-चार दिन रहे, तो बड़ी तफ़रीह हो। मैं भी खामोश रहा। वह कुछ खुदा की क़ुदरत ऐसी हुई कि साहब सुपरिन्टेंडेंट उनको पागल समझ बैठे।

दोस्त—मौलवी साहब को?

जो—जी हां, और नहीं तो क्या मुझको?

१—सुपरिन्टेंडेन्ट ने मौलवी साहब को पागल बना दिया?

३—भई तुम्हें इलम की क़सम, साफ़ वताओ कि मौलवी साहव को दीवाना-गाह में रख आये ?

जो—खुलासा यह कि मौलवी साहव सरन-पनाह वहादुर पागलखाने में हैं।

१—वल्लाह ! (वहुत हँसकर) अच्छी हुई !

२—(वहुत हँसकर) भई, आखिर यह हुआ क्या ?

३—अरे मियाँ, दिल्लगी करते हैं ।

जो—खैर दिल्लगी ही सही। अफ़सोस है कि तुममें से कोई साथ न था। वर्ना, वल्लाह, वहीं होता दाखिल दफ़्तर !

१—अव सव मौलवी साहव थोड़ा ही हैं ।

२—हम होते, तो जोती परशाद से हमसे विगड़ जाती।

जो—घर में वैठे हो, जो चाहे डींग उड़ा लो ! मौलवी साहव को जव पागलों के कटहरे में वन्द किया है, तो सैकड़ों गालियाँ दीं। साहव हमसे पूछें, क्या वोलता है ? तो मैं कहूँ, कहता है कि इसका वाप भी सिड़ी था। और साहव सुपरिन्टेंडेन्ट यह सुनके कहें कि—ओ ! यह पुश्तैनी सिड़ी है। और जव मौलवी साहव झल्लाएँ, तो साहव कहें—वल, जमादार, इस पागल से चौकसी रखना ।

इस पर क़हक़हा पड़ा ; और इस ज़ोर से आवाज़ वुलन्द हुई कि उनके चचा को वहुत नागवार मालूम हुआ, कि लड़का तो आज पागलखाने भेजा गया और ये अफ़सोस करने के वजाय क़हक़हे लगा रहे हैं ।

चचा—(खिदमतगार से) ये आज क़हक़हे क्यों पड़ रहे हैं ?

ख़ि—लाला छोटे भैया तो चले आये।

च—(अचम्भे से) कौन ? जोती परशाद ?

खि—जी हाँ ।

च—(कमरे का दरवाज़ा कोठे पर से खोलकर) जोती परशाद !

जो—आदाव अर्ज़ करता हूँ, क़िवलओ-कावा !

१—जनाव आपको तकलीफ़ तो ज़रूर होगी, मगर ज़रा यहाँ आइये।

च—अच्छा, और मौलवी साहव कहाँ हैं ?

१—हजूर यहाँ तशरीफ लायें तो सव हाल वयान हो !

च—(कोठे से उतरकर) मौलवी साहव कहाँ हैं ?

भाई—पागलखाने में।

च—अजी नहीं; वताओ तो !

भाई—यही कहते हैं कि पागलखाने में रह गये।

च—हमारी कुछ समझ में नहीं आता। आखिर साफ़-साफ़ क्यों नहीं वताते !

भाई—वोलो, भई जोती परशाद !

जो—जोती परशाद ने तो एक दफ़ा कह दिया कि—

शुद गुलामे कि आबे-जू आरद,
आबे-जू आमद-ओ गुलाम बबुर्द !

च—मालूम होता है, मौलाना पर कोई चकमा चल गया !

भाई—हाँ, है कुछ ऐसा ही।

१—यह तो कहते हैं कि साहब ने पागलों की एक बारक में मौलवी साहब को भी कोठरी में बन्द कर दिया; और वह झल्लाए और गालियाँ देने लगे तो साहब को और भी यक़ीन हो गया और जमादार से कहा—इस पागल की बड़ी चौकसी करना।

२. (हँसते हुए)—लाहौल विला क़ुव्वत !

च—क्यों जी, जोती परशाद ?

जो—है तो ऐसा ही जनाब वाला !

च—मौलवी साहब क्योंकर पागल बनाए गये ?

जो—हुआ यह कि मौलवी साहब ने पागलखाने के पास बग्घी रोकी और मुझसे कहा कि इसमें एक नुज़हतबार बाग़ है और इस क़ाबिल है कि इन्सान दो घड़ी दिल बहलाए; और इसमें मलकाए-मलकाते-आलम हज़ूर शहंशाह बेगम तशरीफ़ लाती थीं।

इस जुमले पर सब हँस पड़े।

जो—और मैंने कहा, मैं अभी आता हूँ। यह कहकर मैंने साहब सुपरिन्टेंडेंट के पास चुपके से कार्ड भेजा। उन्होंने बुला लिया। टोपी उतारकर हाथ मिलाया, और कुरसी पर बैठे।

च—और मौलवी साहब अब कहाँ हैं ?

जो—जी; वह गाड़ी पर बैठे हैं।

भाई—उनको यह खबर ही नहीं कि तुम कहाँ हो !

जो—बिल्कुल नहीं। मैंने कहा, मैं एक पागल को साथ लाया हूँ।

च—अच्छी हुई।

जो—साहब ने कहा, बुलाइये। मैंने कहा, वह इस क़िस्म का पागल है कि

जो—वह मैंने जेब ही से निकाल लिया।

इस पर और क़हक़हा पड़ा।

च—ओफ़्फ़ोह! तो मौलवी बेचारे बन ही गये।

१—मारे हँसी के बुरा हाल है।

२—भई यह तो वल्लाह क़ाबिल-दर्ज नावेल है!

३—ज़रूर, वल्लाह इसी क़ाबिल है।

५—वह खत साहब की मेज़ पर था, और वह पढ़ चुके थे।

भाई—और इधर तुम जड़ ही चुके थे, कि सबको पागल समझता है।

जो—जी हाँ। जैसे ही मौलवी साहब ने कहा, यह पागल है, साहब मुस्क-राने लगे।

ग़रज़ कि कुल हाल मौलवी साहब की परेशानी और मुसीबत का कह सुनाया, और सुननेवालों की यह कैफ़ियत थी कि मारे हँसी के पेट में बल पड़-पड़ गये। जब मौलवी साहब को कमरे में छोड़के बाहर आये और उनके आते ही जमादार ने ताला डाल दिया और मौलवी साहब क़ुरान की आयतें पढ़ने लगे, तो इस क़दर क़हक़हा पड़ा कि कान पड़ी आवाज नहीं सुनाई देती थी।

जो—एक बार फ़रमाया—जनाब, इस नहीफ़ को तो अव्वल मुक़द्दमए-जनून यानी क़ुतरुब भी नहीं हुआ।

जिसने सुना लोट गया, और देर तक हँसी रही।

१—भई वल्लाह, मौलवी साहब खूब बने।

२—बस पूरे बन गये।

३—क्या वाक़ई अभी पागलखाने ही में हैं?

जो—आपका भी नाम लिख लीजिए।

च—हाँ साहब, फिर।

जो—फिर मौलवी साहब ने फ़रमाया कि बन्दा हाफ़िज़ मुल्ला अनवारुलहक़ साहब सब्ज़वारी का ज़िला रुवा—साहब बार-बार पूछें, कि अब क्या बोलता है? मैंने कहा—हज़ूर अपने वालिद को बुरा-भला कहता है। कभी कहा करता है कि उसका नाना भी इसी पागलखाने में मरा था।

बड़ा क़हक़हा पड़ा।

१—आखिर हुआ क्या?

जो—वहीं बन्द हैं।

२—और साहब सुपरिन्टेंडेंट को फ़ौरन यक़ीन हुआ कि पागल है?

जो—कमरे को सर पर उठा लिया। पागल सब जोश में आ गये। और एक पागल ने ग़ुल मचाकर कहा—ओ सरकस वाला! इस भालू को छोड़ दे, हम उससे लड़ेगा!

च—सरकसवाला कौन?

जो—जमादार को सरकसवाला समझा।

न—और भालू कौन?

जो—जनाव मौलवी साहव को समझा।

इस पर और भी जोर से क़हक़हा पड़ा, और तमाम मकान गूंज उठा।

१—पागलखाना देखने के क़ाबिल चीज़ है;

२—भई किसी तरकीब से चलना चाहिए।

३—लाला जोती परशाद साहव के साथ जाय।

इस पर भी क़हक़हा पड़ा।

च—हमको रंज होता है कि मौलवी साहव नाहक़ पकड़ लिये गये,।

भाई—खुदा जाने, विचारे का क्या हाल होगा!

जो—हाल? मीखचे तोड़े डालते थे। और साहव कहें कि वल, हम उसकी आंख से पहचान गया कि पागल है। मैंने कहा, क्यों नहीं। आपने हजारों ही पागल चंगे किये हैं, एक दो की कौन कहे। खुश हो गये। और जब मौलवी साहव के फ़िक़रे मैं दोहराऊँ तो मौलाना बोटियां बस नोच-नोच लें। मैंने कहा—मौलवी साहव! क्या नुजहतवार वाग़ है। और वह दांत पीसके रह जायें। और मेरी इस छेड़ और उनके बिगड़ने से सबको और भी यक़ीन हो गया कि मौलवी पागल है, और मुझे अपना दुश्मन समझता है और मुझसे जलता है।

१—क़ायदा होता है कि सिड़ी, एक न एक को अपना जानी दुश्मन समझता है।

दूसरे दिन मौलवी साहब का खत, नज्म में लिखा हुआ, लाला जोती परशाद के चचा के नाम आया।‡ जिसका थोड़ा-सा हिस्सा यहाँ दिया जाता है—

वाद तसलीमों-वन्दगी ओ-सलाम
वशुमा मी रसानद ईं पैग़ाम।१
कज़ इनायाते-जोतीए परशाद—
पागलम ! पागलम ! मुवारकवाद ! २...
डर खुदा से जो कारे-बद तू कर,
औ न कर, तो भी तू खुदा से डर।
मुझ-सा अल्लामा औ मुजस्तीख्वाँ,
मेरा सा फ़लसफ़ी, उलूम की जाँ,३
मगर अज़ दस्ते-चर्खे-दूँ परवर४
हो गया पागलों से भी बदतर...
हैं दरोग़ा यहाँ के जो अंग्रेज़,
करते हैं पागलों में वह भी गुरेज़५
अक्ल पर उनके हैं पड़े पत्थर
उल्लू का पट्ठा है—नहीं यह बशर
आदमीयत से क्या उसे सरोकार
वक्कना ! रब्बना ! अज़ाबुन्नार ! ६
जाने अल्लाह, क्या मैं बकता हूँ,
मौत की राह कबसे तकता हूँ—
क़ैद कब तक रहूँ, खुदा जाने
हाले आयन्दा कोई क्या जाने
मुश्किल आसाँ करो खुदा के लिये
मेरे काम आओ, किब्रिया के लिये !

यह सब पढ़कर जोती परशाद के चचा ने मौलवी साहब के छोटे लड़के को बुलवाया, और कुल हाल कह सुनाया, और कहा—दो-चार पागलपन की हरकतों के सबब से वह बेचारे पागलखाने भेज दिये गये। चलो, चलके उनके छुड़ाने की कोशिश करें।

---

‡खत और अर्ज़ी वग़ैरह नज्म (पद्य) में लिखने का क़ायदा जो नवाबी ज़माने में आम था, बहुत बाद तक चलता रहा।

१. आप को यह पैग़ाम भेजता हूँ। २. जोती परशाद साहब की इनायतों से मैं अब 'पागल' ही हूँ। ३. विद्वानों में अग्रणी ४. यानी, आसमान की गर्दिश से। ५. पागलों के से काम करते हैं। ६. उस पर खुदा का क़हर और आग !

मौलवी साहब के लड़के को पहले यक़ीन नहीं आया। कहा—आपने तो वारा-वकी भेजा है। चचा ने जवाब दिया—जी नहीं, वारावंको नहीं भेजा है। उस वक़्त तुमसे कहना मुनासिब नहीं समझा। मगर घबराओ नहीं। उनको छुड़ा लाएँगे। लड़का आँखों में आँसू ले आया; और थोड़ी देर के बाद मौलवी साहब के जीते-जी उनका हाल-चाल दर्याफ़्त करने के लिये जोती परसाद के चचा और मौलवी साहब के साहबज़ादे पागलख़ाने गये। मगर जमादार ने अन्दर नहीं जाने दिया।

कहा—हमको हुक्म नहीं है कि बिला ख़ास इजाज़त के किसी को भी अन्दर जाने दें!

इन्होंने बहुत इसरार किया कि मौलवी साहब को देखना चाहते हैं, मगर उसने एक न मानी। छोटे मौलवी साहब ने पूछा—क्या सचमुच पागल ही हो गये!

उसने कहा—और झूठ-मूठ के पागल कैसे हुआ करते हैं जनाब? मौलवी साहब तो और सब पागलों से ज्यादा नम्बर लिये हुए हैं!

छोटे मौलवी साहब रोने लगे।

जोती परसाद के चचा ने जमादार को अलैहदा ले जाकर कहा—अगर कुछ इनाम की ज़रूरत हो तो ये दो रुपये हाज़िर हैं।

उसने जवाब दिया कि—जनाब, इन दो रुपयों की लालच देकर क्यों मेरी रोटियों के दुश्मन हुए हैं? मुझे हुक्म ही नहीं है। मैं मजबूर हूँ।

लाचार वहाँ से खाली हाथ आये, और इसके बाद कई दिन बाद दौड़-धूप करके, बड़ी मुसीबतों के बाद, मौलवी साहब को पागलों की मजलिस से नजात दिलवाई। बाहर आते ही जोती परसाद के चचा से लिपट गये। लड़के से मिले। दोनों दहाड़ें मार-मारके रोए। इतने में एक सिपाही इनाम तलब करने लगा। और मौलवी साहब के आग लग गई। कहा—

बड़ा इन्साफ हुआ! ऐसा ही बड़ा इनाम का काम आपने किया है ना?

गाड़ी पर सवार होकर चले। रास्ते में अपनी मुसीबत का हाल बयान किया। मगर उनकी बातों से मालूम हुआ कि वे वाकई अपने आप को अक्ल से पागल भी समझने लगे थे।

मौ—कभी-कभी तो तबीअत का रुझान खुदकुशी की तरफ़ होता था, मगर फिर अल्लाह की तरफ़ से कोई मना करता था। और मैं बाज़ आता था।

चचा—खुदा हर आफ़त से बचाय! खैर, अब जो हुआ सो हुआ! बजुज़ अफसोस से के और क्या हो सकता है?

कई रोज तक मौलवी साहब ने अपने घरवालों और दोस्तों से पागल-खाने के हालात बयान किये, और ज़रा भी किसी दिन लाला जोती परशाद की शिकायत न की, क्योंकि परेशानी और रंज के सबब से दिमाग़ बिलकुल सही न था, और भूले हुए थे। लाला जोती परशाद के बारे में कई बार दरियाफ़्त किया कि उनसे मुलाक़ात नहीं हुई। लोगों ने कहा—वह कहीं सैर और तफ़रीह के लिये गये हैं। मौलवी साहब ने घर से निकलना हमेशा के लिये छोड़ दिया।

—:०:—

आठवाँ दौरा

घर लिये गये

यों तो लखनऊ में मेले बहुत से होते हैं—ऐशबाग़ के मेले—परिस्तान की परियों का ग़ुंचा खिला हुआ; बावली का मेला—गठा हुआ; अलीगंज का मेला भी, खैर, ऐसा बुरा नहीं। गोल दरवाज़े का मेला; होली के दिन सब सफ़ेद पोश—सुनहरा मेला। साहजी के बंगले से चौक तक और कश्मीरी मोहल्ला, यहियागंज नख्खास, यह-वह, हर मोहल्ले में छोटे-छोटे मेले होते हैं। दिवाली की रात, शबरात—तमाम शहर जगमगाता है। मज़हबी मेलों में रामलीला—ड्रैमेटिक मेला; मोहर्रम—हर जगह रोशनी, हुसैनाबाद मुबारक, नजफ़, अशरफ़ मीरबाक़र का इमामबाड़ा, हैदरी का इमामबाड़ा। यह सब कुछ होता है, मगर आठों के मेले के बराबर कोई मेला नहीं होता। खुदा जाने कहाँ-कहाँ से लोग आते हैं। थाली उछालिये तो तमाम बैसवाड़े भर में सर ही सर जाय। (लखनऊ बैसवाड़े में है और बैसवाड़े के तलवरिये मशहूर हैं।) खुलासा यह कि इतने आदमी जमा होते हैं कि अगर लाम बाँधा जाय, तो पामीर से रूसियों को मास्को तक पीछा छुड़ाना मुश्किल हो जाय।

इस इतने बड़े मेले में लाला जोती परशाद साहब 'हुश्शू' मय अपने दोस्तों के सैर-क़नाँ तशरीफ ले गये।

जो—चलो तालाब पर चल के दरी बिछाके बैठें।

१—वल्लाह बड़ी बहार है बी नजीर जान की। ये जालिम छोकरियाँ—बेनजीर और बद्रेमुनीर इस ठस्से से आयी हैं कि देखने से ताल्लुक़ रखता है।

२—और आबादी की छोकरियों पर क्या जोबन है!

इस पर एक बड़ा क़हक़हा पड़ा। और जोती परसाद ने कहा—'जोबन' की एक ही हुई। अबे कहीं तो 'जीम' ('ज') बोला होता!

एक ठिठोल दोस्त ने कहा—जब जरूरत होगी, बोलेंगे। जाहिर छोड़ तो जरूरत नहीं है।

आगे बढ़े तो बग्गन की फ़ीनस मिली। एक ने कहा—इन पर भी बड़ा जोबन है। इस पर और क़हक़हा पड़ा, और जिसने 'जोबन' कहा था वह बहुत शर्माए।

१—यह फ़ारसी की टाँग क्यों तोड़ते हो?

२—भई 'जोबन' भी याद रहेगा।

३—बग्गन के ठाठ देखिये। सारे चौक की नाक है। आँखों में मोहिनी।

और आगे बढ़े तो एक और नाजनीन नजर आयी—परीछम, बर्कदम। ये लोग घूरने लगे। एक ने दिल्लगी में कहा—यार हमें तो इसकी एक आँख दिखाई देती है?

वह तुनुक कर बोली—मालूम होत है, सावन माँ फूटी रहीं। ऊँट की ऐनक लगावो!

'होत' और 'रहीं' और 'लगावो' से समझ गये कि देहातिन है। दो साल इससे हँस-बोलकर आगे बढ़े, तो देखा बड़ी भीड़ है। और दो कमसिन लड़कियाँ, सजी हुई, अजब अन्दाज व नाज से खड़ी मोम के म्यूर और मछलियाँ और चिड़ियाँ मोल ले रही हैं। ठठ के ठठ जमा। एक पर दस और दस पर सौ गिरे पड़ते हैं।

१—मालूम होता है, परियों ने पर यहीं छोड़ दिया।

२—क्या खूब कहो, यारो, आँखें सेंको। मजेदारियाँ हैं।

अब सुनिये कि जिधर वह दोनों परीज़ाद जाती थीं, तमाम मेला उसी जानिब हो लेता था। और डेरेवालियों में जो-जो बनाव-चुनाव करके गई थीं, वह कटी जाती थीं। एक बोली—किस काम की हैं! पहनावा तो देखो, जैसे दुमकटी हिरनी। दूसरी ने कहा—ए, फीका शलजम! नमकीनी का नाम नहीं। अल्लाह जानता है, जो उनकी रानें देखो, तो बस यह मालूम हो कि कोढ़ है।

ये जली-कटी कह रही थीं कि—हमारी चाह छोड़ के जिसे देखो उनके पीछे लट्टू है!

इनका पीछा छोड़के जोती परशाद मय दोस्तों के वहाँ आके बैठे, जहाँ बग्गन की फ़ीनस थी। उसके बिस्तर से इनका बिस्तर कोई बीस कदम के फासले पर था।

जो—कहिये बी बग्गन साहब, मिज़ाज शरीफ़।

ब—अब तो सुना आप लोगों को पागलखाने की हवा खिलाया करते हैं।

जो—(हँसकर) वह भी एक दिल्लगी थी! चलिए एक दिन आपको भी दिखा लायें।

ब—ए, तुम्हारे मुँह में खाक-धूल! अल्लाह उसके साये के क़रीब न ले जाय!

जो—देखोगी तो फड़क जाओगी!

ब—आप ही को मुबारक हैं। मैं हुश्शू नहीं हूँ।

जो—आपने सुना कहाँ था?

ब—ए लो, और सुनियेगा! ए, यह भी कोई छिपी हुई बात है! सारा शहर जानता है। हमें बड़ा रंज था कि रईस आदमी, हँसमुख, और एकाएकी अक्ल से खारिज हो गया।

ये यहाँ से बोरिया-बँधना उठाके कश्मीरियों के बाग में आये, और सैर करके फिर तालाब की तरफ जाते थे, कि जिस बेचारे के मकान को इन्होंने बेच लिया था, उसने उनको देख लिया, और आग होकर दौड़ा।

—ओ चचा! बहुत दिन बाद मिले! चुलबुली सिंह ठाकुर बने हुए अंडे बेचते थे। किराया छै महीने पहले ही दे गये थे। औने-पौने पर मकान बिकवा लिया। इधर आओ, चचा जान!

यह कहकर कलवार और उसके लड़के और दामाद ने इनको ज़ोर से गिराया, और कलवार ने चाकू निकालकर इनकी नाक पर रख ही तो दिया। मगर वैसे ही एक शख्स, लाला रूप नरायन नाम, ने फ़ौरन चाक़ू पर हाथ डाल दिया। चाक़ू नाक पर ज़रा यों ही सा छिछलता हुआ लगा। वर्ना 'नाक कटी मुबारक, कान कटा सलामत' का मामला हो जाता!

कानिस्टेबलों ने आके कलवार और उसके लड़के और दामाद और आठ-दस बेगुनाहों को गवाही की इल्लत में गिरफ़्तार ही तो कर लिया। मुक़दमे की कार्रवाई और रूदाद से कोई ग़रज नहीं, खुलासा यह कि कलवार को एक

हारे को क़ैदखाना की सजा मिली। और मियाँ हुस्नू की नाक गो कट नहीं गई, मगर निशान यों ही सा बन गया। हात्तेरे गीदी की! मेले भर में हुल्लड़ मच गया कि जोती परसाद की नाक किसी ने जड़ से उड़ा दी। जितने मुँह उतनी ही बातें। लोगों ने नाक के होते-साथ ही नकटा बना दिया।

वहाँ से चले तो दोस्त सब साथ हो लिये, और उनसे कहा कि अब आप घर चलिये। मगर एक बाग़ तक पहुँचे ही थे कि बोतलवाला मिला। उसकी बीबी बनी-ठनी उसके साथ थी। उसने जो इनको देखा, तो बड़ा खुश हुआ, कि बाद मुद्दत अपने मुजरिम को पाया।

मियाँ लाला, सलाम। पहचाना?

लाला—(सहमे हुए) क्या?

मियाँ—(हाथ पकड़के) भलमन्सी सब मिटा दूं। अरे तू भलेमानस बना है!

उनके एक दोस्त ने बोतलवाले का हाथ झटक दिया, और एक लप्पड़ दिया।

बीबी—(रोती हुई) अरे काहे का बड़े आदमियन से लड़त है?

मियाँ—अरे गुनरी, इसी ससुर ने बोतलें उस दिन तोड़ी थीं। अरे, यह वही है।

बीबी—अरे भाई, अरे भाई!

दोस्त—दूर हो यहाँ से, भाई की बच्ची!

मियाँ—हुजूर हम ग़रीबों की सुनोगे कि नहीं। हमको झूठा पता बतला के अपने घर भेजा। न घर, न दर। और हमारी बीस-बाइस बोतलें तोड़ीं और भाग गये। हम तो इनका लहू पी लेंगे।

दोस्त—(एक और लपोड़ा जमाकर) अब तेरी ज़बान निकलेगी!

इस पर बहुत से आदमी जमा हो गये और बोतलवाले ने रो-रो कर हाल कहना शुरू किया, और उसकी बीबी भी साथ ही रोती थी, कि नुक़सान का

वाली को; बोतलवाले से कोई मतलब नहीं—गो घी कहाँ गया, खिचड़ी में! मगर उनके दिल का हाल तो मालूम हो गया।

खैर, अब उनके दोस्तों ने मशविरा किया कि इनको किसी और बन्द पालकी में ले जायँ; ताकि अब और कोई फ़जीता न हो। पालकी ढूंढ़ ही रहे थे कि मियाँ चपई (यानी उस कलवार का नौकर, जिसकी दूकान की मठूरें और बोतलें खुद-बदौलत तोड़ आये थे) ने इनको देख लिया, और गुल मचाकर कहा—लाला, लाला, दौड़ो! अरे वह मिले हैं जौन सोने की घड़ी पहिने अपनी दुकान का सत्यानास कर गये थे!

लाला आवाज़ सुनते ही दौड़ पड़ा। और गो ये लाख बग़लें झाँकने लगे, वह झपट ही तो पड़ा। और आते ही इनके पटे लेने को था, मगर जुर्रत न हुई। बहुत ज़ोर-ज़ोर से गुल मचा-मचाकर शिकायत करने लगा। फिर एक भीड़ लग गई। ठठ के ठठ जमा। मालूम हुआ कि कलवार की दूकान पर हज़ूर ने वह अनोखी हरकतें कीं जो आज तक किसी ने नहीं की थीं। इनके दोस्तों की जान अज़ाब में हो गई। अब किस-किस से लड़ें किस-किस से भिड़ें! और फिर यह भी खयाल था कि लोग हमको क्या कहेंगे; और उनको क्या मालूम होगा कि ये हुश्शू से लड़ रहे हैं या हमसे।

लाचार, अपनी करनी अपने सर; इन लोगों ने उसको समझाया, कि इस धींगा-मुश्ती से कुछ न होगा। इनके घर पर कल सुबह आठ बजे आओ। हम लोग भी होंगे, फ़ैसला कर दिया जायगा। वह इन शरीफ़ों के कहने से राज़ी हो गया। सब अपने-अपने घर आये। सुबह को यही दोस्त उनके घर गये। उनके चचा से कुल हाल कहा। उन्होंने अपना सर पीट लिया; और कहा, खैर, जो कुछ हुआ, वह हुआ। इनसे रुपया दिलवाया जाय। कलवार भी मय चन्द दोस्तों के आया। पचास पर फ़ैसला हुआ।

और जोती परशाद के आदमी ने पचास गिनके दे दिये और रसीद ली। अब यह मशविरा होने लगा कि मकानवाले का रुपया फ़ौरन् अदा कर दिया जाय। ऐसा न हो कि वह दीवानी-फ़ौजदारी दोनों में दावा कर दे, और बड़ा फ़जीता हो। जब वह क़ैद से निकला, तो ये लोग बुला लाये। और उसने रो-रोकर अर्ज़ की, कि मैं एक नीच क़ौम आदमी, आप ही रईसों की बदौलत आध सेर आटा कमाता हूँ। मेरा मकान का मकान खुदवा के बेच लिया और जेलखाने का जेलखाना हो गया।

सुननेवालों को कुछ तो हँसी आती थी और कुछ रंज होता था। बड़ी देर तक रोया-चिल्लाया किया। जो सुनता था, हँसता था, कि भई अच्छे किरायेदार मकान में बसाये, कि मकान ही घूम गया। दोनों में यह फ़ैसला आपस में हुआ कि सात सौ रुपया नक़द मालिक मकान को दिया जाय और

वाली को; बोतलवाले से कोई मतलब नहीं—गो घी कहाँ गया, खिचड़ी में! मगर उनके दिल का हाल तो मालूम हो गया।

खैर, अब उनके दोस्तों ने मशविरा किया कि इनको किसी और बन्द पालकी में ले जायें; ताकि अब और कोई फ़जीता न हो। पालकी ढूँढ़ ही रहे थे कि मियाँ चपई (यानी उस कलवार का नौकर, जिसकी दूकान की मठूरें और बोतलें खुद-बदौलत तोड़ आये थे) ने इनको देख लिया, और गुल मचाकर कहा—लाला, लाला, दौड़ो! अरे वह मिले हैं जौन सोने की घड़ी पहिने अपनी दुकान का सत्यानास कर गये थे!

लाला आवाज़ सुनते ही दौड़ पड़ा। और गो ये लाख बग़लें झाँकने लगे, वह झपट ही तो पड़ा। और आते ही इनके पटे लेने को था, मगर जुरंत न हुई। बहुत ज़ोर-ज़ोर से गुल मचा-मचाकर शिकायत करने लगा। फिर एक भीड़ लग गई। ठठ के ठठ जमा। मालूम हुआ कि कलवार की दूकान पर हजूर ने वह अनोखी हरकतें कीं जो आज तक किसी ने नहीं की थीं। इनके दोस्तों की जान अज़ाब में हो गई। अब किस-किस से लड़ें किस-किस से भिड़ें! और फिर यह भी खयाल था कि लोग हमको क्या कहेंगे; और उनको क्या मालूम होगा कि ये हुश्शू से लड़ रहे हैं या हमसे।

लाचार, अपनी करनी अपने सर; इन लोगों ने उसको समझाया, कि इस धींगा-मुश्ती से कुछ न होगा। इनके घर पर कल सुबह आठ बजे आओ। हम लोग भी होंगे, फैसला कर दिया जायगा। वह इन शरीफों के कहने से राज़ी हो गया। सब अपने-अपने घर आये। सुबह को यही दोस्त उनके घर गये। उनके चचा से कुल हाल कहा। उन्होंने अपना सर पीट लिया; और कहा, खैर, जो कुछ हुआ, वह हुआ। इनसे रुपया दिलवाया जाय। कलवार भी मय चन्द दोस्तों के आया। पचास पर फ़ैसला हुआ।

और जोती परशाद के आदमी ने पचास गिनके दे दिये और रसीद ली। अब यह मशविरा होने लगा कि मकानवाले का रुपया फ़ौरन् अदा कर दिया जाय। ऐसा न हो कि वह दीवानी-फ़ौजदारी दोनों में दावा कर दे, और बड़ा फ़ज़ीता हो। जब वह क़ैद से निकला, तो ये लोग बुला लाये। और उसने रो-रोकर अर्ज़ की, कि मैं एक नीच क़ौम आदमी, आप ही रईसों की बदौलत आध सेर आटा कमाता हूँ। मेरा मकान का मकान खुदवा के बेच लिया और जेलखाने का जेलखाना हो गया।

सुननेवालों को कुछ तो हँसी आती थी और कुछ रंज होता था। बड़ी देर तक रोया-चिल्लाया किया। जो सुनता था, हँसता था, कि भई अच्छे किरायेदार मकान में बसाये, कि मकान ही घूम गया। दोनों में यह फ़ैसला आपस में हुआ कि सात सौ रुपया नक़द मालिक मकान को दिया जाय और

एक हज़ार दो सौ रुपये की सौ रुपये माहवारी के हिसाब से क़िस्त । यों तोड़ हुआ ।

जब लाला मोती परशाद साहब की आँखें खुल गईं, और अगली-पिछली बातों पर अफ़सोस करने लगे, और दोस्तों से कहा कि अगर आप साहबों की शान के ख़िलाफ़ कोई बात मुझसे हुई हो तो माफ़ फ़रमाइयेगा ।

१—अजी, यह क्या फ़रमाते हैं ?

२—जो हो गया सो हो गया ।

३—अब बीती को छोड़िये और आगे की सुध लीजिए । मगर अब खुदा के लिये नसीहत कौन देगा । ख़ैरियत, नौजवान को सँभालो, क़ाबू में रखो, आदमी बनो ।

नवाँ दौरा

लाहौल !　　　　लाहौल !　　　　लाहौल !

खाना खाता हूँ। खाने के साथ थोड़ी व्हिस्की पीता हूँ। एक बोतल निम्बूर की चार रोज़ में खत्म करता हूँ। सोडा के साथ पीता हूँ। दो सेर बर्फ़ रोज़ शहर से आती है। दस बजे तक कभी 'दीवान' कभी 'नाविल' पढ़ता हूँ और सो रहता हूँ। अल्ला-अल्ला खैर सल्ला।

न बोतलें तोड़ता हूँ, न शीशियों पर हाथ साफ़ करता हूँ। न कलवार की दूकान का सत्यानास करता हूँ। न किसी का मकान किराये पर लेकर ईंटें लकड़ी पटेल डालता हूँ। न सदर बाजार में जूती पैज़ार होती है, न किसी को पागल खाने भेजता हूँ, न बोतलवाले को जुल देता हूँ। आप मेरी तरफ से इत्मीनान रखें।

जोती परशाद।

एक खत चचा के नाम लिखा कि मेरी तरफ से आप इत्मीनान रखिये।

इसके बाद लाला जोती परशाद, जो कभी 'हुश्शू' के नाम से मशहूर थे, अपने इलाक़े से शहर में आये, तो आदमी बने हुए। यार-दोस्त, रिश्तेदार, बुज़ुर्ग, छोटे-बड़े सब खुश कि हमारा वहशी इन्सान बन गया। उन्होंने अपने दोस्तों की दावत की।

दोस्त जमा होने लगे। यह वही बाग़ है, जिसमें जोती परशाद ने मय अपने दोस्तों और डाक्टर और वकील और लालारुख के धमाचौकड़ी मचाई थी, और पीते-पीते जान से हाथ धोने के क़रीब आ गये थे। उन्होंने इस मर्तबा भी उन्हीं दोस्तों की दावत की, जो उस जल्से में शरीक थे। जो आया, उसने कोई न कोई फब्ती कही ज़रूर।

ला—एँ! अरे मियाँ, आज यह तालाब सूना क्यों हैं? वह पैराक लोग कहाँ हैं?

न—पैराक लोग कहीं रोज़ थोड़ा ही आते हैं। वह तो बस पैराकी के मेले ही पर आते हैं।

जो—(हँसकर) खुदा वह दिन न दिखाये।

ला—आज खड़ी लगानेवाले ग़ायब हैं।

न—भई उस दिन कैफ़ियत तो अच्छी मालूम होती थी। कोई इधर पैर रही है, कोई उधर। कोई पैराक खड़ी लगा रहा है; कोई मल्लाही पैर रहा है। कहीं उस्ताद है, कहीं शागिर्द।

स—मगर मुझे उस दिन इस क़दर नशा तेज़ था, कि बस कुछ न पूछो! मुझे तो याद नहीं, मगर लालारुख ने कहा कि मैं बराबर यही हाँक लगाता था कि—सैयाँ भये कोतवाल, अब डर काहे का!

डाक्टर—मगर उस रोज़ इनके-हाँ की वह घर की खिंची शराब ऐसी उम्दा थी कि हमने कभी नहीं पी। खुशबू ऐसी कि मैं क्या कहूँ। और रंगत वह जो छाती तो ज़ाहिद तक का जी ललचाता।

ला—हमने भी पी थी, मगर ज़ायका नहीं याद है।

जो—आपको होश भी था?

ला—बहुत चढ़ गई थी, वल्लाह।

जो—और मुझे क्या बुरा मालूम होता था कि मैं तो मर रहा हूँ और एक साहब नशे की तरंग में बार-बार कहते हैं कि सोने का खयाल करो, नींद का ख्याल करो।

न—सात दिन तक हम लोगों ने पी। मगर एक बात अच्छी थी कि गाना थोड़ा-बहुत हो जाता था। वर्ना अंटा-ग़फ़ील हो गये थे।

जो—मैं तो समझा कि मैं चला। मगर उसने बचाया।

डाक्टर—जब हद हो जायगी, तब यही होगा। यह तो देव का तमाशा है।

सो उस रोज भी गाना-पीना हुआ, शराब भी पी, दिल्लगी, मज़ाक़, चुहल भी हुई, मगर भलेमानुसों की-सी सोहबत थी। गाने के साथ जरूरत के मुताबिक थोड़ी-थोड़ी शराब पी। यह नहीं कि एक हफ़्ते तक अंटा-ग़फ़ील पड़े हुए हैं; सर और पैर की ख़बर नहीं।